श्री पाक्षिकसूत्र-श्रमणसूत्रादि संग्रह.

(संस्कृतानुवाद सहित गुजराती भाषान्तर)

तपगच्छना पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय गुरुणीजी महाराज श्री बालब्रह्मचारी शांतमूर्त्ति शिवश्रीजीना महाराजना सुशिष्या तिलकश्रीजीना उपदेशथी सुरतना वखारवाळा शा. चुनीलाल डाह्याभाइनी आर्थिक सहायथी

छपावी प्रसिद्ध करनार

पारेख मेमसुखलाल अमरचंद बुकसेलर

शराफ बजार—भावनगर.

वीर संवत् २४६० विक्रम संवत् १९९०

श्री आनंद प्रीन्टींग प्रेस—भावनगर

कींमत रु १-०-०

प्रस्तावना.

सर्व कोइ विद्वान साधुवर्गना जाणवामां ज छे के प्रथम अने चरम तीर्थंकरना तीर्थना साधुओने जे दश ..कारनो आचेलक्यादिक कल्प गणधरादिके कहेलो छे ते नियमित रीते ज आचरवानो छे, परंतु बावीश तीर्थंकरना साधुओनी जेम अनियमित नथी; तेथी करीने ज वर्तमान तीर्थना मुनिओ स्थितकल्पिक कहेवाय छे. जो के आ आचेलक्यादिक सर्वे कल्पो सामान्य रीते कहीए तो त्रीजा औषधनी जेवा ज छे, तो पण प्रतिक्रमणनो कल्प विशेषे करीने त्रीजा औषध जेवो छे अने तेथी करीने छेल्ला तीर्थंकरना शासनमां गणधर महाराजाओए अनगारधर्मनुं वर्णन करती वखते "सप्रतिक्रमणो धर्मः" "प्रतिक्रमणसहित ज धर्म छे" एम स्पष्ट रीते कहेलुं छे. तेम ज जेओ प्रतिक्रमण करता नथी अथवा जेओने प्रतिक्रमण करवानी रुचि नथी तेवा श्रमणाभासो श्रीमान् वीरस्वामीना शासननी बहार ज छे एम पण स्पष्ट कहेलुं छे. केटलाक तत्त्व जाण्या विना ज कहे छे के—"प्रतिक्रमण तो प्रमत्त साधुओने माटे ज छे, अप्रमत्तने माटे नथी." तेमणे एटलुं तो समजवुं ज जोइए के अप्रमत्तभाव तो मात्र सूक्ष्म अंतर्मुहूर्त्त सुधी ज रहे छे, ते कांइ निरंतर रहेतो नथी. बाकीनो सर्व काळ प्रमत्तभाव ज होय छे, तेथी सर्व कोइने प्रतिक्रमण करवुं उचित छे; कारण के सर्वे आवश्यको आत्मानी शुद्धि करनारां कह्यां छे. आ प्रतिक्रमण पांच प्रकारनां कह्यां छे—

दैवसिक १, रात्रिक २, पाक्षिक ३, चातुर्मासिक ४ अने सांवत्सरिक ५, तेमां जिनशासनने अनुसरनारा सर्व साधु-

ओ सर्व सावद्ययोगथी निवृत्त थयेला होय छे, तेथी करीने तेमनी मन, वचन अने कायानी वृत्तिओ अत्यत विशुद्ध होय छे, तो पण अनाभोग अने प्रमादविगेरेने लीधे निषेध करेल कार्य करवाथी तथा करवा योग्य कहेल कार्य नहीं करवाथी मूलगुण अने उत्तरगुणमां जे कांइ बादर के सूक्ष्म अतिचार उत्पन्न थाय तेनी शुद्धिने माटे हमेशां दिवसने छेडे अने रात्रिने छेडे (सांज–सवार) साधु श्रावकादि प्रतिक्रमण करे छे तेमा दिवसने छेडे जे प्रतिक्रमण करवामां आवे छे तेने दैवसिक अने रात्रिने छेडे जे करवामां आवे छे तेने रात्रिक प्रतिक्रमण कहेवामा आवे छे. ते उपरांत पक्षने अंते, चातुर्मासने अंते अने संवत्सर (वर्ष) ने अंते जे विशेष विस्तारथी प्रतिक्रमण करवामां आवे छे ते अनुक्रमे पाक्षिक, चातुर्मासिक अने सांवत्सरिक प्रतिक्रमण कहेवाय छे. अहीं कोइने शंका थाय के–हमेशां दैवसिक अने रात्रिक प्रतिक्रमण करवाथी दिवस तथा रात्रिमा थयेला अतिचारोनी शुद्धि थया ज करे छे, तो पछी पाक्षिक विगेरे प्रतिक्रमणो करवानी शी जरुर छे? तेनो जवाब ए छे के जेम कोइ माणस तेल, आंवळा अने जळ विगेरेवडे शरीरने दररोज शुद्ध करे छे तो पण पर्वदिवसे तेने विशेष शोभाववा माटे धूप, सुगंधी विलेपन, श्रेष्ठ वस्त्र अने किंमती अलंकारविगेरे धारण करे छे, ते ज प्रमाणे मुनिओ विगेरे पण हमेशां प्रतिक्रमण करवावडे चारित्ररूपी शरीरने शुद्ध करे छे तो पण विशेष शुद्धिने माटे पाक्षिकादिकने विषे विशेष प्रतिक्रमण करवावडे उत्तरीकरण करे छे. कह्यु छे के—

" जह गेह पइदिवसं-पि सोहियं तह वि पक्खसंधीसु । सोहिज्जइ सविसेसं, एव इहयं पि नायव्व ॥१॥ "

" जेम घरने हमेशां समार्जनी विगेरेथी शुद्ध करवामा आवे छे तो पण पखवाडीए तेने विशेषे करीने साफ कराय

छे, तेम अहीं पाक्षिकादिक प्रतिक्रमण माटे पण जाणवुं. "

वळी हंमेशना प्रतिक्रमणमां कदाच अनाभोगादिके करीने सूक्ष्म अथवा बादर अतिचार विसरी जवायो होय अथवा स्मरणमां आव्या छतां पण भय, लज्जादिकने लीधे गुरुनी समक्ष तेनुं प्रतिक्रमण कर्युं न होय अथवा कर्या छतां पण मंद परिणामने लीधे तेनुं सम्यक् प्रकारे प्रतिक्रमण थयुं न होय, आवा कारणथी साधुओ पाक्षिकादिकमां ते ते अतिचारोनुं स्मरण करी अधिक संवेगने पामी तेनुं सम्यक् प्रतिक्रमण करे छे; अथवा तो कदाच अतिचार न लाग्या होय तो पण पाक्षिकादिकमां त्रीजा वैद्यना औषधनी जेम विशेष प्रतिक्रमण करवुं योग्य छे.

त्रण प्रकारना औषध आ प्रमाणे—'क्षितिप्रतिष्ठित नगरमां जितशत्रु नामे राजा हतो. तेने सेंकडो मनोरथोवडे अने घणा प्रकारनी मानताओवडे धारिणी नामनी पट्टराणीथी एक पुत्र थयो. ते कुमार राजाने प्राण करतां पण वधारे प्रिय हतो, तेथी " आ मारा पुत्रने भविष्यमां कदाच कांइक रोग थशे, माटे ते नहीं थना देवा सारु आगळथी ज तेनो उपाय कराबुं के जेथी रोगनो संभव ज न थाय. " एम धारी राजाए वैद्योने बोलावी कह्युं के–' मारा पुत्रने एवी दवा करो के जेथी कदापि रोगनो संभव ज न थाय.' तेओए कह्युं के–"बहु सारुं. ए प्रमाणे करशुं.' 'राजाए पूछ्युं के–"त्यारे तमे कहो के तमारी पासे केवी केवी औषधनी क्रिया छे ? " त्यारे एक वैद्य बोल्यो के–" मारी पासे एवुं औषध छे के जो कांइ पण रोग होय तो तेनो तत्काळ नाश करे छे; परंतु रोग विना जो खावामां आवे तो ते नवो रोग उत्पन्न करे छे. " बीजा वैद्ये कह्युं के–" मारुं औषध आपवाथी रोग होय तो तेनो नाश करे छे अने रोग न होय तो कांइ पण दोष के गुण करतुं

नथी." पछी त्रीजाए कह्युं के-" मारु औषध वापरवाथी जो तेने रोग होय तो ते नष्ट करे छे अने रोग न होय तो तेना शरीरना बळ, वीर्य, रूप अने यौवन विगेरेने वृद्धि पमाडे छे तथा आवता रोगने अटकावे छे." ते सांभळी राजाए त्रीजा वैद्यनु औषध कर्युं. ए ज रीते आ प्रतिक्रमण पण जो अतिचारादिक दोष होय तो तेनी शुद्धि करे छे अने जो दोष न होय तो चारित्ररूपी शरीरने अत्यंत शुद्ध-उज्ज्वल करे छे आ उपरथी ए सिद्ध थयु के अतिचार हो अथवा न हो तो पण पाक्षिकादिक प्रतिक्रमण अवश्य करवा योग्य छे.

पाक्षिक विगेरे सर्व प्रतिक्रमणनां सूत्रो प्राये जिनेश्वरभाषित होवाथी गणधरोए ज रचेलां छे, एम ते सूत्रोनी भाषा-उपरथी स्पष्ट जणाइ आवे छे; कारण के गणधररचित आगमोने विषे जेवी भाषा अने शैली छे तेवी ज आ सूत्रोनी पण छे. आ पाक्षिकसूत्रमां प्रथम-त्रण गाथाओ मगळने माटे करेली छे तेमां पण बीजी गाथामां "इम गुणरयणसायर०" विगेरे शब्दोवडे आ पाच महाव्रतादिक गुणोरूपी रत्नोना समुद्रने आराधी जेओ संसारने तरी गया छे तेओने मगळरूप करी हु पण आराधना करवा सन्मुख थयो छु." एम कही पांच महाव्रतादिकनी आराधनारूप अभिधेय पण बताव्यु छे अने त्रीजी गाथामां नवपदनु मगळ कर्यु छे. छेवट चोथी गाथामां पांच महाव्रतनी उच्चारणा करवा माटे सावधान थवानु कह्यु छे पछी सूत्रनो आरंभ करतां प्रथम "महाव्रतनी उच्चारणा ते शु?" एम शिष्यनो प्रश्न लइ तेना जवाबमां "महाव्रतनी उच्चारणा पांच प्रकारनी छे अने रात्रिभोजनविरमण व्रतने साथे गणतां छ प्रकारनी छे." एम कही ते छए व्रतोनां नाम मात्र आप्यां छे. त्यारपछी प्राणातिपातविरमण नामना पहेला महाव्रतनु स्वरूप कहेवुं

शरु कर्युं छे. प्राणातिपात (जीवहिंसा) ना द्रव्यादिक चार भेदो व्याख्यासहित बताव्या छे. पछी केवळीए कहेला चारित्रधर्मने बावीश विशेषणो आपी आवो धर्म पाम्या पहेलां अज्ञानादिक चार कारणोवडे अने धर्म पाम्या पछी अग्यार कारणोवडे जे प्राणातिपात त्रिविधे त्रिविधे थयो होय तेनी निंदा-गर्हा करी अतीत, वर्तमान अने अनागत ए त्रण काळ आश्री अनुक्रमे निंदा, संवर अने प्रत्याख्यान कह्युं छे. एटले के अतीत काळे जे कांइ पाप कर्युं होय तेनी निंदा ज थइ शके छे, वर्तमान काळे पाप करवानो संयोग आवे ते वखत ते करतां अटकी जवुं ए रीते तेनो संवर थइ शके छे अने अनागत काळे एटले हवे पछी हुं पाप नहीं करुं एवुं प्रत्याख्यान थइ शके छे. त्यारपछी अनागत प्रत्याख्या-नने अरिहंतादिक पांचनी साचीए स्वीकार करवानुं कह्युं छे. आ रीते पचक्खाण करवाथी साधु सर्व काळे, सर्व स्थाने अने सर्व अवस्थाए निरंतर संयमी ज होय छे एम बतावी छेवट प्राणातिपातविरमण व्रतनी स्तुति करी छे. तेमां आ व्रत लेवाथी पोताने तथा पर जीवोने केटलो गुण थाय छे ? ते बतावी छेवट पोताने ए व्रत मोक्ष आपनार थाय छे एम कह्युं छे. आ व्रत आराधवाथी आत्माने थता गुणो अने विराधवाथी थता दोषो जे जे बतावेला छे ते सामान्य विचार करतां पण सर्व मध्यस्थ जनोनुं चित्त अवश्य स्वीकार करे एवा छे, ए वात स्पष्ट जणाइ आवे छे. अंते गुरुनी आज्ञाथी व्रतनो स्वीकार करवानुं कहेल छे. एटले सर्व कार्यमां गुरुनी आज्ञा ज मुख्य छे अने तेनी आज्ञा विना करेली क्रिया निष्फळ छे एवो जैन सिद्धांतनो चोकस निर्णय सूचव्यो छे.

प्रथम महाव्रत पछी अनुक्रमे बीजुं, त्रीजुं, चोथुं, पांचमुं अने छठुं रात्रिभोजनविरमण व्रत अनुक्रमे आपेल छे.

॥ ३ ॥

तेनां सूत्रोना आलावा घणे भागे प्रथम महाव्रतने मळता ज छे एक सरखी शैलीथी ज आ छए व्रतो आपेलां छे दरेक महाव्रतने छेडे अर्थमां व्रतनी आराधनानु अने विराधनानु शुभाशुभ फल तथा ते ते व्रतनां भांगा विगेरे आप्या छे. छए व्रतोनो पृथक् पृथक् स्वीकार कर्या पछी छए व्रतो एकी साथे अंगीकार करवानु कह्यु छे. कोइ पण व्रत के नियम लीधो तेमां अनाभोग के प्रमादविगेरे कारणथी अतिचार लागवानो संभव छे तेथी छए व्रतोनो स्वीकार कर्या पछी एक एक गाथाए करीने छए व्रतोना अतिचारो कह्या छे. पछी छए व्रतोने अतिचाररहित पाळवानुं अनुक्रमे छ गाथावडे कह्यु छे. त्यारपछी बीजी छ गाथामां पण बीजी रीते ते ज वात कही छे अने सातमी गाथामां पांचे व्रतो भेळा कह्यां छे त्यारपछी त्रेवीश गाथाओ आपी छे तेमां एक, बे, त्रण, चार एवी रीते अनुक्रमे एक एकनी वृद्धि करतां दश सुधी अशुभ स्थानो वर्जवानु अने शुभ स्थानो अंगीकार करवानुं कह्यु छे त्यारपछी महाव्रतना विशेपणोद्वारा तेने पाळवानुं फळ बता-वीने महाव्रतोनी उच्चारणा समाप्त करी छे अने मगळने माटे आसन्नोपकारी होवाथी श्रीमहावीरस्वामीने नमस्कार कर्यो छे

त्यारपछी जेम महाव्रतोनो उच्चार कर्मनो क्षय करनार छे ते ज रीते सूत्रनु कीर्तन पण कर्मनो क्षय करनार छे तेथी श्रुतकीर्तनमां प्रथम छ आवश्यकनां नाम, तेनी सद्दहणा विगेरे अने पछी तेना अतिचारोनी आलोचना प्रतिक्रमण विगेरे कह्यु छे. त्यारपछी आवश्यक सिवायना २८ उत्कालिक अने ३६ कालिक श्रुतनां पण नाम, तेनी सद्दहणा अने तेना आराधन–अनाराधनथी लागता दोपोनी आलोचना विगेरे कह्यु छे त्यारपछी अगप्रविष्ट द्वादशांगी पण ते ज रीते कही छे. त्यारपछी श्रुतज्ञान आपनार आचार्यने नमस्कार करवापूर्वक पोताना प्रमादनु मिथ्यादुष्कृत दइने छेवटे श्रुत-

देवतानी स्तुति करवापूर्वक पाक्षिकसूत्रनी समाप्ति करी छे. त्यारपछी खामणानो अधिकार आपी पाक्षिक चार खामणा आप्यां छे. त्यारपछी आहारना सुडतालीश दोषो बताव्या छे.

त्यारपछी श्रमणसूत्र के जे पगामसज्झायना नामथी पण ओळखाय छे ते अति उपयोगी होवाथी पाक्षिकसूत्रनी साथे आपवामां आव्युं छे. तेमां प्रथम नवकारमंत्र भणी, करेमि भंते कही, अरिहंतादिक चार मंगळ, चार लोकोत्तम अने चार शरण अंगीकार करी दिवससंबंधी अतिचारनुं प्रतिक्रमण, ईर्यापथिकनुं प्रतिक्रमण अने पछी प्रकामशय्या, निकामशय्या विगेरेनुं प्रतिक्रमण देखाडयुं छे. पछी गोचरीना अने स्वाध्यायना अतिचारोनुं प्रतिक्रमण कर्युं छे. त्यारपछी संक्षेपथी अने विस्तारथी अतिचारो गणावी एटले के एक प्रकारे असंयम, बे प्रकारना बंधन, त्रण प्रकारना दंड, गुप्ति, शल्य, गौरव विगेरे, चार प्रकारना कषाय, संज्ञा, विकथा विगेरे, ए रीते अनुक्रमे एक एकनी वृद्धि करी तेत्रीश आशातनाओ सुधीना अतिचारोनुं प्रतिक्रमण कर्युं छे. आ बधा भेदो बहु ज समजवा जेवा छे. पछी चोवीश तीर्थंकरोने नमस्कार करी जिनप्रवचनने अनेक विशेषणो आपी तेनी स्तुति करी छे. पछी संयम, ब्रह्मचर्य विगेरे उपादेयनो स्वीकार अने असंयम, अब्रह्मचर्य विगेरे हेयनो त्याग करवा कह्युं छे. छेवटे अढी द्वीपमां वर्तता सर्व साधुओने वंदना करी तथा सर्व जीवोने मित्रभावथी खमावी श्रमणसूत्रनी समाप्ति करी छे. पछी उपयोगी होवाथी चोवीश मांडला आप्या छे.

आ पाक्षिकसूत्र तथा श्रमणसूत्र टीका, अवचूरी अने भाषांतरो-सहित जूदी जूदी संस्थाओ तरफथी अनेक शैलीमां छपावी बहार पाडवामां आवेलां छे, परंतु तेना प्राथमिक अभ्यासी साधु-साध्वीओ अल्प प्रयासे अने अल्प सहायथी आ

सूत्रो शब्दार्थसहित कठे करी शके एवो शुद्ध गुजराती भाषामां लखायेलो टबो के बाळावबोध छपायेल के लखेल प्रतरूपे जोवामां आव्यो नथी अने आवा समयमां तेवा साधननी खास जरुर छे एम जाणी गुरुणीजी श्री गुलाबश्रीजीनी शिष्या साध्वीजी श्री लाभश्रीए श्री जैन धर्म प्रसारक सभाना शास्त्री जेठालाल हरिभाई पासे पोतानी रुबरु बेसाडी अत्यंत खतथी आ काम कराव्यु छे. तेमां मूळ सूत्रपाठ प्रायः श्रेष्ठी श्री देवचद्र लालभाइ जैन पुस्तकोद्धारनी सस्था तरफथी छपायेल सूरिश्रीयशोदेवप्रणीत विवरण (मोटी टीका) वाळा श्री पाक्षिकसूत्रने आधारे लखवामां आव्यो छे, छतां क्वचित् लखेली जूनी प्रतमा तथा परपराथी चालता आवता साधु–साध्वीओना मुखपाठमां काइक तफावत जणायो छे ते पण ते ते स्थळे टिप्पणी रूपे अथवा मूळ स्थळे कौंसमां बताव्यो छे, अथवा छापेल प्रतनो पाठ कौंसमां के टिप्पणीमां बताव्यो छे सामान्य सस्कृतना अभ्यासीओने सूत्रभाषाना ज्ञानसाथे सहेलाइथी अर्थ याद रहे तेटला माटे टीका तथा अवचूरिने अनुसारे मूळसूत्रनी ज नीचे सस्कृत छाया मूकवामां आवी छे अने तेनी नीचे शुद्ध गुजराती भाषामां मूळसूत्रनु एक एक पद लइ तेनो शब्दार्थ लख्यो छे तेमां अन्वय प्रमाणे वाक्यार्थ करवामां अभ्यासीओने सरळता थवा सारु प्रायः अन्वय प्रमाणे मूळनां पदो लीधा छे, अने कोइ ठेकाणे लांबा वाक्यथी थती अभ्यासीओनी गुचवण दूर करवा माटे खडान्वय पण राख्यो छे आ पाक्षिकसूत्रनी मोटी टीकामां मूळनो अर्थ घणो विस्तारथी विद्वत्ताभरेलो आप्यो छे ते सर्व अत्यत उपयोगी छे, परतु आ कार्य प्राथमिक अभ्यासीओ माटे करेलु होवाथी सक्षेपमा अने आपणामां चाली आवती सहेली तथा सांकेतिक भाषामां तेनो शब्दार्थ बहुधा करवामा आव्यो छे अने तेमां खास जाणवा जेवी हकीकत

टीकाने आधारे बनता प्रयासे संक्षिप्त करीने लखी छे. ते पण मूळना शब्दार्थमां गुंचवण नहीं आववानी खातर प्रायः मूळनो शब्दार्थ लखाइ गया पछी आपवामां आवी छे. कोइ ठेकाणे टीकामां बे रीते व्याख्या करी होय तो तेमांथी संक्षेपना हेतुथी एक व्याख्या पण करवामां आवी छे. जेमके आठमा पानाना पहेला पृष्ठमां मूळनो पाठ जे "सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूआणं" विगेरे चारे पदोनो एक ज अर्थ लख्यो छे अने बीजो अर्थ पण टीकामां "पाण एटले विकलेंद्रिय, भूत एटले वनस्पतिकाय, जीव एटले पंचेंद्रिय अने सत्त्व एटले बाकीना चार स्थावरो कह्या छे" ते अमे लख्या नथी विगेरे.

प्रथम आ कार्य मात्र एक पाक्षिकसूत्र माटे ज करवानो विचार हतो, परंतु ते समये अत्र विराजमान प्रवर्तक महाराज श्री कांतिविजयजी महाराजनी प्रेरणाथी साध्वीजी श्री लाभश्रीजीए श्रमणसूत्रनुं काम पण अवचूरिने आधारे तेवा ज क्रमथी तैयार कराव्युं. आ बन्ने कार्यमां प्रवर्तकजी महाराजना मुख्य शिष्य मुनिवर चतुरविजयजी तथा प्रशिष्य मुनिवर पुण्यविजयजीए सारी मदद आपी छे, तो पण अमारी पूछवा विगेरेनी खामीने लीधे अथवा प्रुफ तपासवामां थयेला प्रमादादिकने लीधे जे कांइ अशुद्धि रही गइ होय ते सुधारी लेवी अने अमोने तेनी सूचना आपवी के जेथी बीजी आवृत्ति वखते तेनापर लक्ष रहे.

अनुक्रमणिका.

निवेदन.

पाक्षिकसूत्र ए अति आवश्यकनु अने अगत्यनुं सूत्र छे. दरेक नवदीक्षित साधु यां साध्वीने तेनी पहेली तके जरुर पडे छे. साधुजीवननी श्रेष्ठता अने मर्यादा तेमां सूचववामां आवी छे जो तेमां उपदेशायेला आचारने अनुरुप वर्तन करवामां आवे तो साधु अगर साध्वी पोताना मानव-जीवननी सार्थकता करी शके छे जैन साहित्यना अपूर्व ज्ञान-भडारने माटे आजे बे मत नथी. सारा सारा विद्वानो अने तात्त्विकोए पण तेनी मुक्तकंठे प्रशंसा करी छे अने तेने पोताना हृदयमां स्थान आप्यु छे. जैन साहित्यसामग्रीमां आवा अनेकविध विधि-विधानोने सूचवतां रत्नो पड्यां छे तेना प्रकाशन-वडे ज्ञान-दाननो ल्हावो लेवो ए न्यायोपार्जित द्रव्यनी साची सार्थकता छे.

आ सूत्र पहेलवहेला श्री जैन धर्म प्रसारक मंडळे छपावी बहार पाड्यु छे. त्यारपछी तेनी आवृत्ति मूळजीभाइ झवेरचंदे करी छे, कारण के आवा उपयोगी अने अत्युत्तम सूत्रनी सतत मागणी रहे ते सहज अने स्वाभाविक छे. जैन वर्गना साध्वीसमुदायमां पूज्य गुरुणीश्री लाभश्रीजी वयोवृध्धा साथे चारित्रवृद्धा पण छे. तेमनु अनुपम चारित्र अनुकरणीय अने प्रशस्य छे. तेमना दीर्घ चारित्रपर्यायमां तेमणे घणा साध्वीरत्नो प्रगटाव्या छे. एवा ज एक श्रमणी-रत्न ते पूज्य गुरुणीश्री बालब्रह्मचारी शिवश्रीजी महाराजना शिष्या तिलकश्रीजी छे. तेओ पण शांतस्वभावी, सरल अने सौम्य प्रकृतिवाळा छे. तेमनी भागवती दीक्षा जेम लांबा समयनी छे तेम तेमनो शास्त्राभ्यास पण उंडो छे. तेमणे अत्यारसुधीमा पोतानी शक्ति ज्ञान-दानमां अने परोपकारमां खर्ची छे. तेमनी चारित्रनी विशुद्धिथी अनेक भक्तो तेमना प्रत्ये आकर्षाइने तेमना चरणमां पोतानुं शिर झूकावे छे.

आ सूत्रनी सतत मागणीनो ख्याल तेमने आवतां ते तरफ तेमणे द्रष्टि पहोंचाडी अने ते छपाववा माटे सुरतना शा चुनीलाल डाह्याभाइनी आर्थिक सहायथी ते कार्य करवानुं मने सुप्रत करवामां आव्युं.

शेठ कुंवरजीभाइ आणंदजी अत्यारे जैनसमाजथी अजाण्या नथी. तेमनी शासनसेवा तेमना जीवननो परिचय करावावाने बस छे. ए सेवाभावी पुरुषने ज्ञान-सेवानी तालावेली लागेली छे अने तेना मूर्तिमंत स्वरूप तरीके श्री जैन धर्म प्रसारक सभा मौजुद छे. दीर्घदृष्टिथी अने अनुभवजन्य बुद्धिथी तेमणे ज्ञान-प्रकाश फेलाववामां सारो रस लीधो छे. उपर्युक्त सूत्र आ संस्था तरफथी पहेला बहार पडयुं हतुं अने ते फरीवार छपाववानी मागणी करवामां आवता ते मागणी तेमणे स्वीकारी एटलुं ज नहीं पण प्रुफ सुधारी आपवा माटे पण श्रम लीधो छे ते माटे हुं तेमनो ऋणी अने आभारी छुं. मारो ध्येय सस्ती कींमते सुंदर प्रकाशनो बहार पाडी जैन जनताना करकमळमां धरवानो छे. आवा साहित्यना प्रकाशनथी कमाणी करवानो उद्देश नथी अने तेवा लालचवाळा विचारोथी हुं दूर रहेवा मागुं छुं. केटलाक पुस्तको प्रकाशन माटे पसंद करी राख्या छे, परंतु सहायताना अभावे प्रकाशन करी शकतो नथी. सहायता प्राप्त थये ते जैनसमाज समक्ष प्रगट करवामां आवशे.

मनसुखलाल नागरचंद पारेख.



वेरमणं ५। सव्वाओ राइभोयणाओ वेरमणं ॥ ६ ॥

(तद्यथा—सर्वस्मात् प्राणातिपातात् विरमण १। सर्वस्मात् मृषावादात् विरमण २। सर्वस्मात् अदत्तादानात् विरमण ३। सर्वस्मात् मैथुनात् विरमणं ४। सर्वस्मात् परिग्रहात् विरमण ५। सर्वस्मात् रात्रिभोजनात् विरमण ॥ ६ ॥)

(त जहा) ते आ प्रमाणे—(सव्वाओ) सर्व प्रकारे अथवा सर्व प्रकारना (पाणाइवायाओ) प्राणातिपात थकी एटले जीवहिंसा थकी (वेरमण) विरमवु–निवर्तवु–पाछु फरवु १ (सव्वाओ) सर्व प्रकारे अथवा सर्व प्रकारना (मूसावायाओ) मृषावाद थकी एटले जूठु बोलवा थकी (वेरमण) विरमवु २. (सव्वाओ) सर्व प्रकारे अथवा सर्व प्रकारना (अदिन्नादाणाओ) अदत्तादान थकी एटले चोरी करवा थकी (वेरमणं) विरमवु ३. (सव्वाओ) सर्व प्रकारे अथवा सर्व प्रकारना (मेहुणाओ) मैथुन थकी (वेरमण) विरमवु. ४. (सव्वाओ) सर्व प्रकारे अथवा सर्व प्रकारना (परिग्गहाओ) धनधान्यादिक बाह्य अने रागद्वेषरूपी अभ्यंतर परिग्रह थकी (वेरमण) विरमवु. ५. (सव्वाओ) सर्व प्रकारे अथवा सर्व प्रकारना (राइभोयणाओ) रात्रिभोजन थकी (वेरमण) विरमवु. ६

सू०—तत्थ खलु पढमे भंते महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वं भंते पाणाइवायं पच्चक्खामि, से सुहमं वा बायरं वा तसं वा थावरं वा नेव सयं पाणे अइवाएज्जा, नेवन्नेहिं पाणे अइ-

जे य इमं गुणरयण–सायरमविराहिऊण तिण्णसंसारा । ते मंगलं करित्ता, अहमवि आराहणाभिमुहो॥२॥

(ये च इमं गुणरत्नसागरमविराध्य तीर्णसंसाराः । तान् मङ्गलं कृत्वा अहमपि आराधनाभिमुखः ॥२॥

(जे य) वळी जे महामुनिओ (इमं) आ (गुणरयणसायरं) पंच महाव्रतादिक गुणोरूपी रत्नोना समुद्रने (अविराहिऊण) नहि विराधीने एटले अखंड रीते पाळीने (तिण्णसंसारा) संसाररूपी सागरने तरी गया छे (ते) ते महामुनिओने (मंगलं) मंगळरूप (करित्ता) करीने (अहमवि) हुं पण (आराहणाभिमुहो) मोक्षमार्गनी आराधना करवामां सन्मुख थयो छुं. २.

मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुयं च धम्मो अ । खंती गुत्ती मुत्ती, अज्जवया मद्दवं चेव ॥ ३ ॥

(मम मङ्गलम् अर्हन्तः सिद्धाः साधवः श्रुतं च धर्मः च । क्षान्तिः गुप्तिः मुक्तिः आर्जवता मार्दवं चैव ॥३॥)

(अरिहंता)–चोत्रीश अतिशयो सहित तथा आठ कर्म रहित एवा श्री अरिहंत प्रभु, तथा (सिद्धा) सिद्धो, तथा (साहू) साधुओ, तथा उपलक्षणथी सर्व आचार्यो अने उपाध्यायो, तथा (सुयं च) श्रुतज्ञान, तथा (धम्मो अ) अहिंसादिक धर्म, तथा (खंती) क्षमा एटले क्रोधनो त्याग, तथा (गुत्ती) गुप्ति एटले संलीनता, तथा (मुत्ती) मुक्ति एटले निर्लोभता, तथा (अज्जवया) आर्जवता एटले सरलता–मायानो त्याग, तथा (मद्दवं) मार्दव एटले माननो त्याग–निरभिमानीपणुं, (चेव) निश्चे, आ नव पदो (मम) मारा प्रत्ये (मंगलं) मंगळ करनार थाओ. ३.

लोगम्मि संजया जं, करिंति परमरिसिदेसिअमुआरं । अहमवि उवट्ठिओ तं, महव्वयउच्चारणं काउं ॥४॥

(लोके संयताः यां कुर्वन्ति परमर्षिदेशिताम् उदाराम् । अहमपि उपस्थितः तां महाव्रतोच्चारणां कर्तुम् ॥)

(लोगम्मि) तिर्छा लोकने विषे (संजया) संयमधारी मुनिओ (परमरिसिदेसिअं) परम ऋषि जे तीर्थंकरो अने गणधरो तेओए कहेला तथा (उआर) उदार एटले प्रधान एवा (ज) जे पंचमहाव्रतना उच्चार तेने (करिंति) करे छे, (त) ते (महव्वयउच्चारण) महाव्रतोना उच्चारने (काउ) करवा माटे (अहमवि) हुं पण (उवट्ठिओ) उद्यमवंत थयो छु ४.

सूत्रं–से किं तं महव्वयउच्चारणा ? महव्वयउच्चारणा । पंचविहा पन्नत्ता राइभोअणवेरमणछट्ठा ॥ ५ ॥

(अथ किं तत् महाव्रतोच्चारणा ? महाव्रतोच्चारणा । पञ्चविधा प्रज्ञप्ता रात्रिभोजनविरमणषष्ठा ॥ ५ ॥)

अहीं शिष्य प्रश्न करे छे—हे गुरुमहाराज ! (से) हवे (त) ते (महव्वयउच्चारणा) महाव्रतोनो उच्चार (किं) शु वस्तु छे ? अर्थात् तेना केटला प्रकार छे ? गुरुमहाराज उत्तर आपे छे के—हे शिष्य ! (महव्वयउच्चारणा) महाव्रतोनो उच्चार (पंचविहा) पांच प्रकारे (पन्नत्ता) कह्यो छे, तथा (राइभोअणवेरमणछट्ठा) रात्रिभोजनथी जे विरमवु ए छठ्ठो छे

हवे पंचमहाव्रत अने छठ्ठु रात्रिभोजनविरमणव्रत कहे छे:—

सू०–तं जहा–सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं १ । सव्वाओ मूसावायाओ वेरमणं २ । सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ३ । सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ४ । सव्वाओ परिग्गहाओ

१ 'का २ सा' इति वा सत्कार

वेरमणं ५ । सव्वाओ राइभोयणाओ वेरमणं ॥ ६ ॥

(तद्यथा—सर्वस्मात् प्राणातिपातात् विरमणं १ । सर्वस्मात् मृषावादात् विरमणं २ । सर्वस्मात् अदत्तादानात् विरमणं ३ । सर्वस्मात् मैथुनात् विरमणं ४ । सर्वस्मात् परिग्रहात् विरमणं ५ । सर्वस्मात् रात्रिभोजनात् विरमणं ॥ ६ ॥)

(तं जहा) ते आ प्रमाणे—(सव्वाओ) सर्व प्रकारे अथवा सर्व प्रकारना (पाणाइवायाओ) प्राणातिपात थकी एटले जीवहिंसा थकी (वेरमणं) विरमवुं–निवर्तवुं–पाछुं फरवुं १. (सव्वाओ) सर्व प्रकारे अथवा सर्व प्रकारना (मूसावायाओ). मृषावाद थकी एटले जूठुं बोलवा थकी (वेरमणं) विरमवुं २. (सव्वाओ) सर्व प्रकारे अथवा सर्व प्रकारना (अदिन्नादाणाओ) अदत्तादान थकी एटले चोरी करवा थकी (वेरमणं) विरमवुं. ३. (सव्वाओ) सर्व प्रकारे अथवा सर्व प्रकारना (मेहुणाओ) मैथुन थकी (वेरमणं) विरमवुं. ४. (सव्वाओ) सर्व प्रकारे अथवा सर्व प्रकारना (परिग्गहाओ) धनधान्यादिक बाह्य अने रागद्वेषरूपी अभ्यंतर परिग्रह थकी (वेरमणं) विरमवुं. ५. (सव्वाओ) सर्व प्रकारे अथवा सर्व प्रकारना (राइभोयणाओ) रात्रिभोजन थकी (वेरमणं) विरमवुं. ६.

सू०—तत्थ खलु पढमे भंते महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वं भंते पाणाइवायं पच्चक्खामि, से सुहुमं वा बायरं वा तसं वा थावरं वा नेव सयं पाणे अइवाएज्जा, नेवन्नेहिं पाणे अइ-

वायाविज्जा, पाणे अइवायते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि, न कारवेमि, करंत पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

(तत्र खलु प्रथमे भदन्त महाव्रते प्राणातिपातात् विरमण, सर्वं भदन्त प्राणातिपातं प्रत्याख्यामि, अथ (तद्यथा) सूक्ष्म वा बादरं वा त्रसं वा स्थावर वा नैव स्वय प्राणान् अतिपातयामि, नैवान्यैः प्राणान् अतिपातयामि, प्राणान् अतिपातयतोऽपि अन्यान्न समनुजानामि, यावज्जीव त्रिविधं त्रिविधेन मनसा वाचा कायेन न करोमि, न कारयामि, कुर्वन्तमपि अन्य न समनुजानामि, तस्य भदन्त प्रतिक्रमामि निन्दामि गर्हामि आत्मान व्युत्सृजामि ॥)

(तत्थ) तिहां (खलु) निश्चे (भंते) हे भगवंत (पढमे) पहेला (महव्वए) महाव्रतने विषे (पाणाइवायाओ) प्राणातिपात थकी (वेरमणं) विरमवु. एम भगवंते कह्यु छे तेथी (भंते) हे भगवन् (सव्वं पाणाइवायं) सर्व प्राणातिपातने एटले जीवोना विनाशने (पच्चक्खामि) हु वर्जु छु. (से) ते जीवो आ प्रमाणे जाणवा-(सुहुमं वा) सूक्ष्म एटले जे जीवो चर्मचक्षुथी देखाय नहीं ते (बायरं वा) अथवा बादर एटले जे जीवो चर्मचक्षुथी देखाय ते (तसं वा) त्रस एटले जेओ टाढ तडकाथी त्रास पामे अने हालीचाली शके ते (थावरं वा) स्थावर एटले जे हालीचाली न शके एवा

पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय अने वनस्पतिकाय. (पाणे) आ उपर कहेला चार प्रकारना जीवोने (सयं) हुं पोते (नेव अइवाएज्जा) नहीं ज विनाश करुं, तथा (पाणे) ते जीवोने (अन्नेहिं) बीजा पासे (नेव अइवायाविज्जा) नहीं ज विनाश करावुं, तथा (पाणे) ते जीवोने (अइवायंते वि) विनाश करता एवा पण (अन्ने) बीजाओने (न समणु- जाणामि) अनुमोदना न करुं-सारा न जाणुं. क्यां सुधी ? तो के (जावज्जीवाए) जावजीव सुधी एटले हुं जीवुं त्यांसुधी. (तिविहं) त्रिविधने (तिविहेणं) त्रिविधे करीने एटले (मणेणं) मनवडे (वायाए) वाणीवडे (काएणं) कायावडे (न करेमि) हिंसा नहीं करुं (न कारवेमि) नहीं करावुं (करंतं पि अन्नं) हिंसा करता एवा पण बीजाने (न समणुजाणामि) नहीं अनुमोदना करुं. (तस्स) ते हिंसा संबंधी पापने (भंते) हे भगवन् (पडिक्कमामि) हुं पडिकमुं छुं एटले तेनाथी पाछो फरुं छुं, (निंदामि) आत्मानी साक्षीए ते पापने निंदु छुं, (गरिहामि) गुरुनी समक्ष गर्हा करुं छुं. (अप्पाणं वोसिरामि) तेवा पापकारी मारा आत्माने वोसरावुं छुं एटले विविध प्रकारे तजुं छुं.

सू०-से पाणाइवाए चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा-दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ। दव्वओ णं पाणाइवाए छसु जीवनिकाएसु, खेत्तओ णं पाणाइवाए सव्वलोए, कालओ णं पाणाइवाए दिया वा राओ वा, भावओ णं पाणाइवाए रागेण वा दोसेण वा ॥

(स प्राणातिपातः चतुर्विधः प्रज्ञप्तः, तद्यथा—द्रव्यतः क्षेत्रतः कालतः भावतः । द्रव्यतः णं प्राणा-

तिपातः षट्सु जीवनिकायेषु, क्षेत्रतः णं प्राणातिपातः सर्वलोके, कालतः ण प्राणातिपात दिवा वा रात्रौ वा, भावतः ण प्राणातिपातः रागेण वा द्वेषेण वा ॥)

(से) ते (पाणाइवाए) प्राणातिपात एटले जीवनो विनाश (चउव्विहे) चार प्रकारवाळो (पन्नत्ते) श्री वीतरागे कह्यो छे. (त जहा) ते चार प्रकार आ प्रमाणे—(दव्वओ) द्रव्यथी एटले द्रव्यने आश्रीने (खित्तओ) क्षेत्रथी एटले क्षेत्रना प्रधानपणाने आश्रीने (कालओ) काळथी एटले काळने आश्रीने तथा (भावओ) भावथी एटले भावने आश्रीने. तेमा (दव्वओ ण) द्रव्यने आश्रीने (पाणाइवाए) प्राणातिपात ते के जे (छसु) पृथ्वीकाय १, अप्काय २, तेजस्काय ३, वायुकाय ४, वनस्पतिकाय ५ अने त्रसकाय ६ ए छए (जीवनिकाएसु) जीवोनी निकायने विषे थाय छे, तथा (खित्तओण) क्षेत्रने आश्री (पाणाइवाए) जीवहिंसा ते के जे (सव्वलोए) चौद राजप्रमाण सर्व लोकने विषे थाय छे तथा (कालओण) काळने आश्रीने (पाणाइवाए) प्राणातिपात ते के जे (दिया वा राओ वा) दिवसने विषे अने रात्रिने विषे थाय छे. तथा (भावओ ण) भावने आश्रीने (पाणाइवाए) प्राणातिपात ते के जे (रागेण वा दोसेण वा) रागे करीने तथा द्वेषे करीने थाय छे

आ प्रमाणे प्राणातिपातना भेदो कह्या. हवे ते ज प्राणातिपात अतीतकाळे एटले धर्म पाम्या पहेलां करायेल होय तेनी विशेष निंदा करवा माटे कहे छे—

सू०—जं* मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स[1] अहिंसालक्खणस्स[2] सच्चाहिट्ठियस्स[3] विणयमूलस्स[4]

---

* ज पि य मए इति वा

खंतिप्पहाणस्स[५] अहिरन्नसोवन्नियस्स[६] उवसमपभवस्स[७] नवबंभचेरगुत्तस्स[८] अपयमाणस्स[९] भिक्खा-
वित्तिअस्स[१०] कुक्खीसंबलस्स[११] निरग्गिसरणस्स[१२] संपक्खालियस्स[१३] चत्तदोसस्स[१४] गुणगाहियस्स निव्विया-
रस्स[१६] निवित्तीलक्खणस्स[१७] पंचमहव्वयजुत्तस्स[१८] असंनिहिसंचयस्स[१९] अविसंवाइयस्स[२०] संसारपारगामि-
अस्स[२१] निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स[२२], पुव्विं अणयाए[१] असवणयाए[२] अबोहिए[३] अणभिगमेणं,
अभिगमेण वा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए[२] बालयाए[३] मोहयाए[४] मंदयाए[५] किड्डयाए[६] तिगारवगरुयाए
चउक्कासाओवगएणं पंचिंदिओवसट्टेणं पडुपन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं[११] इहं वा भवे
अन्नेसु वा भवग्गहणेसु पाणाइवाओ कओ वा काराविओ वा कीरंतो वा परेहिं समणुन्नाओ तं
निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं ॥

(यो मया अस्य धर्मस्य केवलिप्रज्ञप्तस्य[१] अहिंसालक्षणस्य[२] सत्याधिष्ठितस्य[३] विनयमूलस्य[४] क्षान्तिप्रधानस्य[५]
अहिरण्यसौवर्णिकस्य[६] उपशमप्रभवस्य[७] नवब्रह्मचर्यगुप्तस्य अपचमानस्य[९] भिक्षावृत्तिकस्य[१०] कुक्षिशम्बलस्य[११]
निरग्निशरणस्य[१२] संप्रक्षालिकस्य[१३] त्यक्तदोष(द्वेष)स्य[१४] गुणग्राहिकस्य[१५] निर्विकारस्य[१६] निर्वृत्तिलक्षणस्य[१७] पञ्चमहाव्रत-
युक्तस्य[१८] असन्निधिसंचयस्य[१९] अविसंवादिनः[२०] संसारपारगामिकस्य[२१] निर्वाणगमनपर्यवसानफलस्य[२२], पूर्वम् अ-

ज्ञानतयां अश्रवणतयां अबोध्यां अनभिगमेन', अभिगमेन वा प्रमादेनं रागद्वेषप्रतिबद्धतयां बालतयां मोहृतयां मन्दतयां क्रीडतयां त्रिगौरवगुरुकतयां चतु कषायोपगतेर्न पञ्चेन्द्रियोपवशार्त्तेन प्रत्युत्पन्नभारितयां सातसुखमनुपालयतां, इह वा भवे अन्येषु वा भवग्रहणेषु प्राणातिपातः कृतो वा कारितो वा क्रियमाणो वा परैः समनुज्ञात , त निन्दामि गर्हामि त्रिविध त्रिविधेन मनसा वाचा कायेन)

(जं) जे-प्राणातिपात (मए) में (इमस्स धम्मस्स) आ बावीश विशेषणवाळो धर्म पाम्यानी (पुव्विं) पहेलां एटले धर्म अंगिकार कर्या पहेलां अज्ञानादिक चार कारणोए करीने तथा धर्म अंगीकार कर्या पछी प्रमादादिक अग्यार कारणोए करीने कर्यो होय तेने हु निंदु छु. ए प्रमाणे आ सूत्रनो संबंध छे.

हवे प्रथम धर्मना बावीश विशेषणोनो अर्थ आ प्रमाणे—

धर्म केवो ? (केवलिपन्नत्तस्स) केवळी भगवते प्ररुपेलो एटले उपदेश करेलो १, तथा (अहिंसालक्खणस्स) अहिंसा एटले प्राणीनु रक्षण ते ज छे लक्षण जेनु एवो २, तथा (सच्चाहिट्ठियस्स) सत्य वचनवडे आश्रित करायेलो एटले व्याप्त ३, तथा (विणयमूलस्स) विनय छे मूल कारण जेनु एटले विनयथी उत्पन्न थयेलो ४, तथा (खंतिप्पहाणस्स) क्षमा छे प्रधान जेमां एवो ५, तथा (अहिरण्णसोवण्णियस्स) नथी हिरण्य एटले रूपु अने सुवर्ण एटले सुवर्णना अलंकार विगेरे जेमां अर्थात् उपलक्षणथी सर्व परिग्रह रहित एवो ६, तथा (उवसमपभवस्स) उपशम एटले इंद्रिय अने नोइंद्रिय (मन) नो जय, तेनाथी उत्पत्ति छे जेनी एवो ७, तथा (नवबंभचेरगुत्तस्स) नव प्रकारनी ब्रह्मचर्यनी गुप्तिथी गुप्त (सहित) एवो ८,

तथा (अपयमाणस्सं) नथी पचन क्रिया जेमां एवो एटले के पचनादिक आरंभ रहित ९, तेथी करीने ज (भिक्खावित्तिअस्सं) भिक्षावडे आजीविका छे जेमां एवो १०. तथा (कुक्खिसंबलस्सं) कुक्षि एटले उदरने विषे ज शंबल एटले भातुं छे जेमां अर्थात् जेमां कुक्षिनी बहार कांइ पण खावानुं राखी शकातुं नथी एवो ११, तथा (निरग्गिसरणस्स) शीतादिकने दूर करवा माटे नथी अग्निनुं शरण लेवातुं जेमां एवो १२, तथा (संपखालियस्सं) कर्मरूपी फळने सम्यक् प्रकारे पखाळनार एटले शुद्ध करनार एवो १३, तथा (चत्तदोसस्सं) त्याग कर्या छे मिथ्यात्व अज्ञान विगेरे दोषो जेणे एवो अथवा त्याग कर्यो छे द्वेष जेमां एवो १४, एज कारण माटे (गुणगाहियस्सं) गुणोने ग्रहण करवाना स्वभाववाळो १५, तथा (निव्वियारस्सं) गयो छे—नाश पाम्यो छे विकार एटले कामनो उन्माद जेमांथी एवो १६, तथा (निविचित्तलक्खणस्स) निवृत्ति एटले सर्व सावद्ययोगनी विरति छे लक्षण (स्वरूप) जेनुं एवो १७, तथा (पंचमहव्वयजुत्तस्सं) पांच महाव्रतोए करीने युक्त एवो १८, तथा (असंनिहिसंचयस्सं) साधुए पोतानी पासे कांइ पण (मोदक, उदक, खजुर, हरडे विगेरे) पदार्थोनो संचय राखी शकातो नथी जेमां एवो १९, तथा (अविसंवाइयस्सं) विसंवाद रहित एटले जेमां कोइ पण प्रकारनो हठ कदाग्रह विगेरे विसंवाद नथी एवो, अथवा साची युक्तिथी जेनो बाध थतो नथी एवो २०, तथा (संसारपारगामिअस्स) जे संसार रूपी समुद्रनो पार पमाडनार छे एवो २१, तथा (निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्सं) मोक्षनी प्राप्ति रूपी छेल्लुं छे फल जेनुं एवो अर्थात् आ धर्म स्वर्गादिकनुं सुख आपी छेवट मोक्षरूप फळने आपनार छे. २२.

धर्म अंगीकार कर्या पहेलां जे अज्ञानतादिक चार कारणोए करीने प्राणातिपातनो संभव छे ते चार कारणो बतावे छे.—

(अण्णयाए) अज्ञानपणाए करीने १, तथा (असवणयाए) सद्गुरुना मुखथी नहीं सांभळवावडे करीने २, अथवा सांभळ्या छतां पण (अबोहिए) अबोधवडे करीने एटले यथार्थपणे धर्मनु स्वरूप न जाणवा वडे करीने ३, अथवा व्यवहारथी श्रवण अने बोध छतां पण (अणभिगमेणं) सम्यक्पणे धर्मने नहीं अगीकार करवा वडे करीने ४, जे प्राणातिपात मारा वडे करायो होय तेनो त्याग करु छु एम सबंध जाणवो.

(अभिगमेण वा) अथवा धर्म अगीकार कर्या छतां पण अग्यार कारणोवडे प्राणातिपातनो सभव छे, ते अग्यार कारणो कहे छे—(पमाएण) मद्य विषयादिक प्रमादे करीने १, तथा (रागदोसपडिबद्धयाएं) राग अने द्वेषना प्रतिबंधवडे एटले व्याकुळतावडे करीने २, तथा (बालयाए) बाळकपणावडे एटले अज्ञानपणाए करीने ३, तथा (मोहयाए) मोह एटले चित्तनी व्याकुळता अथवा मोहनीय कर्मनु आधीनपणु तेणे करीने ४, तथा (मदयाएं) मदपणाए करीने एटले कायानी जडताए करीने अर्थात् आळसुपणाए करीने ५, तथा (किड्डयाए) द्यूतादिक क्रीडा करवावडे करीने ६, तथा (तिगारवगरुयाएं) ऋद्धिगारव, रसगारव अने सातागारव ए त्रण गारवे करीने थयेली जे गुरुता एटले भारेपणु ते वडे करीने ७, तथा (चउक्कसाओवगएण) क्रोध, मान, माया अने लोभ ए चार कषायना उदयने वश थवा वडे करीने ८, तथा (पचिंदिओवसट्टेण) स्पर्शनादिक पांच इंद्रियोना वशवर्तीपणाथी प्राप्त थयेलु जे आर्त्तध्यान ते वडे करीने ९, तथा (पडुपन्नभारियाए) उत्पन्न थयेलो जे कर्मनो भार तेणे करीने अर्थात् कर्मना गुरुपणाए करीने १०, तथा (सायासोक्खमणुपालयंतेण) सातावेदनीय कर्मना उदयथी उत्पन्न थयेलु जे सुख तेने भोगववामां आसक्त थवा वडे करीने ११

आ उपर कहेला चार अने अग्यार कारणोने लीधे (इहं वा भवे) आ भवने विषे अथवा (अन्नेसु वा भवग्गहणेसु) बीजा एटले आ भवथी पहेलाना भवोने विषे (पाणाइवाओ) जे प्राणातिपात (कओ वा) में कर्यो होय अथवा (काराविओ वा) बीजा पासे कराव्यो होय, अथवा (कीरंतो परेहिं) बीजाए करातो थको (समणुन्नाओ) में अनुमोद्यो होय एटले सारो कह्यो होय (तं) तेवा प्राणातिपातने (निंदामि) हुं मारा आत्मानी साक्षीए निंदुं छुं, (गरिहामि) गुरुनी समक्ष गर्हा करुं छुं. (तिविहं) करवुं, कराववुं, अनुमोदवुं एम त्रण प्रकारना प्राणातिपातने (तिविहेण) त्रण प्रकारे एटले (मणेणं) मनवडे (वायाए) वाचावडे तथा (काएणं) कायावडे निंदु-गर्हुं छुं.

हवे त्रण काल संबंधी प्राणातिपातनी विरतिने प्रतिपादन करता सता कहे छेः—

सू०—अईयं निंदामि, पडुपन्नं संवरेमि, अणागयं पच्चक्खामि सव्वं पाणाइवायं ॥

(अतीतं निन्दामि, प्रत्युत्पन्नं संवृणोमि, अनागतं प्रत्याख्यामि, सर्वं प्राणातिपातम्)

(अईयं) अतीतकाळे-भूतकाळे करेला (सव्वं) सूक्ष्म तथा स्थूळ सर्व (पाणाइवायं) प्राणातिपातने (निंदामि) हुं निंदुं छुं, (पडुप्पन्नं) वर्तमानकाळे संभवता-थता सर्व प्राणातिपातने (संवरेमि) हुं संवरुं छुं-निवारुं छुं, (अणागयं) अनागत एटले भविष्य काळ संबंधी सर्व प्राणातिपातने (पच्चक्खामि) पच्चक्खुं छुं-निषेधुं छुं.

आ उपर कहेला अनागत प्रत्याख्यानने विशेष प्रकारे कहे छे—

सू०—जावज्जीवाए अणिस्सिओ हं नेव सयं पाणे अइवाएज्जा, नेवन्नेहिं पाणे अइवायावेज्जा, पाणे अइवायते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा ॥

(यावज्जीवम् अनिश्रितोऽहं नैव स्वयं प्राणान् अतिपातयामि, नैवान्यैः प्राणान् अतिपातयामि, प्राणान् अतिपातयतः अपि अन्यान् न समनुजानामि ।)

(अणिस्सिओ) अनिश्रित एटले आलोक तथा परलोकनी आशसारहित एवो (हं) हु (जावज्जीवाए) जावजीव सुधी (सयं) पोते (पाणे) प्राणोनो (नेव) नहीं ज (अइवाएज्जा) विनाश करु. (अन्नेहिं) बीजा पासे (पाणे) प्राणोनो (नेव) नहीं ज (अइवायावेज्जा) विनाश कराबु. (पाणे) प्राणोनो (अइवायते वि) विनाश करता एवा पण (अन्ने) बीजाओने (न समणुजाणिज्जा) हु सारा नहीं मानु.

कोनी साक्षीए हु आ पच्चक्खाण करुं छु ? ए शंका उपर अरिहंतादिक पांचनी साक्षी बतावे छे —

सू०—तं जहा—अरिहंतसक्खिअं १ सिद्धसक्खिअं २ साहूसक्खिअं ३ देवसक्खिअं ४ अप्पसक्खिअं ।५।

(तद्यथा—अर्हत्साक्षिकं १ सिद्धसाक्षिकं २ साधुसाक्षिकं ३ देवसाक्षिकं ४ आत्मसाक्षिकम् ५)

(तं जहा) ते आ प्रमाणे—(अरिहंतसक्खिअं) अरिहंतनी साक्षीए १, तथा (सिद्धसक्खिअं) पंदर भेदना जे

सिद्धो तेमनी साक्षीए २, तथा (साहूसक्खिअं) साधु एटले महामुनिओ तथा उपलक्षणथी आचार्य अने उपाध्याय तेमनी साक्षीए ३, तथा (देवसक्खिअं) समकितदृष्टि जे भुवनपति आदिक देवो तेमनी साक्षीए ४, तथा (अप्पसक्खिअं) विरतिना परिणामवाळो जे मारो पोतानो आत्मा तेनी साक्षीए ५ हुं आ पच्चक्खाण करुं छुं.

अहीं कोइ शंका करे के—पोते अने साक्षी ए बन्ने प्रत्यक्ष होय तो ज आ लोकमां साक्षीनो व्यवहार करी शकाय छे. अहीं तो सिद्ध भगवान् अतींद्रिय होवाथी तेमनी साक्षी शी रीते कहेवाय ? तेनो जवाब ए छे के-पच्चक्खाण करनारनी मति श्रुतज्ञानथी वासित थएली होवाथी ते तेना स्वरूपने जाणे छे, तेथी तेने भावनी कल्पनाए करीने ते सिद्धो प्रत्यक्ष जेवा ज छे तेथी तेओनी साक्षी कही शकाय छे. तेथी आ क्षेत्र अने अन्य क्षेत्रमां वर्तता तीर्थंकरो अने मुक्तिमां रहेला सिद्धो केवळज्ञानरूपी चक्षुवडे पच्चक्खाण करनारना पच्चक्खाणने जोइ ज रह्या छे, तेमज भुवनपति आदिक देवो जिनचैत्य विगेरेना अधिष्ठायक होवाथी अथवा तिर्च्छालोकमां विचरता देवो चैत्यवंदनादिक करवा आवेला होवाथी समीपे होय छे अथवा पोताने स्थाने रह्या छतां पण कथंचित् द्वीप समुद्रो प्रत्ये अवधिज्ञाननो प्रयोग करता होय छे तेथी तेओ पण साक्षी थइ शके छे.

आ प्रमाणे पच्चक्खाण करवाथी शुं थाय छे ते कहे छे—

सू०—एवं भवइ भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा ॥

(एव भवति भिक्षु' वा भिक्षुकी वा संयतविरतप्रतिहतप्रत्याख्यातपापकर्मा दिवा वा रात्रौ वा एको वा पर्षद्गतो वा सुप्तो वा जाग्रत् वा ॥)

(एव) ए प्रमाणे एटले पूर्वे कह्या प्रमाणे प्रत्याख्यान करवाथी (भिक्खू वा) साधु अथवा (भिक्खुणी वा) साध्वी (दिआ वा) दिवसे अथवा (राओ वा) रात्रे, (एगओ वा) एकला होय अथवा (परिसागओ वा) पर्षदामां-साधु के साध्वीना समुदायमा रहेल होय, (सुत्ते वा) सुता होय अथवा (जागरमाणे वा) जागता होय तो पण ते (सजय) सत्तर प्रकारना सयमसहित होय छे, तथा (विरय) विविध प्रकारे बार प्रकारना तपने विषे रक्त-तत्पर होय छे, तथा (पडिहय) स्थितिनी हानि करवाथी ग्रंथिनो भेद करीने विनाश पमाड्यु छे अने (पच्चक्खाय) हेतुना अभावथी फरी नहीं वधवावडे दूर कर्यु छे (पावकम्मे) ज्ञानावरणीयादिक पापकर्म जेणे एवो थाय छे. अर्थात् प्राणातिपातनु प्रत्याख्यान करनार साधु तथा साध्वी निरतर सयमवाळा, विरतिवाळा अने पापकर्मरहित थाय छे.

प्राणातिपातनी विरतिनी ज स्तुति करे छे—

सू०—एस खलु पाणाइवायस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए अणोद्दवणयाए, महत्थे महागुणे

महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे, तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्ति कट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥

(इदं खलु प्राणातिपातात् विरमणं हितं सुखं क्षमं निःश्रेयसिकम् आनुगामिकं पारगामिकं सर्वेषां प्राणानां सर्वेषां भूतानां सर्वेषां जीवानां सर्वेषां सत्त्वानाम् अदुःखनतया अशोचनतया अजूरणतया अतेपनतया अपीडनतया अपरितापनतया अनद्रावणतया, महार्थं महागुणं महानुभावम् महापुरुषानुचीर्णम् परमर्षिदेशितं प्रशस्तं, तत् दुःखक्षयाय कर्मक्षयाय मोक्षाय बोधिलाभाय संसारोत्तारणाय इति कृत्वा उपसंपद्य विहरामि)

(एस) आ (खलु) निश्चे (पाणाइवायस्स) प्राणातिपातथकी (वेरमणं) जे विरमवुं ते (हिए) पथ्य भोजननी जेम हित एटले कल्याणने करनारुं छे, तथा (सुहे) तरस्याने शीतळ जळपाननी जेम सुख करनारुं छे, तथा (खमे) युक्त–उचित स्वरूपवाळुं छे, तथा (निस्सेसिए) मोक्षनुं कारण होवाथी निःश्रेयसरूप छे, तथा (आणुगामिए) आनुगामिक एटले उत्तरोत्तर भवोमां सुखनो अनुबंध करनारुं छे. तथा (पारगामिए) संसारनो पार पमाडनार छे. आ व्रत एवा प्रकारनुं केम छे ? तेना उत्तरमां कहे छे के (सव्वेसिं पाणाणं) सर्व पंचेंद्रिय प्राणीओने (सव्वेसिं भूयाणं) सर्व भूत–एकेंद्रियोने (सव्वेसिं जीवाणं) सर्व जीवोने एटले देव, नारकी, उत्तम नर अने असंख्य वर्षना आयुष्यवाळा नरतिर्यंचोने तथा (सव्वेसिं सत्ताणं) सर्व सत्त्वोने एटले सोपक्रम आयुष्यवाळा नरतिर्यंचो अने विकलेंद्रियोने (अदुक्खणयाए) दुःख नहीं उत्पन्न करवा-

वडे करीने, तथा (असोयणयाए) शोक नहीं उत्पन्न करवावडे करीने, तथा (अजूरणयाए) शरीरनु जीर्णपणु नहीं करवावडे करीने, तथा (अतिप्पणयाए) परसेवो, लाळ अने अश्रु उत्पन्न थाय तेवु कारण नहीं करवावडे करीने, तथा (अपीडणयाए) पादादिकना सकोच-विकोचथी पीडा नहीं उत्पन्न करवावडे करीने तथा (अपरियावणयाए) चोतरफथी शरीरनो सताप नहीं करवावडे करीने, तथा (अणोद्दवणयाए) त्रास अथवा मारवु नहीं करवावडे करीने आ व्रत हित आदिकने करनारु छे. वळी आ प्राणातिपातविरमणव्रत (महत्थे) मोटा अर्थवाळु छे एटले तेनु स्वरूप अने फळ विगेरे मोटु छे, तथा (महागुणे) सर्व महाव्रतोना समग्र गुणोनो आधाररूप होवाथी मोटा गुणवाळु छे, तथा (महाणुभावे) स्वर्ग अने मोक्षादिक आपनार होवाथी मोटा अनुभाव-माहात्म्यवाळु छे, तथा (महापुरिसाणुचिन्ने) तीर्थंकर गणधर विगेरे महापुरुषोए आचरेलु एटले सेवेलु छे, तथा (परमरिसिदेसिए) तीर्थंकरादिक महर्षिओए देशित एटले भव्यप्राणीना उपकारने माटे कहेलु छे, तथा (पसत्थे) अत्यत प्रशस्त छे-शुभ छे. आवा प्रकारनु ते प्राणातिपातविरमणव्रत छे तेथी करीने ते व्रत (दुक्खक्खयाए) शरीर अने मनसबधी दुःखोनो क्षय करवा माटे, तथा (कम्मक्खयाए) ज्ञानावरणीयादिक कर्मोना क्षय करवा माटे, तथा (मोक्खयाए) मोक्ष मेळववा माटे तथा (बोहिलाभाए) जन्मातरमा पण समकितनी प्राप्ति थाय तेटला माटे, तथा (ससारुत्तारणाए) ससारसमुद्रनो पार पामवा माटे-मारे थशे (त्ति कट्टु) एम करीने एटले एवा हेतुथी व्रतने (उवसपज्जित्ताण) अगीकार करीने (विहरामि) हुं मासकल्पादिकना विहारवडे वर्तु छु-विचरु छु.

हवे आ प्रथम व्रतनी समाप्ति करे छे —

सू० पढमे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं ॥

(प्रथमे भदन्त महाव्रते उपस्थितोऽस्मि (ततः) सर्वस्मात् प्राणातिपातात् विरमणम् ।)

(भंते) हे भगवन् ! (पढमे) पहेला (महव्वए) महाव्रतने विषे (उवट्ठिओमि) हुं उपस्थित थयो छुं–प्राप्त थयो छुं, तेथी (सव्वाओ) सर्व (पाणाइवायाओ) प्राणातिपात थकी (वेरमणं) मारे आजथी विरमण–निवृत्ति छे.

अहीं भंते एटले हे भगवंत एवुं गुरुनुं आमंत्रण आ व्रतना आरंभमां, मध्यमां अने अंतमां आपेलुं छे तेनो हेतु ए छे के गुरुने पूछ्या विना एटले एमनी आज्ञा लीधा विना कांइ पण कार्य करवुं नहीं अने कर्या पछी " आपनी आज्ञा प्रमाणे में कर्युं छे" एम गुरुने निवेदन करवुं. आ रीते करवाथी ज ते व्रत आराध्युं कहेवाय छे. आ व्रतनी आराधना नहीं कर-नारने नरकगति, अल्पआयु, घणा रोगो तथा कुरूपपणुं विगेरे प्राप्त थाय छे.

पहेला महाव्रतना भांगा ३६ आ प्रमाणे थाय छे–सूक्ष्म, बादर, त्रस अने स्थावर ए चारने मन, वचन अने काया ए त्रण जोगे गुणीए त्यारे बार थाय, तेने करवुं, कराववुं अने अनुमोदवुं ए त्रणगुणा करीए त्यारे कुल छत्रीश थाय छे.

॥ इति प्रथमं महाव्रतम् ॥

॥ अथ द्वितीयं महाव्रतम् ॥

सू०—अहावरे दोच्चे भंते महव्वए मुसावायाओ वेरमण, सव्व भंते मुसावायं पच्चक्खामि, से कोहा वा लोहा वा भया वा हासा वा नेव सय मुसं वएज्जा, नेवन्नेहि मुस वायावेज्जा मुसं वयंते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अथापरस्मिन् द्वितीये भदन्त महाव्रते मृपावादात् विरमण, सर्वं भदन्त मृपावादं प्रत्याख्यामि, अथ (तद्यथा) क्रोधाद्वा लोभाद्वा भयाद्वा हास्याद्वा नैव स्वय मृपा वदामि, नैवान्यैः मृपा वादयामि मृपा वदतोऽपि अन्यान् न समनुजानामि, यावज्जीव त्रिविध त्रिविधेन मनसा वाचा कायेन न करोमि, न कारयामि, कुर्वन्तमपि अन्य न समनुजानामि, तस्य भदन्त प्रतिक्रमामि निन्दामि गर्हामि आत्मान व्युत्सृजामि)

(अह) हवे पहेला महाव्रतनी पछी (भंते) हे भगवन्! (अवरे) अन्य (दोच्चे) बीजा (महव्वए) महाव्रतने विषे (मुसावायाओ) मृपावाद थकी (वेरमणं) सर्वथा विरमवु–निवर्तवु एम भगवते कह्यु छे, तेथी (भंते) हे भगवन् ! (सव्वं)

समग्र (मुसावायं) मृषावादने (पच्चक्खामि) हुं पच्चक्खुं छुं–निषेधुं छुं, (से) ते आ प्रमाणे–(कोहा वा) क्रोधथी (लोहा वा) लोभथी–पहेलो अने छेल्लो कषाय कहेल होवाथी वच्चेना बे पण जाणी लेवा तेथी करीने मानथी, मायाथी, (भया वा) भयथी, (हासा वा) हास्यथी तथा रागथी, द्वेषथी, कलहथी, अभ्याख्यानादिकथी (सयं) हुं पोते (मुसं) मृषा (नेव) नहीं ज (वएज्जा) बोलुं. (अन्नेहिं) बीजा पासे (मुसं) मृषा (नेव) नहीं ज (वायावेज्जा) बोलावुं. (वयंते वि) मृषा बोलता एवा पण (अन्ने) बीजाओने (न समणुजाणामि) सारा नहीं जाणुं–अनुमोदना नहीं करुं. केवी रीते ? (जावज्जीवाए) जावजीव सुधी (तिविहं) त्रिविधने (तिविहेणं) त्रिविधे करीने एटले (मणेणं) मनवडे (वायाए), वचनवडे (काएणं) कायावडे (न करेमि) मृषावादने नहीं करुं, (न कारवेमि) नहीं करावुं. (करंतं पि अन्नं) मृषावाद करता–बोलता एवा पण बीजाने (न समणुजाणामि) नहीं अनुमोदना करुं. (तस्स) ते मृषावादसंबंधी पापने (भंते) हे भगवन् ! (पडिक्कमामि) हुं पडिक्कमुं छुं. (निंदामि) आत्मानी साक्षीए निंदुं छुं. (गरिहामि) गुरुनी समक्ष गर्हा करुं छुं. (अप्पाणं वोसिरामि) तेवा पापकारी मारा आत्माने वोसिरावुं छुं–विविध प्रकारे तजुं छुं.

सू०–से मुसावाए चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा–दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ । दव्वओ णं मुसावाए सव्वदव्वेसु, खित्तओ णं मुसावाए लोए वा अलोए वा, कालओ णं मुसावाए दिआ वा राओ वा, भावओ णं मुसावाए रागेण वा दोसेण वा ॥

(स मृषावादः चतुर्विधः प्रज्ञप्तः, तद्यथा–द्रव्यतः क्षेत्रतः कालतः भावतः। द्रव्यतः एं मृषावादः सर्वद्रव्येषु, क्षेत्रतः ण मृषावादः लोके वा अलोके वा, कालतः ए मृषावादः दिवा वा रात्रौ वा, भावतः ण मृषावाद. रागेण वा द्वेषेण वा)

(से) ते पूर्वे जणावेल (मुसावाए) मृषावाद (चउव्विहे) चार प्रकारे (पन्नत्ते) कह्यो छे (त जहा) ते आ प्रमाणे– (दव्वओ) द्रव्यथी–द्रव्यने आश्रीने (खित्तओ) क्षेत्रथी–क्षेत्रने आश्रीने (कालओ) काळथी–काळने आश्रीने अने (भावओ) भावथी–भावने आश्रीने, तेमा (दव्वओ ण) द्रव्यने आश्रीने (मुसावाए) मृषावाद (सव्वदव्वेसु) धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकायादिक सर्व द्रव्यने विषे–ते सबधी अन्यथा प्ररूपणा करवाथी थाय छे. (खित्तओ ण) क्षेत्रने आश्रीने (मुसावाए) मृषावाद (लोए वा) लोकने विषे अथवा (अलोए वा) अलोकने विषे बोलाय छे, (कालओ ण) काळने आश्रीने (मुसावाए) मृषावाद (दिया वा) दिवसने विषे अथवा (राओ वा) रात्रिने विषे बोलाय छे अने (भावओ ण) भावने आश्रीने (मुसावाए) मृषावाद (रागेण वा) माया अने लोभरूप रागवडे बोलाय छे एटले के पोते ग्लान नहीं छतां हु ग्लान छु, खप नहीं छतां मारे अमुक वस्तुनो खप छे, अथवा भिक्षाटन करवामां आळस आववाथी मारा पग दुःखे छे विगेरे मायावडे मृषावाद बोलाय छे तथा लोभथी एटले सारा अन्ननो लाभ थवाथी बीजा एषणीय अत प्रांत आहारने आ अनेषणीय छे एम कहेवाय छे अथवा (दोसेण वा) क्रोध अने मान स्वरूपवाळा द्वेषवडे मृषावाद बोलाय छे. एटले के क्रोधथी अन्यने ' तु दास छे ' एम कहे अने मानथी पोते बहुश्रुत नहीं छतां ' हु बहुश्रुत छु ' एम बोले. अहीं उपल-

घणाथी भयवडे तथा हास्य विगेरेवडे पण मृपावाद बोलाय छे एम जाणी लेवुं. ते आ प्रमाणे–कांइक अकार्य करीने पछी प्रायश्चित्तना भयने लीधे ' में कर्युं नथी ' एम बोले. ए ज रीते कोइनी हांसी करवा विगेरेमां पण असत्य बोले. अहीं द्रव्य अने भावथी चार भांगा थइ शके छे. ते आ प्रमाणे—कोइ द्रव्यथी मृपावाद बोले पण भावथी न बोले १, कोइ भावथी बोले पण द्रव्यथी न बोले २, कोइ भावथी अने द्रव्यथी बन्नेथी मृपावाद बोले ३, अने कोइ द्रव्यथी अने भावथी बन्नेथी मृपावाद न बोले ४. उदाहरण—कोइ हिंसक व्याधे कोइ पुरुपने वनमां पूछयुं के–" अहींथी मृगोने जतां तें जोया छे ? " ते सांभळी दयाना परिणामथी ते जोया छतां ' नथी जोया ' एम कहे. आ द्रव्यथी मृपावाद कहेवाय छे १. कोइ पुरुष असत्य बोलवाना परिणामवाळो छतां बोलती वखते सहसात्कारथी सत्य बोली गयो, पण तेने भावथी ते मृपावाद लाग्युं २. कोइ पुरुप हुं असत्य बोलीश एवो विचार करी बोलतां. वखते पण असत्य बोले, तेने द्रव्य अने भाव ए बन्नेथी मृपावाद लागे छे ३. चोथो भांगो शून्य ज छे केमके तेमां द्रव्यथी ने भावथी मृपावाद न बोलवानी वात छे.

सू०–जं मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठिअस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरणसोवन्निअस्स उवसमपभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खाविति-अस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअस्स निव्विआरस्स निव्वित्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइस्स संसारपारगामिअस्स नि-

ण्वाणगमणपजवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणं वा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुआए चउक्क-साओवगएण पचिंदिओवसट्टेणं पडुप्पन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयतेणं इहं वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु मुसावाओ भासिओ वा भासाविओ वा भासिज्जंतो वा परेहिं समणुन्नाओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएणं। अईअं निंदामि पडुप्पन्नं संवरेमि अणागय पच्चक्खामि सव्वं मुसावाय। जावज्जीवाए अणिस्सिओ हं नेव सय मुसं वएज्जा, नेवन्नेहिं मुसं वायावेज्जा, मुस वयते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा। तं जहा—अरिहतसक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं देवसक्खिअं अप्पसक्खिअं। एव भवइ भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयप-च्चक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा। एस खलु मुसावायस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूआण सव्वेसि जीवाण सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए

अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणोद्दवणयाए, महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणयाए त्ति कट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि । दोच्चे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ॥

(एतत्सूत्रसंस्कारः पूर्ववत्)

आ सर्व सूत्रनो अर्थ पूर्वनी जेम जाणवो. विशेष ए छे के प्राणातिपातने ठेकाणे मृषावाद शब्द कहेवो. आ व्रतनी आराधना जे न करे ते परभवे जिह्वाना छेदने पामे तथा अविश्वास्य अने मूंगो थाय. बीजा व्रतना भांगा ३६ आ प्रमाणे छे—क्रोध, लोभ, भय अने हास्यने त्रण योगे गुणवाथी बार थाय, तेने त्रण करणे गुणीए त्यारे छत्रीश थाय.

॥ इति द्वितीयं महाव्रतम् ॥

॥ अथ तृतीयं महाव्रतम् ॥

सू०—अहावरे तच्चे भंते महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमणं, सव्वं भंते अदिन्नादाणं पच्चक्खामि । से गामे वा नगरे वा अरन्ने वा अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्त-

मंत वा नेव सयं अदिन्नं गिह्णिज्जा, नेवन्नेहिं अदिन्नं गिह्णावेज्जा, अदिन्नं गिह्णंते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेणं वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अथापरस्मिन् तृतीये भदन्त महाव्रते अदत्तादानाद्विरमणं, सर्वं भदन्त अदत्तादानं प्रत्याख्यामि । अथ (तद्यथा)-ग्रामे वा नगरे वा अरण्ये वा अल्प वा बहु वा अणु वा स्थूल वा चित्तवद्वा अचित्तवद्वा नैव स्वयमदत्त गृह्णामि, नैवान्यैः अदत्त ग्राहयामि, अदत्त गृह्णतोऽपि अन्यान्न समनुजानामि, यावज्जीव त्रिविधं त्रिविधेन मनसा वाचा कायेन न करोमि, न कारयामि, कुर्वन्तमप्यन्य न समनुजानामि, तस्य भदन्त प्रतिक्रमामि निन्दामि गर्हामि आत्मानं व्युत्सृजामि)

(अह) हवे (भंते) हे भगवन् ! (अवरे) अन्य (तच्चे) त्रीजा (महव्वए) महाव्रतने विषे (अदिन्नादाणाओ) अदत्तादानथकी, (वेरमणं) सर्वथा विरमवु, एम भगवते कह्यु छे, तेथी (भंते) हे भगवन् ! (सव्वं) समग्र (अदिन्ना दाणं) अदत्तादानने (पच्चक्खामि) हु निषेधु छु (से) ते आ प्रमाणे—(गामे वा) गामने विषे अथवा (नगरे वा) नगरने विषे, अथवा (अरन्ने वा) अरण्यने विषे, (अप्प वा) मूल्यथी अल्प, अथवा (बहु वा) मूल्यथी बहु-बहु मूल्य-वाळी, अथवा (अणु वा) प्रमाणथी नानी वस्तु अथवा (थूल वा) प्रमाणथी मोटी वस्तु ते वळी (चित्तमत वा) सचित्त

होय, अथवा (अचित्तमंतं वा) अचित्त होय, तेवी (अदिन्नं) अदत्त वस्तुने (सयं) हुं पोते (नेव) नहीं ज (गिण्हिज्जा) ग्रहण करुं, (अन्नेहिं) बीजा पासे (आदिन्नं) अदत्त वस्तुने (नेव) नहीं ज (गिण्हावेज्जा) ग्रहण करावुं. (अदिन्नं) अदत्त वस्तुने (गिण्हंते वि) ग्रहण करता एवा पण (अन्ने) बीजाओने (न समणुजाणामि) सारा नहीं जाणुं-अनुमोदना नहीं करुं. केवी रीते ? (जावज्जीवाए) जावज्जीव सुधी (तिविहं) त्रिविधने (तिविहेणं) त्रिविधे करीने एटले (मणेणं) मनवडे, (वायाए) वचनवडे, (काएणं) कायावडे (न करेमि) अदत्तनुं ग्रहण नहीं करुं, (न कारवेमि) नहीं करावुं, (करंतं पि) करता एवा पण (अन्नं) बीजाने (समणुजाणामि) अनुमोदना नहीं करुं. (तस्स) ते अदत्तादान संबंधी पापने (भंते) हे भगवन् ! (पडिक्कमामि) हुं निषेध करुं छुं, (निंदामि) आत्मानी साक्षीए निंदुं छुं, (गरिहामि) गुरुनी समक्ष गर्हा करुं छुं, (अप्पाणं) तेवा पापकारी मारा आत्माने (वोसिरामि) वोसिरावुं छुं-विविध प्रकारे तजुं छुं.

सू०—से अदिन्नादाणे चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा-दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ। दव्वओ णं अदिन्नादाणे गहणधारणिज्जेसु दव्वेसु, खित्तओ णं अदिन्नादाणे गामे वा नगरे वा अरन्ने वा, कालओ णं अदिन्नादाणे दिआ वा राओ वा, भावओ णं अदिन्नादाणे रागेण वा दोसेण वा ॥

(तत् अदत्तादानं चतुर्विधं प्रज्ञप्तं तद्यथा-द्रव्यतः क्षेत्रतः कालतः भावतः। द्रव्यतः णं अदत्तादानं

ग्रहणधारणीयेषु द्रव्येषु, क्षेत्रतः णं अदत्तादान ग्रामे वा नगरे वा अरण्ये वा, कालतः णं अदत्तादानं दिवा वा रात्रौ वा, भावतः णं अदत्तादानं रागेण वा द्वेषेण वा)

(से) ते (अदिन्नादाणे) अदत्तादान (चउव्विहे) चार प्रकारे (पन्नत्ते) कह्युं छे (त जहा) ते आ प्रमाणे—(दव्वओ) द्रव्यथी, (खित्तओ) क्षेत्रथी, (कालओ) काळथी अने (भावओ) भावथी. तेमां (दव्वओ णं) द्रव्यने आश्रीने (अदिन्नादाणे) अदत्तादान (गहणधारणिज्जेसु) ग्रहण करी शकाय अने धारण करी शकाय एवा (दव्वेसु) द्रव्यो—पदार्थोने विषे थइ शके छे अर्थात् धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय विगेरे द्रव्यो ग्रहण के धारण करी शकाता नथी तेथी सर्व द्रव्यने विषे एम कह्युं नथी (खित्तओ णं) क्षेत्रने आश्रीने (अदिन्नादाणे) अदत्तादान (गामे वा) गामने विषे, अथवा (नगरे वा) नगरने विषे, अथवा (अरन्ने वा) अरण्यने विषे थइ शके छे. (कालओ णं) काळने आश्रीने (अदिन्नादाणे) अदत्तादान (दिआ वा) दिवसे अथवा (राओ वा) रात्रिए संभवे छे. (भावओ णं) भावने आश्रीने (अदिन्नादाणे) अदत्तादान (रागेण वा) माया अने लोभरूप रागथी अथवा (दोसेण वा) क्रोध अने मानरूप द्वेषथी थइ शके छे. तेमां धूर्त जनो मायावडे अदत्तने ग्रहण करे छे, लोभवडे वणिक अने चोर विगेरे ग्रहण करे छे, क्रोधवडे राजादिक ग्रहण करे छे अने मानवडे अभिमानी पुरुषो अदत्तनु ग्रहण करी शके छे तेमज लोभ विना अदत्तादान संभवतु नथी तेथी माया विगेरेमां पण लोभ तो रहेलो ज छे एम जाणवु अहीं द्रव्य तथा भावने आश्रीने चतुर्भंगी आ प्रमाणे थाय छे—कोइ द्रव्यथी अदत्त ग्रहण करे पण भावथी न करे. जेम रागद्वेषरहित कोइ साधु कोइपण प्रकारे अनुज्ञा लीधा विना तृणप्रमुखने ग्रहण करे, तेने

द्रव्यथी अदत्तादान लागे छे पण भावथी लागतुं नथी १. कोइ भावथी अदत्त ग्रहण करे पण द्रव्यथी न करे. जेम हुं पारकी वस्तु हरण करुं एवो अध्यवसाय छतां पण कोइ माणस ते वस्तु लइ शके नहीं, तेने भावथी अदत्तादान लागे छे पण द्रव्यथी लागतुं नथी २. कोइ द्रव्यथी अने भावथी बन्ने प्रकारे ग्रहण करे छे. जेम हुं परवस्तु ग्रहण करुं एवा अध्यवसायथी ते पर वस्तु ग्रहण करे तेवा मनुष्यने द्रव्य अने भाव बन्नेथी अदत्तादान लागे छे ३. कोइ द्रव्यथी तेमज भावथी पण ग्रहण न करे. आ चोथो भांगो शून्य छे. ४.

सू०—जं मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठिअस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसोवन्निअस्स उवसमपभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खावित्तिअस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअस्स निव्विआरस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेण वा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुआए चउक्कसाओवगएण पंचिंदिओवसट्टेणं पडुपन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु

अदिन्नादाणं गहिअ वा, गाहाविअ वा घेप्पंतं वा परेहिं समणुन्नाय, त निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेण मणेणं वायाए काएण, अईअ निंदामि, पडुप्पन्नं संवरेमि, अणागय पच्चक्खामि सव्वं अदिन्नादाणं जावज्जीवाए अणिस्सिओ ह, नेव सय अदिन्न गिण्हेज्जा, नेवन्नेहि अदिन्न गिण्हाविज्जा, अदिन्न गिण्हिते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा, तं जहा—अरिहंतसक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं देवसक्खिअं अप्पसक्खिअ । एव भवइ भिक्खू वा भिक्खुणि वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा । एस खलु अदिन्नादाणस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूआणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताण अदुक्खणयाए असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिण्णे परमरिसिदेसिए पसत्थे त दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्ति कट्टु उवसंपज्जित्ताण विहरामि । तच्चे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ॥

(एतत्सूत्रसंस्कारः पूर्ववत्)

आ सर्व सूत्रनो अर्थ पूर्वनी जेम जाणवो. विशेष ए के प्राणातिपातने बदले अदत्तादान कहेवुं. जे माणस आ व्रतनी आराधना न करे तेने वध, बंधन, दारिद्र्य, थापणनो नाश विगेरे दोषो (हानिओ) थाय छे. त्रीजा व्रतना भांगा ८१ आ प्रमाणे—गाम, नगर, अरण्य, अल्प, बहु, अणु, स्थूल, सचित्त, अचित्त ए नवपदने त्रण जोगे गुणवाथी २७ थाय तेने त्रण करणे गुणवाथी ८१ थाय छे. ॥ इति तृतीयं महाव्रतम् ।

॥ अथ चतुर्थं महाव्रतम् ॥

सू—अहावरे चउत्थे भंते महव्वए मेहुणाओ वेरमणं । सव्वं भंते मेहुणं पच्चक्खामि, से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्खजोणिअं वा नेव सयं मेहुणं सेविज्जा, नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा, मेहुणं सेवंते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि, न कारवेमि, करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अथापरस्मिन् चतुर्थे भदन्त महाव्रते मैथुनात् विरमणं, सर्वं भदन्त मैथुनं प्रत्याख्यामि । अथ (तद्यथा)- दिव्य वा मानुष वा तैर्यग्योनं वा नैव स्वय मैथुनं सेवे, नैवान्यैः मैथुनं सेवयामि, मैथुन सेवमानानपि अन्यान् न समनुजानामि, यावज्जीव त्रिविधं त्रिविधेन मनसा वचसा कायेन न करोमि, न कारयामि, कुर्वन्तमपि अन्य न समनुजानामि, तस्य भदन्त प्रतिक्रमामि निन्दामि गर्हामि आत्मान व्युत्सृजामि)

(अह) हवे (भंते) हे भगवन् !(अवरे)अन्य (चउत्थे) चोथा (महव्वए) महाव्रतने विषे (मेहुणाओ) मैथुन-थकी (वेरमण) सर्वथा विरमवु एम भगवते कह्यु छे, तेथी (भंते) हे भगवन् !(सव्व) समग्र (मेहुण) मैथुनने (पच्चक्खामि) हु निषेधु छु. (से) ते आ प्रमाणे—(दिव्व वा) देव सबधी, अथवा (माणुस वा) मनुष्य सबधी, अथवा (तिरिक्खजोणिअ वा) तिर्यंचयोनि सबधी (मेहुण) मैथुनने (सय) हु पोते (नेव) नहीं ज (सेविज्जा) सेवु, (अन्नेहिं) बीजा पासे (मेहुण) मैथुनने (नेव) नहीं ज (सेवाविज्जा) सेवरावु, (मेहुण) मैथुनने (सेवते वि) सेवता एवा पण (अन्ने) बीजाओने (न समणुजाणामि) अनुमोदना नहीं आपु केवी रीते ? (जावज्जीवाए) जावज्जीव सुधी (तिविह) त्रिविधने (तिविहेण) त्रिविध करीने एटले (मणेण) मनवडे (वायाए) वचनवडे, (काएण) कायावडे, (न करेमि) मैथुनने नहीं करु, (न कारवेमि) नहीं करावु, (करत पि अन्न) करता एवा पण बीजाने (न समणुजाणामि) अनुमोदना नहीं आपु. (तस्स) ते मैथुन सबधी पापने (भंते) हे भगवन् ! (पडिक्कमामि) हु निषेधु छु, (निंदामि) आत्मानी साक्षीए निंदु छु, (गरिहामि) गुरुनी समक्ष गर्हा करु छु अने (अप्पाण वोसिरामि) तेवा पापकारी मारा आत्माने वोसिरावु छु–तजु छु.

सू०—से मेहुणे चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा—दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ । दव्वओ णं मेहुणे रूवेसु वा रूवसहगएसु वा । खित्तओ णं मेहुणे उड्ढलोए अहोलोए वा तिरिअलोए वा । कालओ णं मेहुणे दिआ वा राओ वा । भावओ णं रागेण वा दोसेण वा ।

(तत् मैथुनं चतुर्विधं प्रज्ञप्तं, तद्यथा-द्रव्यतः क्षेत्रतः कालतः भावतः । द्रव्यतः णं मैथुनं रूपेषु वा रूपसहगतेषु वा । क्षेत्रतः णं मैथुनम् ऊर्ध्वलोके वा अधोलोके वा तिर्यग्लोके वा । कालतः णं मैथुनं दिवा वा रात्रौ वा । भावतः णं मैथुनं रागेण वा द्वेषेण वा)

(से) ते (मेहुणे) मैथुन (चउव्विहे) चार प्रकारे (पन्नत्ते) कह्युं छे. (तं जहा) ते आ प्रमाणे—(दव्वओ) द्रव्यथी, (खित्तओ) क्षेत्रथी, (कालओ) काळथी अने (भावओ) भावथी. तेमां (दव्वओ णं) द्रव्यने आश्रीने (मेहुणे) मैथुन (रूवेसु वा) चित्रामण आदिक निर्जीव रूपोने विषे अथवा (रूवसहगएसु वा) रूपनी साथे रहेला मनुष्यादिक सजीवने विषे संभवे छे. (खित्तओ णं) क्षेत्रने आश्रीने (मेहुणे) मैथुन (उड्ढलोए वा) ऊर्ध्वलोकमां एटले मेरुना वनखंडमां तथा सौधर्म विगेरे देवलोकमां अथवा (अहोलोए वा) अधोलोकमां एटले अधोग्राम—कुबडीविजय तथा भवनपतिना भवन विगेरेमां, अथवा (तिरिअलोए वा) द्वीप, समुद्र, पर्वत विगेरे तिर्च्छालोकमां संभवे छे. (कालओ णं) काळने आश्रीने (मेहुणे) मैथुन (दिआ वा राओ वा) दिवसे अथवा रात्रे संभवे छे. (भावओ णं) भावने आश्रीने (मेहुणे) मैथुन (रागेण वा)

माया अने लोभरूप रागवडे अथवा (दोसेण वा) क्रोध अने मानरूप द्वेषवडे सभवे छे.

अहीं पण द्रव्यथी अने भावथी मैथुननी चतुर्भंगी थइ शके छे. तेमां कोइ द्रव्यथी मैथुन सेवे अने भावथी न सेवे जेमके राग-द्वेषरहित कोइ स्त्रीने बळात्कारे कोइ पुरुष सेवे तो ते स्त्रीए द्रव्यथी मैथुन सेव्यु अने भावथी न सेव्यु. १ कोइ भावथी मैथुन सेवे पण द्रव्यथी न सेवे जेमके कोइने मैथुन सेववाना परिणाम थया पण तेनी प्राप्ति थइ नहीं तेने भावथी सेवन थयु अने द्रव्यथी न थयु, २. कोई भाव अने द्रव्य बन्नेथी मैथुन सेवे छे. ३. तथा कोइ द्रव्य अने भाव बन्नेथी सेवता नथी. आ चोथो भग शून्य छे

सू०—जं मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठिअस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवन्निअस्स उवसमपभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खावित्तिअस्स कुक्खीसबलस्स निरग्गिसरणस्स सपक्खालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअस्स निव्विआरस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेण वा पमाएण रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुआए

चउक्कसाओवगएणं पंचिंदिओवसट्टेणं पडुप्पन्नभारिआए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु मेहुणं सेविअं वा सेवाविअं वा सेविज्जंतं वा परेहिं समणुन्नायं तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं। अईअं निंदामि पडुप्पण्णं संवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं मेहुणं। जावज्जीवाए अणिस्सिओ हं नेव सयं मेहुणं सेविज्जा, नेवन्नेहिं मेहुणं सेवाविज्जा, मेहुणं सेवंते वि अन्ने न समणुजाणामि। तं जहा–अरिहंतसक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं देवसक्खिअं अप्पसक्खिअं। एवं भवइ भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा। एस खलु मेहुणस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूआणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणयाए त्ति कट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि।

चउत्थे भते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ॥

(एतत्सूत्रसंस्कारः पूर्ववत्)

आ सर्व सूत्रनो अर्थ पूर्वनी जेम जाणवो विशेष ए छे जे प्राणातिपातने ठेकाणे मैथुन कहेवु मैथुन सेवनारने आ भवमां तेमज परभवमां वध, बंधन, अपयश, नपुंसकत्व, वाझीयापणु अने विधवापणु वगेरे दोषो प्राप्त थाय छे. आ व्रतना २७ भांगा आ प्रमाणे—देव, मनुष्य अने तिर्यंचसबंधी मैथुन ए त्रण पदने त्रण जोगे गुणतां ९ थाय तेने त्रण करणे गुणवाथी २७ थाय छे.

॥ इति चतुर्थं महाव्रतम् ॥

॥ अथ पञ्चमं महाव्रतम् ॥

सू०—अहावरे पंचमे भते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं, सव्वं भंते परिग्गहं पच्चक्खामि, से अप्पं वा बहु वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंत वा अचित्तमतं वा, नेव सयं परिग्गह परिगिण्हेज्जा, नेवन्नेहिं परिग्गह परिगिण्हाविज्जा, परिग्गहं परिगिण्हंते वि अन्ने न समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि, करतं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥

अथापरस्मिन् पञ्चमे भदन्त महाव्रते परिग्रहाद्विरमणं, सर्वं भदन्त परिग्रहं प्रत्याख्यामि, अथ (तद्यथा) अल्पं वा बहुं वा अणु वा स्थूल वा चित्तवद्वा अचित्तवद्वा नैव स्वयं परिग्रहं परिगृह्णामि, नैवान्यैः परिग्रहं परिग्राहयामि, परिग्रहं परिगृह्णतोऽपि अन्यान्न समनुजानामि यावज्जीवं त्रिविधं त्रिविधेन मनसा वाचा कायेन न करोमि, न कारयामि, कुर्वन्तमपि अन्यं न समनुजानामि, तस्य भदन्त प्रतिक्रमामि निन्दामि गर्हामि आत्मानं व्युत्सृजामि)

(अह) हवे (भंते) हे भगवन् ! (अवरे) अन्य (पंचमे) पांचमा (महव्वए) महाव्रतने विषे (परिग्गहाओ) परिग्रहथकी (वेरमणं) सर्वथा विरमवुं एम भगवंते कह्युं छे, तेथी (भंते) हे भगवन् ! (सव्वं) समग्र (परिग्गहं) परिग्रहने (पच्चक्खामि) हुं निषेधुं छुं. (से) ते आ पमाणे—(अप्पं वा) मूल्यथी अल्प, अथवा (बहुं वा) मूल्यथी बहुमूल्यवाळा, अथवा (अणुं वा) प्रमाणथी नाना, अथवा (थूलं वा) प्रमाणथी मोटा, ते वळी (चित्तमंतं वा) सचित्त होय, अथवा (अचित्तमंतं वा) अचित्त होय, तेवा (परिग्गहं) धनधान्यादिक परिग्रहने (सयं) हुं पोते (नेव) नहीं ज (परिगिण्हेज्जा) ग्रहण करुं, (अन्नेहिं) बीजा पासे (परिग्गहं) परिग्रहने (नेव) नहीं ज (परिगिण्हाविज्जा) ग्रहण करावुं, (परिग्गहं) परिग्रहने (परिगिण्हंते वि) ग्रहण करता एवा पण (अन्ने) बीजाओने (न समणुजाणामि) अनुमोदना नहीं करुं. केवी रीते ? (जावज्जीवाए) जावज्जीव सुधी (तिविहं) त्रिविधने (तिविहेणं) त्रिविधे करीने, एटले (मणेणं) मनवडे, (वायाए) वचनवडे, (काएणं) कायावडे, (न करेमि) परिग्रहने ग्रहण नहीं करुं, (न कारवेमि) नहीं करावुं,

(करत पि) करता एवा पण (अन्ने) बीजाने (न समणुजाणामि) अनुमोदना नहीं करु. (तस्स) ते परिग्रह संबंधी पापने (भंते) हे भगवन् ! (पडिक्कमामि) हु निषेधु छु, (निंदामि) आत्मसाक्षीए निंदु छु, (गरिहामि) गुरुसमक्ष गर्हा करु छु अने (अप्पाणं) तेवा पापकारी मारा आत्माने (वोसिरामि) वोसरावु छु-विविध प्रकारे तजु छु.

सू०-से परिग्गहे चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा—दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ। दव्वओ णं परिग्गहे सचित्ताचित्तमीसेसु दव्वेसु, खित्तओ णं परिग्गहे लोए वा अलोए वा, कालओ णं परिग्गहे दिआ वा राओ वा, भावओ णं परिग्गहे अप्पग्घे वा महग्घे वा रागेण वा दोसेण वा ॥

(स परिग्रहः चतुर्विधः प्रज्ञप्तः, तद्यथा—द्रव्यतः क्षेत्रतः कालतः भावतः। द्रव्यत णं परिग्रहः सचित्ताचित्तमिश्रेषु द्रव्येषु, क्षेत्रतः ण परिग्रहः लोके वा अलोके वा, कालतः णं परिग्रहः दिवा वा रात्रौ वा, भावतः णं परिग्रहः अल्पार्घे वा महार्घे वा रागेण वा द्वेषेण वा)

(से) ते (परिग्गहे) परिग्रह (चउव्विहे) चार प्रकारनो (पन्नत्ते) कह्यो छे. (तं जहा) ते आ प्रमाणे-(दव्वओ) द्रव्यथी, (खित्तओ) क्षेत्रथी, (कालओ) कालथी अने (भावओ) भावथी तेमां (दव्वओ णं) द्रव्यथी (परिग्गहे) परिग्रह (सचित्ताचित्तमीसेसु) सचित्त, अचित्त अने मिश्र एवा (दव्वेसु) आकाशादिक धर्माधर्मादिक सर्व द्रव्योने विषे थइ शके छे. एटले के गाम, घर, आंगणुं विगेरे प्रदेशमां ममता करवाथी आकाशनो परिग्रह थाय छे, गति करवाना

प्रदेशमां ममता करवाथी धर्मास्तिकायनो परिग्रह थाय छे, कोइ पण स्थानमां बेसवुं, सूवुं विगेरे उपर ममता करवाथी अधर्मास्तिकाय द्रव्यनो परिग्रह थाय छे, माता, पिता, स्त्री विगेरे उपर ममता करवाथी जीवपरिग्रह थाय छे, हिरण्य-सुवर्णादिक उपर ममता करवाथी अजीव एटले पुद्गल द्रव्यनो परिग्रह थाय छे, तथा शीतकाळ, उष्णकाळ अने वर्षाकाळ अथवा छए ऋतुमांथी कोइ पण ऋतु उपर मूर्च्छा करवाथी काळद्रव्यनो परिग्रह थाय छे. (खित्तओ णं) क्षेत्रथी (परिग्गहे) परिग्रह (लोए वा) लोकने विषे अथवा (अलोए वा) अलोकने विषे थइ शके छे. (कालओ णं) काळथी (परिग्गहे) परिग्रह (दिआ वा) दिवसे अथवा (राओ वा) रात्रे थइ शके छे. (भावओ णं) भावथी (परिग्गहे) परिग्रह (अप्पग्घे वा) अल्प मूल्यवाळी वस्तु उपर अथवा (महग्घे) घणा मूल्यवाळी वस्तु उपर थइ शके छे, अथवा (रागेण वा) रागवडे अथवा (दोसेण वा) बीजा उपरना द्वेषवडे थइ शके छे. अहीं पण द्रव्य तथा भावने आश्री चतुर्भंगी थाय छे ते आ प्रमाणे—कोइ द्रव्यथी परिग्रह धारण करे छे पण भावथी नथी करता, जेमके रागद्वेषरहित कोइ साधु द्रव्यथी उपगरण धारण करे पण तेना पर मूर्च्छा नहीं होवाथी भावथी परिग्रहधारी नथी. १. कोइ भावथी परिग्रह धारण करे पण द्रव्यथी न करे, जेमके कोइने अमुक वस्तु पर मूर्च्छा छे पण तेने तेनी प्राप्ति न थाय तो तेने भावथी परिग्रह छे पण द्रव्यथी नथी. २. कोइने द्रव्यथी अने भावथी पण परिग्रह होय छे, जेमके कोइने कोइ वस्तुपर मूर्च्छा होय अने ते वस्तु तेने प्राप्त थाय तो तेने द्रव्यथी अने भावथी परिग्रह होय छे. ३. द्रव्यथी पण परिग्रह न होय अने भावथी पण परिग्रह न होय ए चोथो भंग शून्य छे.

सू०—जं मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठिअस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवन्निअस्स उवसमपभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खावित्तिअस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअस्स निव्विआरस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइस्स संसारपारगामिअस्स निव्वाणगमणपजवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं, अभिगमेण वा पमाएणं रागदोसपडिवद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुआए चउक्कसाओवगएणं पचिंदिओवसट्टेणं पडुप्पन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इह वा भवे अन्नेसु वा भवग्गहणेसु परिग्गहो गहिओ वा गाहाविओ वा घिप्पतो वा परेंहि समणुन्नाओ तं निंदामि गरिहामि तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण। अईअं निंदामि पडुप्पणं संवरेमि अणागय पच्चक्खामि सव्वं परिग्गहं। जावज्जीवाए अणिस्सिओ हं नेव सय परिग्गहं परिगिण्हेज्जा, नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगिण्हावेज्जा, परिग्गह परिगिण्हंते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा। त जहा–अरिहंतसक्खिअं सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअं देवसक्खिअं अप्पसक्खिअं। एव भवइ भिक्खू

वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा । एस खलु परिग्गहस्स वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूआणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोअणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरिआवणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणयाए त्ति कट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि । पंचमे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥

(एतत्सूत्रसंस्कारः पूर्ववत्)

आ सर्व सूत्रनो अर्थ प्रथमनी जेम जाणवो. मात्र प्राणातिपातने ठेकाणे परिग्रह शब्द कहेवो. परिग्रह धारण करनारने वध, बंधन, मारण, दुःखीपणुं अने नरकगति विगेरे दोषो प्राप्त थाय छे. पांचमा व्रतना ५४ भांगा आ प्रमाणे थाय छे— अल्प, बहु, अणु, स्थूल, सचित्त अने अचित्त ए छ पदने त्रण जोगे गुणतां १८ थाय, तेने त्रण करणे गुणवाथी ५४ थाय छे.

॥ इति पञ्चमं महाव्रतम् ॥

अथ षष्ठं व्रतम्।

सू०—अहावरे छट्ठे भंते वए राईभोअणाओ वेरमणं, सव्वं भंते राईभोअणं पच्चक्खामि, से असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, नेव सयं राइं भुंजेज्जा, नेवन्नेहिं राइं भुंजावेज्जा, राइं भुंजंते वि अन्ने न समणुजाणामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अथापरस्मिन् षष्ठे भदन्त व्रते रात्रिभोजनात् विरमण, सर्वं भदन्त रात्रिभोजनं प्रत्याख्यामि, अथ (तद्यथा)—अशनं वा पानं वा खाद्यं वा स्वाद्यं वा, नैव स्वयं रात्रौ भुञ्जे, नैवान्यै रात्रौ भोजयामि, रात्रौ भुञ्जानानपि अन्यान्न समनुजानामि, यावज्जीवं त्रिविधं त्रिविधेन मनसा वाचा कायेन न करोमि, न कारयामि, कुर्वन्तमपि अन्यं न समनुजानामि, तस्य भदन्त प्रतिक्रमामि निन्दामि गर्हामि आत्मानं व्युत्सृजामि)

(अह) हवे (भंते) हे भगवन् ! (अवरे) अन्य (छट्ठे) छट्ठा (वए) व्रतने विषे (राईभोअणाओ) रात्रिभोजन-थकी (वेरमणं) विरमुं छुं. ते रात्रिभोजन चार रीते—रात्रिए ग्रहण करी रात्रे ज खाय १, रात्रे ग्रहण करी दिवसे

खाय २, दिवसे ग्रहण करी रात्रे खाय ३ अने दिवसे ग्रहण करी दिवसे खाय ४.* आमांनो छेल्लो चोथो प्रकार शुद्ध छे. पहेलाना त्रण प्रकार रात्रिभोजनमां गणाय छे. आवी रीतना रात्रिभोजनथकी (वेरमणं) सर्वथा विरमवुं एम भगवंते कहुं छे, तेथी (भंते) हे भगवन् ! (सव्वं) सर्वथा (राईभोअणं) रात्रिभोजनने (पच्चक्खामि) हुं निषेधुं छुं. (से) ते आ प्रमाणे-(असणं वा) भात, दाळ विगेरे अशन अथवा (पाणं वा) पाणी विगेरे सर्व जातना पान अथवा (खाइमं वा) खजूर विगेरे खाद्य अथवा (साइमं वा) तांबूलादिक स्वाद्य पदार्थोनुं (सयं) हुं पोते (राइं) रात्रे (नेव) नहीं ज (भुंजेज्जा) भोजन करुं, (अन्नेहिं) बीजाने (राइं) रात्रे (नेव) नहीं ज (भुंजावेज्जा) भोजन कराववुं, (राइं) रात्रे (भुंजंते वि) जमता एवा पण (अन्ने) बीजाओने (न समणुजाणामि) अनुमोदना नहीं करुं. केवी रीते ? (जावज्जीवाए) जावज्जीव सुधी (तिविहं) त्रिविधने (तिविहेणं) त्रिविधे करीने एटले (मणेणं) मनवडे, (वायाए) वचनवडे, (काएणं) कायावडे (न करेमि) भोजन नहीं करुं, (न कारवेमि) बीजाने भोजन नहीं कराववुं, (करंतं पि) भोजन करता एवा पण (अन्नं) बीजाने (न समणुजाणामि) अनुमोदना नहीं करुं. (तस्स) ते रात्रिभोजन संबंधी पापने (भंते) हे भगवन् ! (पडिक्कमामि) हुं निषेधुं छुं, (निंदामि) आत्मसाक्षीए निंदु छुं, (गरिहामि) गुरु समक्ष गर्हा करुं छुं अने (अप्पाणं) तेवा पापकारी मारा आत्माने (वोसिरामि) विविध प्रकारे तजुं छुं.

सू०—से राईभोअणे चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा—दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ । दव्व-

* आमां मध्यमां रात्रि व्यतिक्रमावीने बीजे दिवसे खाय तो आ भांगो संभवे छे; परंतु ते दरेक पदार्थ माटे संभवतो नथी.

ओ णं राईभोअणे असणे वा पाणे वा खाइमे वा साइमे वा, खित्तओ णं राईभोअणे समयखित्ते,
कालओ णं राईभोअणे दिआ वा राओ वा, भावओ णं राईभोअणे तित्ते वा कडुए वा कसाए वा
अंबिले वा महुरे वा लवणे वा रागेण वा दोसेण वा ।

(तत् रात्रिभोजनं चतुर्विधं प्रज्ञप्तं, तद्यथा-द्रव्यतः क्षेत्रतः कालतः भावतः । द्रव्यतः णं रात्रिभो-
जनम् अशने वा पाने वा खाद्ये वा स्वाद्ये वा, क्षेत्रतः ण रात्रिभोजन समयक्षेत्रे, कालतः ण रात्रिभोजन
दिवा वा रात्रौ वा, भावतः ण रात्रिभोजनं तिक्ते वा कटुके वा कषाये वा अम्ले वा मधुरे वा लवणे वा
रागेण वा द्वेषेण वा)

(से) ते (राईभोअणे) रात्रिभोजन (चउव्विहे) चार प्रकारे (पन्नत्ते) कहेलु छे (त जहा) ते आ प्रमाणे—
(दव्वओ) द्रव्यथी, (खित्तओ) क्षेत्रथी, (कालओ) कालथी अने (भावओ) भावथी, तेमां (दव्वओ ण) द्रव्यथी (राई-
भोअणे) रात्रिभोजन (असणे वा) अशनने विषे अथवा (पाणे वा) पानने विषे अथवा (खाइमे वा) खाद्यने विषे
अथवा (साइमे वा) स्वाद्यने विषे संभवे छे. (खित्तओ ण) क्षेत्रथी (राईभोअणे) रात्रिभोजन (समयखित्ते) समय
क्षेत्र जे अढी द्वीप अने बे समुद्र तेने विषे संभवे छे (कालओ ण) काळथी (राईभोअणे) रात्रिभोजन (दिआ वा)
दिवसे अथवा (राओ वा) रात्रे थइ शके छे (भावओ ण) भावथी (राईभोअणे) रात्रिभोजन (तित्ते वा) लींबडो

विगेरे कडवा पदार्थने विषे, अथवा (कडुए वा) आदु विगेरे तीखा पदार्थने विषे, अथवा (कसाए वा) वाल विगेरे कषायला-तूरा पदार्थने विषे, अथवा (अंबिले वा) छाश विगेरे खाटा पदार्थने विषे, अथवा (महुरे वा) दूध विगेरे मधुर पदार्थने विषे, अथवा (लवणे वा) लवण विगेरे खारा पदार्थने विषे संभवे छे. ते पण (रागेण वा) रागवडे करीने अथवा (दोसेण वा) द्वेषवडे करीने संभवे छे. अहीं पण द्रव्य अने भाव आश्री चार भंग थइ शके छे, ते आ प्रमाणे—कोइ द्रव्यथी रात्रिभोजन करे पण भावथी न करे, जेमके राग-द्वेष विना कोइ माणस सूर्य नहीं उग्या छतां उग्यो मानीने अथवा सूर्य अस्त थया छतां अस्त थयो नथी एम मानीने रात्रिभोजन करे अथवा तो सबळ कारणने लइने रात्रिभोजन करे तेने द्रव्यथी रात्रिभोजननो दोष लागे छे, पण तेवा अध्यवसाय नहीं होवाथी भाव आश्री दोष लागतो नथी. १. कोइ भावथी रात्रिभोजन करे पण द्रव्यथी न करे, जेमके हुं रात्रिए जमीश ए प्रमाणे अध्यवसाय करे पण रात्रिए तेने भोजन मळे नहीं, तेने भावथी रात्रिभोजन थयुं पण द्रव्यथी न थयुं. २. कोइ द्रव्यथी अने भावथी पण रात्रिभोजन करे, जेमके कोइ रात्रे जमवानो विचार करी रात्रे ज जमे तेने द्रव्यथी अने भावथी रात्रिभोजननो दोष लागे छे. ३. कोइ द्रव्यथी अने भावथी पण रात्रिभोजन न करे, ए चोथो भंग शून्य छे.

सू०—जं मए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठिअस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरण्णसोवन्निअस्स उवसमपभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खा-

वित्तिअस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालिअस्स चत्तदोसस्स गुणग्गाहिअस्स निव्विआ-
रस्स निव्वित्तिलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसचयस्स अविसंवाईअस्स संसारपारगामिअस्स
निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणाभिगमेण अभिगमेण
वा पमाएण रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुआए चउक्कसा-
ओवगएण पंचिदिओवसट्टेणं पडुप्पन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयतेणं इहं वा भवे अन्नेसु वा
भवग्गहणेसु राईभोअण भुत्तं वा भुंजाविअ वा भुंजंत वा परेहिं समणुन्नायं त निंदामि गरिहामि
तिविह तिविहेणं मणेण वायाए काएणं । अईअ निंदामि पडुप्पण्णं संवरेमि अणागय पच्चक्खामि सव्वं
राईभोअण । जावज्जीवाए अणिस्सिओ हं नेव सय राईभोअणं भुंजेज्जा, नेवन्नेहिं राईभोअणं भुंजावेज्जा,
राईभोअणं भुजंते वि अन्ने न समणुजाणिज्जा । त जहा—अरिहतसक्खिअ सिद्धसक्खिअं साहुसक्खिअ
देवसक्खिअ अप्पसक्खिअं । एव भवइ भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे
दिआ वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा । एस खलु राईभोअणस्स

वेरमणे हिए सुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूआणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्ति कट्टु उपसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥ छट्ठे भंते वए उवट्ठिओमि सव्वाओ राईभोअणाओ वेरमणं ॥

(एतत्सूत्रसंस्कारः पूर्ववत्)

आ सर्व सूत्रनो अर्थ प्रथमनी जेम जाणवो. विशेष ए के प्राणातिपातने ठेकाणे रात्रिभोजन कहेवुं. आ व्रत पांच महाव्रतोनी साथे कह्युं तेनुं कारण ए छे के पहेला तीर्थंकरना तीर्थना साधुओ ऋजुजड होय छे अने चरम तीर्थंकरना तीर्थना साधु वक्रजड होय छे तेमने आ व्रत मूळगुणमां जाणवानुं छे; तथा मध्यम बावीश तीर्थंकरना तीर्थना साधुओ ऋजुप्राज्ञ होवाथी तेमनी अपेक्षाए उत्तरगुणमां जाणवानुं छे. रात्रिभोजन करनारने कीडी, पतंग विगेरेनी हिंसानो दोप लागे छे. आ छठा व्रतना भांगा ३६ आ रीते थाय छे—अशन, पान, खाद्य अने स्वाद्यने त्रण जोगे गुणतां बार थाय, तेने त्रण करणे गुणतां छत्रीश थाय. छ व्रतोना मळीने २७० भांगा थाय छे.

॥ इति षष्ठं व्रतम् ॥

हवे सर्व व्रतानो स्वीकार एक साथे कहे छे—

सु०—इच्चेइयाइं पंचमहव्वयाइं राईभोअणवेरमणछट्ठाइ अत्तहिअट्ठाए उवसंपज्जित्ताण विहरामि ॥

(इत्येतानि पञ्च महाव्रतानि रात्रिभोजनविरमणषष्ठानि आत्महितार्थाय उपसंपद्य विहरामि)

(इच्चेइयाइ) आ पूर्वे कहेलां (राईभोअणवेरमणछट्ठाइ) रात्रिभोजनविरमण छे छठ्ठु जेमां एवां (पंच महव्वयाइ) पांच महाव्रतोने (अत्तहिअट्ठाए) आत्माने हितकारक जे मोक्ष तेने अर्थे (उवसंपज्जित्ताण) अंगीकार करीने (विहरामि) हु विचरु छु एटले सुसाधुना विहारवडे वर्तु छु; कारण के विहारने अभावे अंगीकार करेला व्रतोनो पण अभावनो प्रसंग आवे छे–संभवे छे.

हवे अनुक्रमे महाव्रतोना अतिचारो बतावे छे.—

अप्पसत्था ये जे जोगा, परिणामा य दारुणा । पाणाइवायस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे ॥ १ ॥

(अप्रशस्ताश्च ये योगाः, परिणामाश्च दारुणाः । प्राणातिपातस्य विरमणे, एष उक्तः अतिक्रमः ॥ १ ॥)

(अप्पसत्था ये) हिंसाना हेतुरूप होवाथी अप्रशस्त एवा (जे) जे (जोगा) यतना विना चालवु–बोलवु विगेरे योगो–व्यापारो छे, तथा (दारुणा) भयकर एवा (परिणामा य) जे प्राणीनो घात करवाना अध्यवसायो छे, (एस) ते

आ (पाणाइवायस्स) प्राणातिपातना (वेरमणे) विरमणने विषे (अइक्कमे) अतिक्रम-अतिचार (वुत्ते) भगवंते कह्या छे. आ प्रमाणे जाणीने तेवा योग अने अध्यवसायनो त्याग करवो. १

हवे बीजा व्रतने आश्री कहे छे—

तिव्वरागा य जा भासा, तिव्वदोसा तहेव य । मुसावायस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे ॥ २ ॥

(तीव्ररागा च या भाषा, तीव्रद्वेषा तथैव च । मृषावादस्य विरमणे, एष उक्तः अतिक्रमः ॥ २ ॥)

(तिव्वरागा य) तीव्र रागवाळी (तहेव य) तेम ज (तिव्वदोसा) तीव्र द्वेषवाळी (जा) जे (भासा) भाषा बोलवामां आवे, (एस) ते आ (मुसावायस्स) मृषावादनी (वेरमणे) विरतिने विषे (अइक्कमे) अतिक्रम-देशथी भंग अथवा सर्वथी भंग (वुत्ते) जिनेश्वरोए कह्यो छे, एम धारी तेनो त्याग करवो. २

हवे त्रीजा व्रतने आश्री कहे छे.—

उग्गहं च अजाइत्ता, अविदिण्णे य उग्गहे । अदिण्णादाणस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे ॥३॥

(अवग्रहं च अयाचित्वा, अविदत्ते च अवग्रहे । अदत्तादानस्य विरमणे, एष उक्तः अतिक्रमः ॥ ३ ॥)

(उग्गहं च) अवग्रहने-उपाश्रयने (अजाइत्ता) याचना कर्या विना-स्वामीनी आज्ञा लीधा विना तेमां जे रहेवुं, तथा (अविदिण्णे य) अवग्रहना स्वामीए नहीं आपेला (उग्गहे) अवग्रहने विषे एटले अवग्रहनी मर्यादामां जे कांइ चेष्टा

करवी. (एस) ते आ (अदिण्णादाणस्स) अदत्तादाननी (वेरमणे) विरतिने विषे (अइक्कमे) अतिक्रम—अतिचार (वुत्ते) कह्यो छे २

हवे चोथा व्रतने आश्री कहे छे —

सद्दारूवारसागंधा—फासाणं पवियारणे । मेहुणस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे ॥ ४ ॥

(शब्दरूपरसगन्धस्पर्शानां प्रविचारणा । मैथुनस्य विरमणे, एष उक्तः अतिक्रम ॥ ४ ॥)

(सद्दा) वेणु, वीणा, स्त्रीना गीत विगेरे शब्दो, (रूवा) स्त्री आदिकनां मनोहर रूपो, (रसा) मधुरादिक रसो, (गंधा) पुष्पनी माळा, चंदन विगेरे गंधो तथा (फासाण) कोमळ तळाइ, स्त्री आदिकना कोमळ स्पर्शो ए पांचे विषयोनी जे (पवियारणे) रागथी सेवा (एस) ते आ (मेहुणस्स) मैथुननी (वेरमणे) विरतिने विषे (अइक्कमे) अतिक्रम—अतिचार (वुत्ते) कह्यो छे. ४

हवे पांचमा परिग्रहव्रतने आश्री कहे छे —

इच्छा मुच्छा य गेही य, कखा लोभे य दारुणे । परिग्गहस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे ॥ ५ ॥

(इच्छा मूर्छा च गृद्धिश्च, काङ्क्षा लोभश्च दारुणः । परिग्रहस्य विरमणे, एष उक्तः अतिक्रमः ॥ ५ ॥)

(इच्छा) नहीं प्राप्त थयेला कोइ पण पदार्थनी प्रार्थना, तथा (मुच्छा य) नाश पामेला पदार्थनी मूर्च्छा—शोक करवो

ते, तथा (गेही य) विद्यमान पदार्थ उपर आसक्ति, तथा (कंखा) नहीं प्राप्त थयेला विविध पदार्थनी आकांक्षारूप जे (दारुणे) तीव्र (लोभे य) लोभ (एस) ते आ (परिग्गहस्स) परिग्रहनी (वेरमणे) विरतिने विषे (अइक्कमे) अतिक्रम (वुत्ते) तीर्थंकरोए कहेलो छे, तेथी तेनो त्याग करवो. ५

हवे छट्ठा व्रतने आश्री कहे छे.—

अइमत्ते य आहारे, सूरखित्तम्मि संकिए । राईभोयणस्स वेरमणे, एस वुत्ते अइक्कमे ॥ ६ ॥

(अतिमात्रश्च आहारः, सूरक्षेत्रे शङ्किते । रात्रिभोजनस्य विरमणे, एष उक्तः अतिक्रमः ॥ ६ ॥)

(अइमत्ते य) प्रमाणथी अधिक एटले जे आहारनो रात्रे ओडकार आवे एवो जे (आहार) आहार कर्यो होय, तथा (सूरखित्तम्मि) सूर्यनुं क्षेत्र—उदय अने अस्तवाळुं आकाशक्षेत्र जे ते (संकिए) सूर्य उग्यो छे के नहीं ? अथवा सूर्य अस्त पाम्यो छे के नहीं ? ए प्रमाणे शंकित एटले शंकावाळुं थये सते जे आहार करवो (एस) ते आ (राईभोयणस्स) रात्रिभोजननी (वेरमणे) विरतिने विषे (अइक्कमे) अतिचार (वुत्ते) कह्यो छे माटे तेवो आहार वर्जवो. ६

आ प्रमाणे महाव्रतोना अतिचार कह्या, हवे ते ज व्रतो जे प्रकारे अतिचाररहित पाळेलां थाय ते कहे छे.—

दंसणनाणचरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे । पढमं वयमणुरक्खे, विरयामो पाणाइवायाओ ।१।

(दर्शनज्ञानचरित्राणि, अविराध्य स्थितः श्रमणधर्मे । प्रथमं व्रतमनुरक्षामि, विरतोऽस्मि प्राणातिपातात् १)

(दंसणनाणचरित्ते) समकितदर्शन, मतिज्ञानादिक ज्ञान अने सामायिकादिक चारित्रने (अविराहित्ता) नहीं विराधीने एटले परिपालन करीने (समणधम्मे) साधुना धर्मने विषे (ठिओ) रह्यो एवो हु ते (पढम) पहेला (वयं) व्रतनु (अणुरक्खे) रक्षण करु छु एटले अतिचाररहित पालन करुं छु. (पाणाइवायाओ) प्राणातिपात—जीवहिंसाथकी (विरयामो) हु विरम्यो छु. १.

दंसणनाणचरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे । बीयं वयमणुरक्खे, विरयामो मुसावायाओ ।२।
दंसणनाणचरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे । तइय वयमणुरक्खे, विरयामो अदिन्नादाणाओ ।३।
दंसणनाणचरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे । चउत्थ वयमणुरक्खे, विरयामो मेहुणाओ ।४।
दंसणनाणचरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे । पचम वयमणुरक्खे, विरयामो परिग्गहाओ ।५।
दंसणनाणचरित्ते, अविराहित्ता ठिओ समणधम्मे । छठ वयमणुरक्खे, विरयामो राईभोयणाओ ।६।

(अस्य गाथापञ्चकस्य संस्कारः पूर्ववत्)

आ पाचे गाथानो अर्थ पहेली गाथा प्रमाणे जाणवो विशेष ए के पहेला व्रतने ठेकाणे अनुक्रमे बीजु, त्रीजु, चोथु, पांचमु अने छठु व्रत कहेवु, तथा प्राणातिपातने ठेकाणे अनुक्रमे मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह अने रात्रिभोजनथी विरमवानु कहेवु. २–३–४–५–६

हवे बीजी रीते पण महाव्रतोनुं रक्षण कहे छे.—

आलयविहारसमिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे। पढमं वयमणुरक्खे, विरयामो पाणाइवायाओ ।१।

(आलयविहारसमितो, युक्तो गुप्तः स्थितः श्रमणधर्मे। प्रथमं व्रतमनुरक्षामि, विरतोऽस्मि प्राणातिपातात् १)

(आलय) समग्र दोष रहित उपाश्रयने सेवनारो, (विहार) शास्त्रमां कह्या प्रमाणे विहार करतो. (समिओ) ईर्या आदिक पांच समितिए सहित, (जुत्तो) युक्त एटले अचेलपणुं, अस्नान, पृथ्वीपर शयन करवुं, दातण न करवुं, मस्तक-दाढी-मूछ मुंडाववा नहीं, भिक्षा मागवी तथा क्षुधा, पिपासा, शीत, आतप विगेरे परीसहो सहन करवा अने गुरुकुळमां वसवुं ए विगेरे साधुना गुणोथी युक्त-सहित, (गुत्तो) त्रण गुप्तिए गुप्त-सहित तथा (समणधम्मे) क्षांति आदिक साधुना दशप्रकारना धर्ममां (ठिओ) रह्यो एवो हुं (पढमं) पहेला (वयं) व्रतनुं (अणुरक्खे) रक्षण करुं छुं—(पाणाइवायाओ) प्राणातिपातथकी (विरयामो) हुं विरम्यो छुं. १.

आलयविहारसमिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे। बीयं वयमणुरक्खे, विरयामो मुसावायाओ ।२।

आलयविहारसमिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे। तइयं वयमणुरक्खे, विरयामो अदिन्नादाणाओ ।३।

आलयविहारसमिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे। चउत्थं वयमणुरक्खे, विरयामो परिग्गहाओ ।४।

आलयविहारसमिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे। पंचमं वयमणुरक्खे, विरयामो परिग्गहाओ ।५।

आलयविहारसमिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे । छट्ठं वयमणुरक्खे, विरयामो राईभोयणाओ ।६।

(अस्य गाथापञ्चकस्य संस्कारः पूर्ववत्)

आ पांचे गाथानो अर्थ पहेली गाथानी जेम जाणवो विशेष ए के पहेला व्रतने ठेकाणे अनुक्रमे बीजु, त्रीजु, चोथु, पांचमु अने छट्ठुं व्रत कहेवु, तथा प्राणातिपातने ठेकाणे मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह अने रात्रिभोजनथी विरमवानु कहेवु २-३-४-५-६.

हवे पांचे महाव्रतो माटे भेळु कहे छे—

आलयविहारसमिओ, जुत्तो गुत्तो ठिओ समणधम्मे । तिविहेण अप्पमत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥७॥

(आलयविहारसमितो, युक्तो गुप्तः स्थितः श्रमणधर्मे । त्रिविधेन अप्रमत्तो, रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥७॥)

(आलय) समग्र दोषरहित उपाश्रयने सेवनार, (विहार) शास्त्रमां कह्या प्रमाणे विहार करनार, (समिओ) पांच समितिसहित, (जुत्तो) अचेलपणु आदिक गुणोवडे युक्त, (गुत्तो) त्रण गुप्तिए गुप्त तथा (समणधम्मे) साधुना धर्मने विषे (ठिओ) रह्यो एवो हु (तिविहेण) मन, वचन अने कायारूप त्रण प्रकारना करणे करीने (अप्पमत्तो) प्रमाद-रहित-सावधानपणे रह्यो थको (पंच) पांचे (महव्वए) महाव्रतोनु (रक्खामि) पालन करु छु. ७.

हवे एकथी आरभीने अनुक्रमे एक एकनी वृद्धि करता दश अशुभ स्थानकोनु वर्जवु अने दश शुभ स्थानो अगीकार करवा ए द्वारवडे करीने महाव्रतोना रक्षणने ज कहे छे—

सावज्जजोगमेगं, मिच्छत्तं एगमेव अन्नाणं । परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ १ ॥

(सावद्ययोगमेकं, मिथ्यात्वमेकमेवं अज्ञानम् । परिवर्जयन् गुप्तो, रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥ १ ॥)

(सावज्जजोगमेगं) एक एवा सावद्य योगने–पापव्यापारने, तथा (मिच्छत्तं एगं) एक एवा मिथ्यात्वने–देव, गुरु, धर्मसंबंधी मनना विपरीत अध्यवसायने, तथा (एव अन्नाणं) ए ज प्रमाणे एटले एक एवा अज्ञानने एटले विपरीत ज्ञानने (परिवज्जंतो) वर्जतो एवो अने (गुत्तो) त्रण गुप्तिए गुप्त एवो हुं (पंच) पांच (महव्वए) महाव्रतोनुं (रक्खामि) रक्षण करुं छुं. १.

अणवज्जजोगमेगं, सम्मत्तं एगमेव नाणं तु । उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ २ ॥

(अनवद्ययोगमेकं, सम्यक्त्वमेकमेवं ज्ञानं तु । उपसंपन्नो युक्तो, रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥ २ ॥)

(अणवज्जजोगमेगं) एक एवा अनवद्य योगने एटले पापरहित व्यापारने, तथा (सम्मत्तं एगं) एक एवा समकितने, तथा (एव नाणं तु) ए ज प्रमाणे एक एवा ज्ञानने पण (उवसंपन्नो) प्राप्त थयेलो अने (जुत्तो) साधुना गुणोवडे युक्त एवो हुं (रक्खामि महव्वए पंच) पांच महाव्रतोनुं रक्षण करुं छुं. २.

दो चेव रागदोसे, दुन्नि अ झाणाइं अट्टरुद्दाइं । परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ ३ ॥

(द्वावेव रागद्वेषौ, द्वे च ध्याने आर्त्तरौद्रे । परिवर्जयन् गुप्तो, रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥ ३ ॥)

(दो चेव) बे एवा ज (रागदोसे) राग अने द्वेषने, तथा (दुन्नि अ) बे एवा (अट्टरुद्दाइं) आर्त अने रौद्र नामना (झाणाइ) ध्यानोने (परिवज्जतो) वर्जतो एवो अने (गुत्तो) त्रण गुप्तिए गुप्त एवो हु (रक्खामि महव्वए पच) पांच महाव्रतोनु रक्षण करु छु ३

दुविह चरित्तधम्मं, दुन्नि अ झाणाइ धम्मसुक्काइ । उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥४॥

(द्विविध चारित्रधर्मं, द्वे च ध्याने धर्मशुक्ले । उपसंपन्नो युक्तो, रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥ ४ ॥)

(दुविह) बे प्रकारना एटले देश अने सर्व एवा बे भेदना (चरित्तधम्म) चारित्रधर्मने, (दुन्नि अ) तथा बे प्रकारना (धम्मसुक्काइ) धर्म अने शुक्ल नामना (झाणाइ) ध्यानोने (उवसपन्नो) पामेलो अने (जुत्तो) साधुगुणे युक्त एवो हु (रक्खामि महव्वए पच) पांच महाव्रतोनु रक्षण करु छु ४.

किण्हा नीला काऊ, तिण्णि अ लेसाउ अप्पसत्थाओ । परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥५॥

(कृष्णा नीला कापोती, तिस्रश्च लेश्या अप्रशस्ताः । परिवर्जयन् गुप्तो, रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥५॥)

(किण्हा) कृष्णलेश्या, (नीला) नीललेश्या, (काऊ) कापोतलेश्या (तिण्णि अ) ए त्रण (अप्पसत्थाओ) अप्रशस्त एटले क्लिष्ट कर्मना बंधनी हेतुरूप होवाथी असुंदर एवी (लेसाउ) लेश्याओने (परिवज्जतो) वर्जतो अने (गुत्तो) त्रण गुप्तिवडे गुप्त एवो हु (रक्खामि महव्वए पच) पांच महाव्रतोनु रक्षण करुं छु. ५.

तेऊ पम्हा सुक्का, तिन्नि अ लेसाउ सुप्पसत्थाओ। उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ ६ ॥

(तैजसीं पद्मां शुक्लां, तिस्रश्च लेश्याः सुप्रशस्ताः । उपसंपन्नो युक्तो, रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥ ६ ॥)

(तेऊ) तेजोलेश्या, (पम्हा) पद्मलेश्या अने (सुक्का) शुक्ललेश्या (तिन्नि अ) ए त्रण (सुप्पसत्थाओ) सुप्रशस्त एटले शुभ कर्मना बंधनी हेतुरूप होवाथी सुंदर एवी (लेसाउ) लेश्याओने (उवसंपन्नो) पामेलो अने (जुत्तो) साधुगुणे युक्त एवो (रक्खामि महव्वए पंच) पांच महाव्रतोनुं रक्षण करुं छुं. ६.

मणसा मणसच्चविऊ, वायासच्चेण करणसच्चेण । तिविहेण वि सच्चविऊ, रक्खामि महव्वए पंच ॥७॥

(मनसा मनःसत्यविद्वान्, वाक्सत्येन करणसत्येन । त्रिविधेनापि सत्यविद्वान्, रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥७॥)

(मणसच्चविऊ) मननुं सत्य एटले अकुशळ मननो निरोध अने कुशळ मननी प्रवृत्ति, ते रूप मनसंयमने जाणनार एवो हुं (मणसा) शुभ स्वभावरूप चित्तवडे करीने १, तथा (वायासच्चेण) वाणी सत्य एटले कुशळ (सत्य) वचन बोलवुं अने अकुशळ (असत्य) वचन न बोलवुं ते रूप वाणीना संयमवडे करीने २, तथा (करणसच्चेण) क्रियासत्य एटले कार्य सते उपयोगथी गमन–आगमन करवुं अने कार्य न होय त्यारे हाथ–पग विगेरे अवयवोने हलाववा नहीं एवा कायसंयमवडे करीने ३ (रक्खामि महव्वए पंच) हुं पांच महाव्रतोनुं रक्षण करुं छुं. आ त्रण भांगा होवाथी द्विक (बे) संयोगीया बीजा त्रण भांगा पण सूचन कर्या छे एम जाणवुं. ते आ प्रमाणे—मनोवाक्सत्ये करीने एटले मन अने वाणीना

सयमवडे करीने १, तथा मनःकायसत्ये करीने एटले मन अने कायाना सयमवडे करीने २, तथा वाक्कायसत्ये करीने एटले वाणी अने कायाना सयमवडे करीने ३ हु पाच महाव्रतोनु रक्षण करु छु. तथा (तिविहेण वि) मन, वचन अने कायारूप त्रण प्रकारना करणे करीने पण (सच्चविऊ) सत्यने–सयमने जाणनार एटले शुद्ध संयमनु पालन करनार एवो हु पच महाव्रतोनु रक्षण करु छु. आ त्रिक सयोगीयो एक भांगो थयो, तेथी ते सर्व मळी सात प्रकारना सयमे करीने हु पच महाव्रतोनु रक्षण करु छु, एम जाणवु.

चत्तारि दुहसिज्जा, चउरो सन्ना तहा कसाया य । परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥ ८ ॥

(चतस्रो दुःखशय्याः, चतस्रः सज्ञाः तथा कषायाश्च। परिवर्जयन् गुप्तो, रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥ ८ ॥)

(चत्तारि) चार (दुहसिज्जा) दुःख आपनारी शय्याने, तथा (चउरो) चार (सन्ना) सज्ञाने, (तहा) तथा (कसाया य) चार कषायने (परिवज्जतो) वर्जतो एवो अने (गुत्तो) त्रण गुप्तिए गुप्त एवो हु (रक्खामि महव्वए पच) पांच महाव्रतोनु रक्षण करु छु अहीं चार दुःखशय्या कही ते आ प्रमाणे–जिनेश्वरना मतनी सद्दहणा न करवी ते १, कामभोगनी वांछा करवी ते २, परना लाभनी वांछा करवी एटले बीजा कोइने जे काइ लाभ थयो होय तेवो लाभ पोताने थवानु वाछे ते ३ अने स्नाननी वाछा एटले हाथ, पग के मुख धोवु अथवा आखे शरीरे स्नान करवु तेनी इच्छा करवी ते ४. चार सज्ञा आ प्रमाणे—आहारसज्ञा १, भयसज्ञा २, मैथुनसज्ञा ३ अने परिग्रहसज्ञा ४. चार कषाय—चार चार प्रकारना क्रोध, मान, माया अने लोभ. ८.

चत्तारि य सुहसिज्जा, चउव्विहं संवरं समाहिं च । उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ ९ ॥

(चतस्रो सुखशय्याः, चतुर्विधं संवरं समाधिं च । उपसंपन्नो युक्तो, रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥ ९ ॥)

(चत्तारि य) चार (सुहसिज्जा) सुख आपनारी शय्याने, तथा (चउव्विहं) चार प्रकारना (संवरं) संवरने, तथा (समाहिं च) चार प्रकारनी समाधिने (उवसंपन्नो) पामेलो अने (जुत्तो) साधुगुणे युक्त एवो हुं (रक्खामि महव्वए पंच) पांच महाव्रतोनुं रक्षण करुं छुं. अहीं चार सुखशय्या आ प्रमाणे छे.–जिनेश्वरना मतनी सद्दहणा करवी ते १, कामभोगनी वांछा न करवी ते २, स्वलाभ संतोष एटले पोताने जे कांइ मळे तेनाथी संतोष राखवो ते ३ अने अस्नाननी वांछा एटले हाथ, पग के मुख धोवानी अथवा शरीरे स्नान करवानी इच्छा न करवी ते. ४. चार संवर आ प्रमाणे–मनसंवर एटले अकुशळमां (पापकार्यमां) प्रवर्तता मननो निरोध करवो अने कुशळमां (पुण्यकार्यमां) प्रवर्ताववुं ए मनसंवर १, ए ज रीते वचनसंवर २ अने कायसंवर ३ जाणवा, तथा उपकरणसंवर एटले महामूल्यवाळा वस्त्रनो अने सुवर्णादिकनो त्याग करवो अथवा वस्त्रपंचक, पुस्तकपंचक, तृणपंचक अने चर्मपंचकनो त्याग करवो ते ४. तथा चार समाधि आ प्रमाणे–ज्ञानसमाधि १, दर्शनसमाधि २, चारित्रसमाधि ३ अने तपसमाधि ४. ९.

पंचेव य कामगुणे, पंचेव य अण्हवे महादोसे । परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ १० ॥

(पञ्चैव च कामगुणान्, पञ्चैव च आश्रवान् महादोषान् । परिवर्जयन् गुप्तो, रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥१०॥)

(पचेव य) शब्द, रूप, रस, गध अने स्पर्श ए पांच (कामगुणे) कामभोगोने, तथा (पचेव य) प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन अने परिग्रह ए पांच (महादोसे) महादोषने करनारा (अण्हवे) आश्रवोने (परिवज्जतो) वर्जतो एवो अने (गुत्तो) त्रण गुप्तिए गुप्त एवो हु (रक्खामि महव्वए पच) पांच महाव्रतोनु रक्षण करु छु. १०.

पंचिंदियसवरणं, तहेव पचविहमेव सज्झायं । उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ ११ ॥

(पञ्चेन्द्रियसवरण, तथैव पञ्चविधमेव स्वाध्यायम् । उपसंपन्नो युक्तो, रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥ ११ ॥)

(पचिंदियसवरण) श्रोत्रादिक पांच इंद्रियोना सवरने एटले इष्टवस्तुपर रागथी अने अनिष्ट वस्तुपर द्वेषथी प्रवर्तती इंद्रियोने रुधवा माटे ते सवरने (तहेव) तेम ज (पचविहमेव) वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा अने धर्मकथा ए पांच रना (सज्झाय) स्वाध्यायने (उवसपन्नो) पामेलो अने (जुत्तो) साधुगुणे युक्त एवो हु (रक्खामि महव्वए पच) पंच महाव्रतोनु रक्षण करु छु. अहीं वाचना एटले भणवु ते १, भण्या पछी शका उत्पन्न थाय त्यारे गुरुने पूछवु ते पृच्छना २, पूछीने शकारहित थया छतां पछीथी भूली न जवाय तेने माटे फरी फरी सूत्र गणवु ते परिवर्तना ३, सूत्रनी जेम अर्थ पण भूली न जवाय तेने माटे अर्थनु वारवार चिंतवन करवु ते अनुप्रेक्षा ४ तथा आ प्रमाणे श्रुत भण्या पछी श्रुतधर्मनी कथा एटले व्याख्या करवी ते धर्मकथा ५ आ पांच प्रकारनो स्वाध्याय कहेवाय छे. ११.

छज्जीवनिकायवहं, छप्पि य भासाउ अप्पसत्थाउ । परिवज्जतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पच ॥१२॥

(षड्जीवनिकायवधं, षडपि च भाषा अप्रशस्ताः । परिवर्जयन् गुप्तो, रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥ १२ ॥)

(छज्जीवनिकायवहं) पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय, वनस्पतिकाय अने त्रसकाय ए छ प्रकारनी जीवनिकायना वधने, तथा (छप्पि य) छ प्रकारनी (अप्पसत्थाउ) अप्रशस्त एटले भारे कर्मना बंधनी हेतुभूत होवाथी असुंदर एवी (भासाउ) भाषाओने (परिवज्जंतो) वर्जतो एवो अने (गुत्तो) त्रण गुप्तिए गुप्त एवो हुं (रक्खामि महव्वए पंच) पंच महाव्रतोनुं रक्षण करुं छुं. अहीं छ प्रकारनी अप्रशस्तभाषा आ प्रमाणे छे–अलीक वचन १, हीलित वचन २, खिंसित वचन ३, परुष वचन ४, गार्हस्थ्य वचन ५ अने व्यवशमिताधिकरणोदीरण (कलह उदीरण) वचन ६. तेमां कोइने दिवसे प्रचला निद्रा आवती होय तेने कोइ पूछे के–" तने दिवसे केम प्रचला निद्रा आवे छे ? " तेना उत्तरमां ते कहे के–" ना, मने प्रचला निद्रा आवती नथी. " आ अलीक वचन कहेवाय छे. १. सामान्य साधुने हे गणि ! हे वाचक ! एम ईर्ष्याथी जे कहेवुं ते हीलित वचन कहेवाय छे. २. कोइना हलकी जातिना जन्म अने कर्म विगेरे उघाडां करवां ते खिंसित वचन कहेवाय छे. ३. हे दुष्ट शिष्य ! एवुं जे कठोर वचन कहेवुं ते परुषवचन कहेवाय छे. ४. हे पुत्र ! हे माणेज ! ए रीते गृहस्थीना संबंधथी बोलाववुं ते गार्हस्थ्य वचन कहेवाय छे ५ तथा शांत थयेला अधिकरण–कलहनी उदीरणानुं वचन बोलवुं ते व्यवशमिताधिकरणोदीरण वचन एटले कलह उदीरण वचन कहेवाय छे. ६. १२.

छव्विहमब्भिंतरयं, बज्झं पि य छव्विहं तवोकम्मं । उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥१३॥

(षड्विधमभ्यन्तरकं बाह्यमपि च षड्विधं तपःकर्म । उपसंपन्नो युक्तो, रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥ १३ ॥)

(अब्भिंतर) छ प्रकारना (अभ्मितरय) अभ्यंतर, (बज्झं वि य) तथा बाह्य पण (छव्विह) छ प्रकारना (तवोकम्म) तपकर्मने (उवसंपन्नो) पामेलो तथा (जुत्तो) साधुगुणे युक्त एवो हुं (रक्खामि महव्वए पंच) पंच महाव्रतोनुं रक्षण करुं छुं. अहीं अभ्यंतर तपना छ प्रकार आ प्रमाणे छे—प्रायश्चित्त १, विनय २, वैयावृत्त्य ३, स्वाध्याय ४, ध्यान ५ अने उत्सर्ग ६ छ प्रकारनो बाह्य तप आ प्रमाणे-अनशन १, ऊनोदरी २, वृत्तिसंक्षेप ३, रसत्याग ४, कायक्लेश ५ अने संलीनता ६. १२.

सत्त य भयठाणाइं, सत्तविहं चेव नाणविब्भंगं । परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ १४ ॥

(सप्त च भयस्थानानि, सप्तविधं चैव ज्ञानविभंगं । परिवर्जयन् गुप्तो, रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥ १४ ॥)

(सत्त य) तथा सात (भयठाणाइं) भयनां स्थानकोने, तथा (सत्तविहं चेव) सात प्रकारना ज (नाणविब्भंगं) विभंगज्ञानने (परिवज्जंतो) वर्जतो तथा (गुत्तो) त्रण गुप्तिए गुप्त एवो हुं (रक्खामि महव्वए पंच) पंच महाव्रतोनुं रक्षण करुं छुं. अहीं सात भय आ प्रमाणे छे-आलोक भय १, परलोक भय २, आदान भय ३, अकस्मात् भय ४, वेदना भय ५, मरण भय ६ अने अपकीर्ति भय ७. विभंगज्ञान एटले मिथ्यात्वसहित अवधिज्ञान. तेना सात प्रकार आ प्रमाणे—एक दिशि लोकज्ञान एटले पूर्वादि चार दिशाओ अने ऊर्ध्व तथा अधो ए छ दिशामांथी एक दिशाए लोकनुं ज्ञान एटले जाणवुं ते. बीजी पांच दिशाए लोकनो न स्वीकार नहीं करवाथी आ विभंगज्ञान कहेवाय छे १. पांच दिशि लोकज्ञान एटले कोई एक दिशा विना बीजी पांच दिशाए लोकनुं जाणवुं ते. अहीं पण एक दिशाए लोक नहीं मानवाथी विभंग कहेवाय छे २. क्रियावरण जीव एटले जीवमात्र प्राणातिपातादिक क्रिया ज करे छे ते जोवामां आवे छे अने ते क्रियानुं कारण जे कर्म

(ज्ञानावरणादिक) ते जोवामां आवतुं नथी, तेथी जीवने मात्र क्रियानुं ज आवरण छे, कर्मनुं आवरण नथी, एम जे मानवुं ते. अहीं क्रिया ज देखाय छे माटे ते मानवी अने कर्म देखातुं नथी माटे ते न मानवुं ए विभंगज्ञान छे. ३. मुदग्ग जीव (तनुमय जीव) एटले भवनपत्यादिक देवो पोताना शरीरनी अवगाहनाना क्षेत्रनी अंदर रहेला तथा बहार रहेला पुद्गळोने ग्रहण करी वैक्रियै शरीर रचे छे ते जोइ सर्व कोइ जीवनुं शरीर पोताना अवगाहक्षेत्रना बाह्य तथा आभ्यंतर पुद्गळोथी ज रचायेलुं छे, एम जे मानवुं ते विभंगज्ञान छे; केमके तेवुं शरीर तो मात्र मनुष्य अने तिर्यंचनुं (औदारिक) ज छे, देवादिकनुं नथी. ४. अमुदग्ग जीव (अतनुमय जीव) एटले देवोनुं वैक्रियै शरीर बाह्य अने आभ्यंतर पुद्गळोने ग्रहण कर्या विना ज रचायेलुं जोवामां आवे छे, तेथी सर्व कोइ जीवनुं शरीर बाह्य आभ्यंतर पुद्गळोथी रचायेलुं नथी एम जे मानवुं ते विभंग छे. ५. रूपी जीव एटले वैक्रिय शरीरवाळा देवोने जोइ सर्व कोइ जीव रूपी ज छे एम जे मानवुं ते विभंग छे. ६. सर्व जीव एटले वायुथी पुद्गळोने पण हालताचालता जोइ सर्व कोइ पण वस्तु जीव ज छे; कोइ पण अजीव छे ज नहीं एम जे मानवुं ते विभंग छे. १४.

पिंडेसणपाणेसण–उग्गहसत्तिक्कया महज्झयणा। उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ १५ ॥

(पिण्डैषणापानैषणा–ऽवग्रहसप्तैकका महाध्ययनानि। उपसंपन्नो युक्तो, रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥ १५॥)

(पिंडेसण) सात पिंडैपणा, तथा (पाणेसण) सात पानैपणा, तथा (उग्गह) सात प्रकारना अवग्रह तथा (सत्तिकया) सात सप्तैकका, तथा (महज्झयणा) सात महाध्ययनो–आ सर्वने (उवसंपन्नो) पामेलो अने (जुत्तो) साधुगुणे युक्त एवो

१ अर्थात् उत्तरवैक्रिय. २ अर्थात् भववैक्रिय.

हु (रक्खामि महव्वए पंच) पच महाव्रतोनु रक्षण करु छु अहीं सात पिंडैषणा आ प्रमाणे छे-असंसठ्ठ-असंसृष्ट एटले हाथ तथा पात्र खरडाय नहीं तेवु अन्न १, संसठ्ठ-संसृष्ट एटले हाथ तथा पात्र खरडाय तेवु अन्न २, उद्धड-उध्धृत एटले तपेली विगेरेमांथी काढीने आपे ते, तेमां हाथ खरडाय अने पात्र न खरडाय अथवा पात्र खरडाय अने हाथ न खरडाय एवी रीते अन्न आपे ते उद्धृत एषणा कहेवाय छे ३, अप्पलेविया-अल्पलेप एटले लेपरहित चणा विगेरे लेतां चोथी एषणा थाय छे ४, उग्गहिया-अवगृहीत एटले भोजन समये गृहस्थीए वाटका विगेरेमां नांखेलु अन्न ग्रहण करतां पांचमी एषणा कहेवाय छे ५, पग्गहिया-प्रगृहीत एटले भोजन समये पीरसवा माटे अथवा पोताने खावा माटे हाथमां जे अन्न लीधु होय ते ग्रहण करवाथी छट्ठी प्रगृहीत एषणा कहेवाय छे ६, उज्झियधम्मा-उज्झितधर्म एटले नांखी देवायोग्य, जे अन्नने कोइ मनुष्यादिक लेवाने इच्छतो न होय तेवु अथवा नांखी देतां अर्धु बाकी रह्युं होय तेवुं अन्न ग्रहण करतां सातमी एषणा थाय छे. ७. पानमी एषणा पण ए ज प्रमाणे सात प्रकारनी जाणवी. सात प्रकारनो अवग्रह-उपाश्रय आ प्रमाणे छे-जहा-चिंतिय-यथाचिंतित एटले मारे अमुक प्रकारनो उपाश्रय ग्रहण करवो, ते सिवाय बीजो लेवो नहीं एम विचारी तेवो ज ग्रहण करे ते. १ सपरिग्गह-स्वपरावग्रह एटले हु बीजा साधुओ माटे उपाश्रय मागीश अने बीजाए ग्रहण करेला उपाश्रयमां हु रहीश एम विचारी तेवो ज ग्रहण करे ते. २ सउग्गह-स्वावग्रह एटले हु बीजाने माटे उपाश्रय मागीश, परंतु बीजाए ग्रहण कर्यो हशे तो तेमां नहीं रहु एम विचारी ते ज प्रमाणे करे ते. ३. परुग्गह-परावग्रह एटले हु बीजा माटे उपाश्रय नहीं मागु, पण बीजाए ग्रहण कर्यो हशे तेमां ज रहीश एम विचारी ते प्रमाणे करे ते. ४ सइगुवग्गह-स्वकीयावग्रह एटले

हुं मारे माटे ज उपाश्रय मागीश, पण बीजा माटे नहीं मागुं एम विचारी ते प्रमाणे करे ते. ५. सागारिसंथारुग्गह— सागारिकसंस्तारकावग्रह एटले हुं जेनो उपाश्रय ग्रहण करीश तेनी ज सादडी विगेरे संथारा माटे लइश, ते नहीं मळे तो उत्कटुक आसने अथवा बेठो बेठो ज रात्रि निर्गमन करीश, एम विचारी ते प्रमाणे करे ते. ६. अहसंथडिउग्गह—यथासंघटितावग्रह एटले उपर कह्या प्रमाणे ज जेनो उपाश्रय तेनो ज संथारो लेवो, परंतु ते अमुक प्रमाणवाळो होय तो ज, एम विचारी ते प्रमाणे करे ते. ७. तथा सात ससैकका आ प्रमाणे—स्थान ससैकक १, नैषेधिकी ससैकक (नैषेधिकी एटले स्वाध्यायभूमि) २, उच्चारप्रश्रवणविधि ससैकक ३, शब्द ससैकक ४, रूप ससैकक ५, परक्रिया ससैकक ६ अने अन्योन्यक्रिया ससैकक ७. आ नामना सात अध्ययनो आचारांगना बीजा श्रुतस्कंधमां बीजी चूलिकारूप छे. ते अध्ययनो सर्व मळीने सात ज छे तो पण तेमनां तेवां ज नामो होवाथी ते दरेक अध्ययन ससैकक कहेवाय छे, तथा सात महाध्ययनो सुयगडांग—सूत्रकृतांगना बीजा श्रुतस्कंधमां छे. ते पहेला श्रुतस्कंधनां अध्ययनो करतां मोटां छे, तेथी ते महाध्ययनो कहेवाय छे. तेमनां नाम आ प्रमाणे छे.—पुंडरीक १, क्रियास्थान २, आहारपरिज्ञा ३, प्रत्याख्यानक्रिया ४, अनाचारश्रुत ५, आर्द्रककुमारीय ६ अने नालंदीय ७. १५.

अट्ठ य मयठाणाइं, अट्ठ य कम्माइं तेसिं बंधं च । परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥१६॥

(अष्टौ च मदस्थानानि, अष्टौ च कर्माणि तेषां बन्धं च । परिवर्जयन् गुप्तो, रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥१६॥)

(अट्ठ य) आठ (मयठाणाइं) मदनां स्थानोने, (य) अने (अट्ठ) आठ (कम्माइं) कर्मोने (च) अने (तेसिं) ते

आठ कर्मोना (बंध) बंधने एटले नवा कर्मना ग्रहणने (परिवज्जतो) वर्जतो एवो तथा (गुत्तो) त्रण गुप्तिए गुप्त एवो हुं (रक्खामि महव्वए पंच) पंच महाव्रतोनुं रक्षण करुं छुं अहीं आठ मदनां स्थानो आ प्रमाणे छे-जाति १, कुळ २, बळ ३, रूप ४, तप ५, ऐश्वर्य ६, श्रुत ७ अने लाभ ८. आठ कर्म आ प्रमाणे-ज्ञानावरणीय १, दर्शनावरणीय २, वेदनीय ३, मोहनीय ४, आयुष्य ५, नाम ६, गोत्र ७ अने अंतराय ८. १६.

अट्ठ य पवयणमाया, दिट्ठा अट्ठविहनिट्ठियट्ठेहिं । उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ १७ ॥

(अष्टौ च प्रवचनमातरः, दृष्टा अष्टविधनिष्ठितार्थैः । उपसंपन्नो युक्तो, रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥ १७ ॥)

(य) तथा वळी (अट्ठ) आठ (पवयणमाया) प्रवचननी माताओ (अट्ठविहनिट्ठियट्ठेहिं) आठ प्रकारना ज्ञानावरणादिक अर्थो-पदार्थो-कर्मो जेनां क्षय पाम्यां छे एवा तीर्थंकरोए (दिट्ठा) जोयेली छे, ते प्रवचननी माताओने (उवसंपन्नो) पामेलो तथा (जुत्तो) साधुगुणे युक्त एवो हुं (रक्खामि महव्वए पंच) पंच महाव्रतोनुं रक्षण करुं छुं. अहीं आठ प्रवचनमाताओ आ प्रमाणे छे-ईर्यासमिति १, भाषासमिति २, एषणासमिति ३, आदानभांडमात्रनिक्षेपणासमिति ४, उच्चारप्रश्रवणखेलसिंघानजल्लपारिष्ठापनिकासमिति ५, मनोगुप्ति ६, वाग्गुप्ति ७ अने कायगुप्ति ८ १७.

नव पावनियाणाइं, संसारत्था य नवविहा जीवा । परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥१८॥

(नव पापनिदानानि, संसारस्थाश्च नवविधा जीवाः । परिवर्जयन् गुप्तो, रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥१८॥)

(नव) नव प्रकारनां (पावनियाणाइं) पापनां नियाणाओ, (य) अने (संसारत्था) संसारमां रहेला (नवविहा) नवं प्रकारना (जीवा) जीवो, तेमने (परिवज्जंतो) वर्जतो एवो तथा (गुत्तो) त्रण गुप्तिए गुप्त एवो हुं (रक्खामि महव्वए पंच) पंच महाव्रतोनी रक्षा करुं छुं. अहीं नव नियाणाओ आ प्रमाणे छे-कोइ साधु के साध्वी नियाणुं करे के साक्षात् देव के देवलोक कोणे दीठा छे ? आ राजाओ ज देव छे तेथी जो मारा तप अनुष्ठाननुं फळ होय तो आवता भवमां हुं राजा थउं-आवुं नियाणुं करी ते देवलोकमां जाय अने त्यांथी च्यवीने राजा थाय छे; पण तेने ते भवमां समकितनी प्राप्ति थती नथी. १. ए ज प्रमाणे श्रेष्ठी एटले हुं श्रेष्ठीना कुळमां उत्पन्न थउं एवुं नियाणुं करी देवलोकमां जइ त्यांथी च्यवी श्रेष्ठीना कुळमां उत्पन्न थाय, तेने पण बोधि दुर्लभ छे. २. स्त्री एटले पुरुषने घणो व्यवसाय होय छे. वळी संग्राम विगेरे तेने करवा पडे छे, तेथी स्त्री थउं तो सारुं एवुं नियाणुं करी देवलोकमां जइ त्यांथी च्यवी स्त्रीनो भव पामे, तेने पण बोधि दुर्लभ छे. ३. पुरुष एटले स्त्री तो सर्वथा पराधीन होय छे अने पुरुष सर्व कार्य करवामां समर्थ छे, तेथी हुं पुरुष थाउं एवुं नियाणुं करी ते प्रमाणे थाय तेने पण बोधि दुर्लभ छे. ४. परप्रविचार एटले आ मूत्र-विष्टाथी भरेला मनुष्योना भोगो बीभत्स छे, परंतु देवताओ बीजा देव के देवीने भोगवे छे अथवा पोताने ज देव देवीरूपे विकुर्वीने भोगवे छे ते सुंदर छे माटे ते मळे तो ठीक एम नियाणुं करी ते प्रमाणे पामे, तेने पण बोधि दुर्लभ छे. ५. स्वप्रविचार एटले मनुष्यना भोगो तो अशुभ छे तथा जे देवो बीजा देव के देवीने भोगवता नथी पण पोते ज पोताने देव देवीरूपे विकुर्वीने भोगवे छे ते सुंदर छे तेथी ते मेळवुं एम नियाणुं करी ते प्रमाणे उत्तम देव थाय, ते त्यांथी च्यवी मनुष्यभवमां धर्म सांभळे, पण तेमां तेने श्रद्धा थाय नहीं;

तेथी ते तापस विगेरे थइ स्त्रीना कामभोगनी मूर्च्छावाळो रही मरीने किल्बिषी देव थाय त्यांथी च्यवी वारंवार मुंगो, बहेरो थाय, परतु तेने बोधि दुर्लभ छे. ६ अप्रविचार एटले कोइ साधु अथवा साध्वी मनुष्य अने देवना भोगथी निर्वेद पामी नियाणु करे के ज्यां मैथुनना भोग नथी त्यां हु उत्पन्न थउ, एवु नियाणु करी ते प्रमाणे ते उत्तम देवलोकमां जाय. त्यांथी च्यवी मनुष्य थाय, ते सुलभबोधि थाय, पण विरति न पामे. ७. आ उग्रादि कुळना पुत्रो श्रावकना व्रतो अगीकार करी साधुओनी भक्ति करे छे, हु पण तेवो थउ, एवु नियाणु करी ते प्रमाणे थाय ते बार प्रकारना श्रावकधर्मने अंगीकार करे पण यतिधर्म पामे नहीं ८. जो हु दरिद्र कुळमां उत्पन्न थाउ तो मारो आत्मा सुखे करीने चारित्र पामे, एवुं नियाणु करी ते प्रमाणे थाय ते यतिधर्मने अगीकार करे, पण ते भवमां सिद्धि पामे नहीं ९ तेथी कांइ पण नियाणु न करवु ए ज श्रेष्ठ छे नव प्रकारना ससारी जीवो आ प्रमाणे छे-पृथ्वीकाय १, अप्काय २, तेजस्काय ३, वायुकाय ४, वनस्पतिकाय ५, द्वींद्रिय ६, त्रीन्द्रिय ७, चतुरिंद्रिय ८ अने पचेंद्रिय ९. १८.

नववभचेरगुत्तो, दुनवविह वंभचेरपरिसुद्धं । उवसपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ १९ ॥

(नवब्रह्मचर्यगुप्तो, द्विनवविधं ब्रह्मचर्यपरिशुद्धम् । उपसंपन्नो युक्तो, रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥ १९ ॥)

(नववभचेरगुत्तो) नव ब्रह्मचर्यनी गुप्तिवडे गुप्त एवो अने (दुनवविह) बे वार नव एटले अढार प्रकारना (वभचेरपरिसुद्ध) शुद्ध ब्रह्मचर्यने (उवसपन्नो) पामेलो एवो अने (जुत्तो) साधुगुणे सहित एवो हु (रक्खामि महव्वए पच) पच महाव्रतोनु रक्षण करु छु. अहीं नव ब्रह्मचर्यनी गुप्ति आ प्रमाणे—वसहि-वसति एटले स्त्री, पशु,

पंडकरहित स्थानमां रहेवुं ते १. कह–कथा एटले स्त्रीनी कथा न करवी अथवा एकली स्त्रीओनी पासे धर्मकथा पण न करवी ते. २. निसिज्जा–निपद्या एटले स्त्रीनी साथे एक आसन पर न बेसवुं, तथा स्त्री बेठी होय ते आसन उपर तेना उठ्या पछी पण बे घडी सुधी न बेसवुं ते. ३. इंदिय–इंद्रिय एटले स्त्रीना नेत्रादिक अवयवो जोवा नहीं ते. ४ कुड्डिंतर–कुड्यंतर एटले भींतने आंतरे रहीने स्त्रीना कामभोगादिकना शब्द सांभळवा नहीं ते. ५. पुव्वकीलिय–पूर्वक्रीडित एटले स्त्री साथे पूर्वे जे क्रीडा करी होय तेने संभारवी नहीं ते. ६. पणीय–प्रणीतभोजन एटले घृतादिकथी नीतरतो अति स्निग्ध आहार न करवो ते. ७. अइमायाहार–अतिमात्राहार एटले मात्रा (प्रमाण) थी अधिक आहार न करवो ते. ८ तथा विभूसणा–विभूषणा एटले शरीरनी विभूषा (शोभा) न करवी ते. ९. अढार प्रकारनुं ब्रह्मचर्य आ प्रमाणे—औदारिक अने वैक्रिय मैथुनने मन, वचन, कायाए करी करवुं, कराववुं अने अनुमोदवुं नहीं ते. १९.

उवघायं च दसविहं, असंवरं तह य संकिलेसं च । परिवज्जंतो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥२०॥

(उपघातं च दशविधम–संवरं तथा च संक्लेशं च । परिवर्जयन् गुप्तो, रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥२०॥)

(च) अने (दसविहं) दश प्रकारना (उवघायं) उपघातने, (तह य) तेम ज (असंवरं) दश प्रकारना असंवरने, (संकिलेसं च) तथा दश प्रकारना संक्लेशने (परिवज्जंतो) वर्जतो एवो अने (गुत्तो) त्रण गुप्तिए गुप्त एवो हुं (रक्खामि महव्वए पंच) पंच महाव्रतोनुं रक्षण करुं छुं. अहीं दश प्रकारना उपघात आ प्रमाणे–पहेलो उद्गम उपघात, ते आधाकर्मादिक दोषथी उत्पन्न थाय छे. १. बीजो उत्पादन उपघात, ते धात्री आदिक दोषोथी उत्पन्न थाय छे. २. त्रीजो एषणा

उपघात, ते शंकितादिक भेदथी उत्पन्न थाय छे ३. चोथो परिकर्म उपघात, ते वस्त्र-पात्रादिकने समारवाथी उत्पन्न थाय छे ४. पांचमो परिहरण उपघात, ते प्रमाणरहित अथवा अकल्प्य एवा उपकरणनो उपभोग करवाथी उत्पन्न थाय छे. ५. छट्ठो ज्ञान उपघात, ते श्रुतज्ञाननी अपेक्षाए अकाळे स्वाध्यायादिक करवाथी थाय छे ६. सातमो दर्शन उपघात, ते जिनवचनमां शंकादि करवाथी थाय छे ७. आठमो चारित्र उपघात, ते पांच समितिनो भंग विगेरे करवाथी थाय छे. ८ नवमो अप्रीतिक उपघात, ते अप्रीतिवडे विनयादिकनो उपघात थाय छे ९ तथा दशमो संरक्षण उपघात, ते शरीरादिक उपर मूर्च्छा करवाथी परिग्रहनी विरतिनो उपघात थाय छे. १० दश प्रकारनो असंवर आ प्रमाणे-इष्ट विषयमां रागथी अने अनिष्ट विषयमां द्वेषथी प्रवर्ततो श्रोत्र इंद्रियनो संवर न करवो ते श्रोत्रेंद्रिय असंवर कहेवाय छे १. ते ज प्रमाणे चक्षु इंद्रिय असंवर २, घ्राणेंद्रिय असंवर ३, रसनेंद्रिय असंवर ४ अने स्पर्शनेंद्रिय असंवर पण जाणवा ५, अकुशळ एवा मन, वचन अने कायानो संवर न करवो ते मन असंवर ६, वचन असंवर ७ अने काय असंवर ८ जाणवा. उपकरण असंवर एटले प्रमाणरहित अथवा अकल्प्य वस्त्रादिक उपकरण ग्रहण करवां ते ९ तथा सूचि असंवर-शरीरने उपघात करनारा सूची—सोय अने कुशना अग्रभाग विगेरेनो असंवर एटले तेमने न गोपववा ते सूचिकुशाग्र असंवर कहेवाय छे १० तथा दश प्रकारनो संक्लेश एटले असमाधि आ प्रमाणे छे—वस्त्रादिक उपधिसंबंधी जे संक्लेश ते उपधिसंक्लेश कहेवाय छे. १. उपाश्रयसंबंधी जे संक्लेश ते उपाश्रयसंक्लेश कहेवाय छे. २ कषायोवडे अथवा कषायोरूपी जे संक्लेश ते कषायसंक्लेश. ३. भक्तपानसंबंधी जे संक्लेश ते भक्तपानसंक्लेश. ४ मनने विषे अथवा मननो जे संक्लेश ते मनसंक्लेश. ५.

ते ज प्रमाणे वचनसंक्लेश ६, कायसंक्लेश ७, ज्ञानसंक्लेश ८, दर्शनसंक्लेश ९ अने चारित्रसंक्लेश जाणवा. १०—२०

सच्चसमाहिट्ठाणे, दस चेव दसाओ समणधम्मं च । उवसंपन्नो जुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥२१॥

(सत्यसमाधिस्थानानि, दश चैव दशाः श्रमणधर्मं च । उपसंपन्नो युक्तो, रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥२१॥)

(दश) दश प्रकारना (सच्च) सत्यने, तथा (समाहिट्ठाणे) दश प्रकारना समाधिनां स्थानोने (चेव) निश्चे, तथा (दसाओ) दश प्रकारना दशाश्रुतस्कंधोने, तथा (समणधम्मं च) दश प्रकारना साधुधर्मने (उवसंपन्नो) पामेलो एवो अने (जुत्तो) साधुगुणे युक्त एवो हुं (रक्खामि महव्वए पंच) पंच महाव्रतोनुं रक्षण करुं छुं.

अहीं दश प्रकारनां सत्य आ प्रमाणे छे.–जनपदसत्य–कोइ देशमां पाणीने पय कहे छे, कोइ देशमां नीर कहे छे,कोइ देशमां उदक कहे छे इत्यादि सर्व सत्य मानवुं ते जनपदसत्य. १. संमतसत्य–कुमुद, कुवलय, कमळ, अरविंद ए विगेरे सर्व जातिनां कमळो पंकमां उत्पन्न थाय छे तो पण सर्व गोवाळगोपाळने अरविंद जातिनुं कमळ ज पंकज (पंकथी उत्पन्न थयेलुं) नामथी संमत छे ते संमतसत्य. २. स्थापनासत्य–मूर्तिमां अरिहंत विगेरेनी स्थापना कराय छे ते स्थापनासत्य. ३. नामसत्य–कुळनी वृद्धि करतो न होय तो पण कोइनुं नाम कुळवर्धन होय ते नामसत्य. ४. रूपसत्य–जेम कोइ पाखंडी माणस साधुनुं लिंग धारण करे तो ते पण साधु कहेवाय छे ते रूपसत्य. ५. प्रतीत्यसत्य–एटले कोइनी अपेक्षाए सत्य होय ते, जेमके टचली आंगळीनी अपेक्षाए अनामिका मोटी छे, ते मध्यमानी अपेक्षाए नानी छतां मोटी कहेवाय ते प्रतीत्यसत्य. ६. व्यवहारसत्य एटले पर्वत बळतो नथी, तेमां रहेलुं घास बळे छे तो पण पर्वत बळे छे एम कहेवाय छे ते व्यवहारसत्य. ७.

भावसत्य एटले जेमां श्वेत आदि कोइ पण वर्ण अधिक होय तेने आश्रीने एक वर्णवाळु कहेवु ते. जेमके बगलीना शरीरपर पांचे वर्णनो संभव छे तो पण श्वेतवर्ण अधिक होवाथी धोळी बगली कहेवाय छे ते भावसत्य. ८. योगसत्य एटले संबंधने लइने सत्य जेमके दंडना योगथी माणस पण दंडी कहेवाय छे, छत्रना संबंधथी माणस पण छत्री (छत्रवाळो) कहेवाय छे ते योगसत्य ९ तथा उपमासत्य एटले उपमाए करीने सत्य, मोटा विशाळ तळावने आ तळाव समुद्र जेवु विशाळ छे एम कहेवाय छे ते उपमासत्य १०.

समाधिना दश स्थानो आ प्रमाणे-स्त्री, पशु अने पंडक (नपुंसक) ना संबंधवाळा शयन, आशन, उपाश्रय विगेरे स्थानोने साधु सेवे नहीं. १. मुनि केवळ स्त्रीओनी पासे धर्मकथादिक न करे, अथवा स्त्रीना रूप विगेरेनी कथा न करे. २ मुनि प्रणीत-घृतादिकना टीपा पडता भोजननो आहार न करे. ३. भोजन के पाणीनो अधिक आहार न करे. ४ स्त्रीनी साथे पूर्वे जे कांइ क्रीडा विगेरे करेल होय तेने संभारे नहीं ५ स्त्रीनी साथे एक आसनपर न बेसे, तेना उठ्या पछी पण बे घडी सुधी ते स्थाने न बेसे ६. स्त्रीना मनोहर अवयवोने जुए नहीं ७ शब्दानुपाती एटले पोताना के परना मनोहर शब्द उपर प्रीतिवाळो न थाय, रूपानुपाती एटले पोताना के परना सुंदर रूप उपर प्रीतिवाळो न थाय, तथा गंधानुपाती एटले पोताना के परनी सुगंध उपर प्रीतिवाळो न थाय. ८. श्लोकानुपाती एटले यशकीर्तिमां प्रीतिवाळो न थाय ९ मुनि साता-सुखमां प्रीतिवाळो-आसक्त न थाय १०.

दश दशाश्रुतस्कंध आ प्रमाणे-कर्मविपाक दशा १, उपासक दशा २, अंतकृत दशा ३, अनुत्तरोपपातिक दशा ४,

आचार दशा ५, प्रश्नव्याकरण दशा ६, बंध दशा ७, द्विगृद्धि दशा ८, दीर्घ दशा ९ तथा संक्षेपिक दशा. १०. आ प्रमाणे दशाश्रुतस्कंध छेदसूत्रमां दश अधिकार छे.

दश प्रकारना यतिधर्म आ प्रमाणे.—क्षांति १, मार्दव २, आर्जव ३, मुक्ति–निर्लोभता ४, तप ५, संयम ६, सत्य ७, शौच ८, अकिंचनता—परिग्रहरहितपणुं ९ अने ब्रह्मचर्य १०. २१.

आसायणं च सव्वं, तिगुणं एक्कारसं विवज्जंतो । *उवसंपन्नो गुत्तो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ २२ ॥

(आशातनां च सर्वां, त्रिगुणमेकादशं विवर्जयन् । उपसंपन्नो गुप्तो, रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥ २२ ॥)

(च) अने वळी (सव्वं) सर्व–सामान्ये करीने समग्र एवा अथवा (तिगुण) त्रणे गुणीए एवा (एक्कारसं) अग्यार एटले अग्यारने त्रणे गुणतां तेत्रीश थाय तेटली (आसायणं) आशातनाओने (विवज्जंतो) वर्जतो एवो तथा (उवसंपन्नो) अनाशातनाने पामेलो एवो तथा (गुत्तो) साधुगुणे सहित एवो हुं (रक्खामि महव्वए पंच) पंच महाव्रतोनुं रक्षण करुं छुं.

अहीं तेत्रीश आशातना आ प्रमाणे छे.–अरिहंतनी आशातना एटले तीर्थंकरो छे ज नहीं, होय तो ते जाणतां छतां शामाटे भोग भोगवे छे? अथवा विरति लीधा छतां देवादिके करेला समवसरणने शामाटे भोगवे छे ? इत्यादि १. सिद्धनी आशातना–सिद्धो छे ज नहीं, होय तो पण तेओ चेष्टारहित होवाथी शुं कामना छे ? इत्यादि २. आचार्यनी आशातना–आ आचार्य नानी वयनो छे, अकुलीन छे, दुर्बुद्धि छे, गरीब छे इत्यादि. ३. ए ज प्रमाणे उपाध्यायनी आशातना ४. साधुनी

* परिवज्जंतो गुत्तो, इति पाठः बहुषु प्रतिषु साधुसाध्वीमुखेषु च दृश्यते.

आशातना-आ साधु सिद्धांतने जाणता नथी, क्रोधी छे, उतावळा चाले छे, गाळो भांडे छे इत्यादि. ५. साध्वीनी आशातना-आ साध्वी कजीयाळी छे, घणी उपधि राखे छे विगेरे ६ श्रावकनी आशातना-मनुष्य जन्म पामीने तथा जिनधर्म जाणीने पण आ श्रावको दीक्षा लेता नथी, तो पण ते लोकमा केम धन्य कहेवाय छे? इत्यादि ७ ए ज प्रमाणे श्राविकानी आशातना. ८. देवोनी आशातना-देवो निरंतर कामभोगमां ज आसक्त छे, विरतिरहित छे, चेष्टारहित छे, तेओ समर्थ छतां पण तीर्थनी उन्नति करता नथी इत्यादि ९. देवीनी आशातना पण ए ज प्रमाणे १०. इहलोक आशातना-मनुष्यने आ मनुष्यलोक इहलोक कहेवाय छे तेनी असत्प्ररूपणा करवी ते आशातना छे ११. परलोकनी आशातना-मनुष्यने नारक, तिर्यंच अने देव ए परलोक छे तेनी असत्प्ररूपणा करवी ते आशातना छे. १२ केवळीप्रणीत धर्मनी आशातना-केवळीए श्रुत अने चारित्र एम बे प्रकारे धर्म रच्यो छे तेनी आशातना, एटले आ श्रुत प्राकृत भाषामां छे, ते कोणे रच्यु छे? ते कोण जाणे छे? तथा जेमां दान देवातु नथी एवा चारित्रधर्मथी शु फळ छे? इत्यादि. १३. स्वर्ग, मृत्यु अने पाताळरूप आखा लोकनी आशातना असत्प्ररूपणा करवाथी थाय छे, जेमके सात द्वीप अने सात समुद्र एटलो ज लोक छे इत्यादि. १४ सर्व सत्त्वनी आशातना तेनी विपरीत प्ररूपणा करवाथी थाय छे. १५ काळनी आशातना-काळ छे ज नहीं, अथवा आ विश्व ज काळनी परिणति छे इत्यादि. १६ श्रुतनी आशातना तेमां कहाथी विपरीत प्ररूपणा करवाथी थाय छे १७ श्रुतदेवतानी आशातना-श्रुतदेवता छे ज नहीं, होय तो पण ते कांइ तीर्थनी उन्नति करता नथी इत्यादि १८ वाचनाचार्यनी आशातना-आ वाचनाचार्य बीजाना सुखदुःखने जाणता ज नथी, कारण के ते वारंवार वांदणां अपावे छे इत्यादि.

१९. हवे बाकीनी चौद आशातनाओ सूत्रना विषयवाळी कहे छे—व्याविद्धाक्षर एटले विपरीत अक्षरो बोलवा ते. २०. व्यत्याम्रेडित–परस्पर संबंध विना छूटा छूटा अथवा सेळभेळ अक्षरो बोलवा ते. २१. हीनाक्षर—ओछा अक्षर बोलवा ते. २२. अत्यक्षर—अधिक अक्षर बोलवा ते. २३. पदहीन—पद ओछुं बोलवुं ते. २४. विनयहीन—उचित विनय कर्या विना बोलवुं ते. २५. घोषहीन–उदात्त, अनुदात्त विगेरे स्वररहित बोलवुं ते. २६. योगहीन–जोग वह्या विना भणवुं ते. २७. सुष्ठुदत्त—शिष्यनी शक्ति उपरांत तेने वधारे भणाववुं ते. २८. दुष्ठुप्रतीच्छित—शिष्य कलुष मनथी भणे ते. २९. अकाळस्वाध्याय—अकाळे भणवुं ते. ३०. काळअस्वाध्याय—भणवाने काळे न भणवुं ते. ३१. अस्वाध्यायिकस्वाध्याय–असज्झायने वखते अथवा असज्झायने दिवसे भणवुं ते. ३२. स्वाध्यायिकअस्वाध्याय–सज्झायने वखते अथवा सज्झायने दिवसे न भणवुं ते. ३३.

अथवा तो गुरुना विषयवाळी तेत्रीश आशातनाओ थाय छे ते आ प्रमाणे—कारणविना गुरुनी आगळ चालवुं. १. गुरुनी पडखे चालवुं. २. गुरुनी अति समीपे चालवुं. ३. ए ज रीते सन्मुख उभा रहेवुं. ४. पडखे उभा रहेवुं. ५. अति समीपे उभा रहेवुं. ६. ए ज रीते सन्मुख बेसवुं. ७. पडखे बेसवुं. ८. अति समीपे बेसवुं. ९. आ नव प्रकारे करे ते आशातना समजवी. बहीरविचारभूमिथी आवीने गुरुनी पहेलां चळू करे–हाथ–पग धोवे. १०. बहीरविचारभूमिथी आवीने गुरुनी पहेलां गमनागमननी आलोचना करे. आ बंने प्रकारे करे तो आशातना लागे. ११. रात्रे अथवा सवारे गुरु बोलावे त्यारे शिष्य जागता छतां बोले नहीं तो आशातना लागे. १२. गुरु कोइनी साथे कांइ आलापसंलाप करवाना होय तेनी

पहेलां ज पोते (शिष्य) तेना साथे आलापसंलाप करे तो आशातना लागे. १३ अशनादिक लावीने प्रथम बीजा साधु पासे आलोचना करी पछी गुरु पासे आलोचना करे तो आशातना लागे १४. अशनादिक लावीने प्रथम बीजा साधुने देखाडी पछी गुरुने देखाडे तो आशातना लागे १५. अशनादिक लावी प्रथम बीजा साधुओने निमन्त्रण करी पछी गुरुने निमन्त्रण करे तो आशातना लागे. १६. गुरुने पूछ्या विना बीजा साधुओने तेमनी इच्छा प्रमाणे अशनादिक आपे तो आशातना लागे. १७. गुरुनी साथे अशनादिक खातो सतो पोते सारो सारो आहार ग्रहण करे तो आशातना लागे १८. दिवसे गुरुए बोलाव्या छतां जवाब न आपे तो आशातना लागे. १९. गुरु प्रत्ये मोटा शब्दथी कठोर वचन बोले तो आशातना लागे. २० गुरु बोलावे त्यारे पोते जे ठेकाणे बेठो होय त्यां बेठा बेठा ज जवाब आपे तो आशातना लागे. २१ गुरु बोलावे त्यारे शु छे ? एम जवाब आपे तो आशातना लागे. २२. गुरुने तुंकारे बोलावे तो आशातना लागे. २३. गुरु कहे के–'आ ग्लान साधुनी वैयावच्च केम करतो नथी ?' त्यारे पोते सामो कहे के 'तमे केम करता नथी ?' एम बोलवाथी आशातना लागे. २४. गुरु धर्मकथा कहेता होय ते वखते पोतानु मन सारु न रहे (अनुमोदना न करे) तो आशातना लागे. २५. गुरु सूत्रादिकनु व्याख्यान करे त्यारे ' तमने सांभरतुं नथी, आनो अर्थ तो आवो छे. ' एम बोलवाथी आशातना लागे. २६. गुरु कथा कहेता होय, तेने छेदी पोते वच्चे बोलवा मांडे तो आशातना लागे. २७ गुरु देशना देता होय ते वखते 'भिक्षादिकनो अवसर थयो छे' एम कही गुरुनी पर्षदानो भंग करे तो आशातना लागे २८. गुरुनी पर्षदा बेठी होय ते ज वखते बे–त्रण वार तेनी ते ज कथा पोते कथा करे तो आशातना लागे. २९. गुरुनी शय्या सस्तारकने पगवडे संघट्टो करी मिथ्यादुष्कृत आपे नहीं

तो आशातना लागे. ३०. गुरुनी शय्यामां के संथारामां बेसवादिकथी आशातना लागे. ३१. गुरु करतां पोतानुं आसन उंचुं राखवाथी आशातना लागे. ३२. गुरुनी समान आसन राखवाथी पण आशातना लागे. ३३. आ आशातनाओ दशाश्रुतस्कंधमां कही छे. २२.

एवं तिदंडविरओ, तिगरणसुद्धो तिसल्लनीसल्लो। तिविहेण पडिक्कंतो, रक्खामि महव्वए पंच ॥ २३ ॥

(एवं त्रिदंडविरतः, त्रिकरणशुद्धः त्रिशल्यनिःशल्यः। त्रिविधेन प्रतिक्रान्तः, रक्षामि महाव्रतानि पञ्च ॥ २३ ॥)

(एवं) ए ज प्रमाणे (तिदंडविरओ) मन, वचन अने काया ए त्रण दंडथी विराम पामेलो, तथा (तिगरणसुद्धो) मन विगेरे त्रण करणे करीने शुद्ध थयेलो, तथा (तिसल्लनीसल्लो) मायाशल्य, निदानशल्य अने मिथ्यात्वशल्य ए त्रण शल्यवडे शल्यरहित थयेलो, तथा (तिविहेण) त्रण प्रकारना करणे करीने एटले मन, वचन, कायाए करीने (पडिक्कंतो) पडिकमेलो एटले सर्व अतिचारोथी निवृत्ति पामेलो एवो हुं (रक्खामि महव्वए पंच) पंच महाव्रतोनुं रक्षण करुं छुं. २३.

हवे महाव्रतोना उच्चारने समाप्त करता छता कहे छे.—

इच्चेयं महव्वयउच्चारणं थिरत्तं सल्लुद्धरणं धिइबलयं ववसाओ साहणट्ठो पावनिवारणं निकायणा भावविसोही पडागाहरणं निज्जुहणाऽऽराहणा गुणाणं संवरजोगो पसत्थज्झाणोवउत्तया जुत्तया य नाणे परमट्ठो उत्तमट्ठो, एस खलु तित्थंकरेहिं रइरागदोसमहणेहिं देसिओ पवयणस्स

सारो, छज्जीवनिकायसंजमं उवएसिअं तेल्लोकसक्कयं ठाणं अब्भुवगया ॥

(इत्येतत् महाव्रतोच्चारणं स्थिरत्व शल्योद्धरण धृतिबलक (द) व्यवसायः साधनार्थः पापनिवारण निकाचना भावविशोधिः पताकाहरण निर्यूहणा आराधना गुणानां संवरयोगः प्रशस्तध्यानोपयुक्तता युक्तता च ज्ञानेन परमार्थ. उत्तमार्थः, एतत् खलु तीर्थङ्करैः रतिरागद्वेषमथनैः देशितः प्रवचनस्य सारः (ते च) षड्जीवनिकायसंयम उपदिश्य त्रैलोक्यसत्कृत स्थानम् अभ्युपगताः ॥)

(इच्चेय) ए रीते आ (महव्वयउच्चारण) पच महाव्रतोनु उच्चारण करेलु छे, तेनाथी शो गुण थाय ? अथवा ते उच्चारण केवु छे ? ते उपर कहे छे के–(थिरत्त) महाव्रतोने विषे ज अथवा धर्मने विषे स्थिरपणुं थाय छे, तथा (सल्लुद्धरण) शल्यनो उद्धार–नाश करनार छे, तथा (धिइबलय) धृति एटले चित्तनी समाधि, तेनुं बळ आपनार छे, तथा (ववसाओ) दुष्कर कार्य करवानो अध्यवसाय करनार छे, तथा (साहणट्ठो) साधकतम पदार्थ एटले मोक्ष अर्थने साधवानो उपाय छे, तथा (पावनिवारण) पापनु निवारण करनार छे, तथा (निकायणा) निकाचना जेवी निकाचना एटले व्रतोनो स्वीकार करवामां अत्यत दृढ निबधन छे, तथा (भावविसोही) भावने एटले आत्माना परिणामने अत्यत शुद्ध करनार छे, तथा (पडागाहरण) चारित्रनी आराधनारूप पताकाने ग्रहण करनार छे, तथा (निज्जुहणा) आत्मारूपी नगरमांथी कर्मरूपी शत्रुने काढी मूकनार छे, तथा (आराहणा गुणाणं) मुक्तिना साधनरूप गुणोनी आराधना करनार छे, तथा (संवरजोगो) नवा कर्मना आगमननो निरोध करनार जे संवर तेनो योग एटले व्यापार करनार छे, तेथी (पसत्थ-

ज्झाणोवउत्तया) प्रशस्त एवा धर्मध्यान अने शुक्लध्याननो उपयोग करनार-जोडनार छे, तथा (जुत्तया य नाणे) ज्ञानवडे करीने युक्तता एटले सहित करनार छे अर्थात् ज्ञानवडे सद्बोधने उत्पन्न करनार छे, तथा (परमट्ठो) परमार्थरूप छे एटले अकृत्रिम पदार्थरूप छे, तथा (उत्तमट्ठो) उत्तम पदार्थरूप छे, कारण के मोक्ष साधवामां आ महाव्रतो सर्वोत्तम छे. वळी (एस) आ महाव्रतोनो उच्चार (खलु) निश्चे (रइरागदोसमहणेहिं) रति एटले चारित्रमोहनीयकर्मना उदयथी उत्पन्न थतो आनंद, राग एटले ममता अने द्वेष एटले अहंकार तेमने मथन करनारा एवा (तित्थंकरेहिं) तीर्थंकरोए (पवयणस्स सारो) प्रवचनना साररूप कह्यो छे, तथा ते तीर्थंकरो (छज्जीवनिकायसंजमं) पृथिव्यादिक छ जीवनिकायना रक्षणरूप संयमनो तथा उपलक्षणथी मृषावादादिकना परिहाररूप संयमनो भव्य प्राणीओने (उवएसियं) उपदेश आपीने तथा उपलक्षणथी पोते पण ते प्रकारे संयम पाळीने (तेल्लोक्कसक्कयं) त्रण लोकना जीवोए सत्कार करेला एटले पूजेला (ठाणं) स्थानने अर्थात् मोक्षस्थानने (अब्भुवगया) पामेला छे. आम कहेवाथी पण महाव्रतो अत्यंत ग्रहण करवा लायक छे एम सूचवे छे.

हवे आ महाव्रतोना कीर्तननी समाप्तिमां मंगळने माटे आसन्नोपकारी होवाथी विशेष करीने श्री महावीरस्वामीनी स्तुति करे छे.—

नमो त्थु ते सिद्ध बुद्ध मुत्त नीरय निस्संग माणमूरण गुणरयणसागरमणंतमप्पमेय, नमो त्थु ते महइ महावीर वद्धमाण सामिस्स, नमो त्थु ते अरहओ, नमो त्थु ते भगवओ ति कट्टु ॥

(नमोऽस्तु ते सिद्ध बुद्ध मुक्त नीरज निःसङ्ग मानमूरण गुणरत्नसागर अनन्त अप्रमेय, नमोऽस्तु ते

महति (कृतमते) महावीर वर्धमानस्वामी (इति कृत्वा), नमोऽस्तु तेऽर्हन् (इति कृत्वा) नमोऽस्तु ते भगवान् इति कृत्वा ॥)

(नमो त्थु ते) तमने नमस्कार हो. तमे कवा छो ? ते उपर भगवानना संबोधनवाळा विशेषणो आपे छे-(सिद्ध) हे सिद्ध ! (बुद्ध) हे बुद्ध ! एटले केवळज्ञानवडे समग्र वस्तुतत्त्वने जाणनार ! (मुत्त) हे पूर्वे बांधेला सर्व कर्मोथी मुक्त ! (नीरय) हे नवा बधाता कर्मरहित ! अथवा हे उत्सुकतारहित ! (निस्संग) हे पुत्र, स्त्री, धन विगेरे सर्व संगरहित ! (माणमूरण) हे सर्व माननो-गर्वनो नाश करनार ! (गुणरयणसागर) हे गुणरूपी रत्नना सागर ! (अणंत) हे अनंतज्ञानस्वरूप ! (अप्पमेय) हे अप्रमेय एटले छद्मस्थना ज्ञानथी न जाणी शकाय तेवा ! कारण के शरीररहित एकला जीवनु स्वरूप छद्मस्थो जाणी शकता नथी. तथा (नमो त्थु ते) तमने नमस्कार हो. तमे केवा छो ? तेना संबोधन आपे छे-(महइ) महानने विषे एटले मोक्षने विषे करी छे मति जेणे एवा (महावीर) हे महावीर ! एटले रागादिक शत्रु उपर पराक्रम करनार एटले तेनो विजय करनार अथवा विशेषे करीने मोक्षप्रत्ये जनार अथवा भव्यप्राणीओने मोक्षमा मोकलनार, अथवा कर्मनो नाश करनार ! आ सर्व अर्थ महावीर शब्दना थाय छे. कह्यु छे के-"कर्मनु विदारण करे छे, तपवडे विराजे छे-शोभे छे अने तपना वीर्यवडे युक्त छे, तेथी ते वीर कहेवाय छे." तथा (वद्धमाण) हे वर्धमान ! एटले माता-पिताए पोताना कुळ अने समृद्धिनी वृद्धिना हेतुरूप होवाथी जेनु वर्धमान नाम कर्यु छे एवा ! शा माटे तमने नमस्कार हो ? ते कहे छे के-(सामिस्स) तमे स्वामी-प्रभु छो ए हेतु माटे, तथा (नमो त्थु ते अरहओ) अशोकादिक आठ महाप्रातिहार्य-

हो, तथा (नमो त्थु ते भगवओ ति कट्टु) तमे
रूप पूजाने लायक होवाथी तमे अर्हन् छो ए हेतु माटे तमने नमस्कार हो, तथा (नमो त्थु ते भगवओ ति कट्टु) तमे भगवान छो 'ति कट्टु' एटले एम करीने—ए हेतु माटे अथवा 'तिकट्टु' एटले त्रण वार तमने नमस्कार हो. अहीं समग्र ऐश्वर्य, रूप, यश, लक्ष्मी, धर्म अने प्रयत्न ए छ भग शब्दना अर्थ थाय छे, ते भग जेने छे ते भगवान कहेवाय छे.

जेम महाव्रतोनो उच्चार कर्मनो क्षय करनार छे तेम श्रुतनुं कीर्त्तन पण कर्मनो क्षय करनार छे, माटे महाव्रतोनुं कीर्तन समाप्त करवापूर्वक श्रुतनुं कीर्त्तन करवा माटे कहे छेः—

एसा खलु महव्वयउच्चारणा कया, इच्छामो सुत्तकित्तणं काउं ॥

(एषा खलु महाव्रतोच्चारणा कृता, इच्छामः श्रुतकीर्तनां कर्तुम् ॥)

(एसा) आ (खलु) निश्चे (महव्वयउच्चारणा) महाव्रतोनुं उच्चारण (कया) कर्युं. हवे (सुत्तकित्तणं) श्रुतनुं कीर्तन (काउं) करवा माटे (इच्छामो) अमे इच्छीए छीए.

अहीं श्रुत संक्षेपे करीने बे प्रकारनुं कह्युं छे—अंगप्रविष्ट अने अंगबाह्य. तेमां बे पग, बे जंघा, बे ऊरु, एक पृष्ठ, एक उदर, बे बाहु, एक ग्रीवा अने एक मस्तक—आ प्रमाणे श्रुतरूपी पुरुषना बार अंगमां रहेलुं जे श्रुत ते अंगप्रविष्टश्रुत कहेवाय छे, ते आ प्रमाणे—आचारांग अने सूत्रकृतांग (सुगडांग) ए प्रवचनरूपी पुरुषना बे पगरूप छे, स्थानांग अने समवायांग ए बे जंघारूप छे विगेरे. अथवा गणधरोए जे श्रुत रच्युं ते अंगप्रविष्ट अने जे श्रुत स्थविरोए रच्युं ते अंग-बाह्य कहेवाय छे. तेमां अंगप्रविष्ट जे श्रुत ते नियत छे एटले अवश्य छे अने जे अंगबाह्य श्रुत छे ते अनियत छे. हवे ते

अंगबाह्य श्रुत पण बे प्रकारनु छे- आवश्यक अने आवश्यकथी बीजु तेमां आवश्यक श्रुतमां अल्प कहेवा जेवु छे तेथी प्रथम तेने कहेवा माटे तेना उपदेशकने नमस्कार करवापूर्वक सूत्र कहे छे.—

नमो तेसिं खमासमणाणं, जेहिं इमं वाइयं छव्विहमावस्सयं भगवंतं ॥

(नमः तेभ्यः क्षमाश्रमणेभ्य, यैः इदं वाचितं षड्विधमावश्यकं भगवत्)

(तेसिं) ते (खमासमणाण) क्षमादिक गुणवाळा महातपस्वी गुरुमहाराज अथवा तीर्थंकर गणधरादिकने (नमो) नमस्कार थाओ, के (जेहिं) जे क्षमाश्रमणोए (भगवत) अतिशयादिक गुणवाळु (इम) आ (छव्विहं) छ प्रकारनु (आवस्सयं) आवश्यक (वाइय) अमारी पासे वांच्यु अमने समळाव्यु-अमने आप्यु अथवा सूत्रार्थपणे रच्यु छे.

ते आवश्यकना छ प्रकार बतावे छे —

तं जहा-सामाइय चउवीसत्थओ वंदणयं पडिक्कमण काउस्सग्गो पच्चक्खाणं, सव्वेहिं पि एयम्मि छव्विहे आवस्सए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सगथे सनिज्जुत्तिए ससंगहणिए जे गुणा वा भावा वा अरहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्ता वा परूविया वा, ते भावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो ॥

(तद्यथा-सामायिक चतुर्विंशतिस्तवः वन्दनकं प्रतिक्रमणं कायोत्सर्गः प्रत्याख्यान, सर्वस्मिन्नपि

एतस्मिन् षड्विधे आवश्यके भगवति ससूत्रे सार्थे सग्रन्थे सनिर्युक्तिके ससंग्रहणिके ये गुणा वा भावा वा अर्हद्भिः भगवद्भिः प्रज्ञप्ता वा प्ररूपिता वा, तान् भावान् श्रद्दध्महे प्रतिपद्यामहे रोचयामः स्पृशामः पालयामः अनुपालयामः ॥)

(तं जहा) ते छ प्रकार आ प्रमाणे छे-(सामाइयं) सामायिक १, (चउवीसत्थओ) चतुर्विंशतिस्तव २, (वंदणयं) वंदनक ३, (पडिक्कमणं) प्रतिक्रमण ४, (काउस्सग्गो) कायोत्सर्ग ५ तथा (पच्चक्खाणं) प्रत्याख्यान ६. (सव्वेहिं पि) सर्व एवा पण (एयम्मि) आ (छव्विह) छ प्रकारना (आवस्सए) आवश्यकने विषे, केवा आवश्यकने विषे ? (भगवंते) समग्र ऐश्वर्यवाळा, (ससुत्ते) सूत्रसहित, (सअत्थे) अर्थसहित, (सगंथे) सूत्र अने अर्थ ए बन्नेसहित, (सनिज्जुत्तिए) निर्युक्तिसहित, (ससंगहणिए) संग्रहणीसहित एवा आ छ प्रकारना आवश्यकने विषे (जे) जे कोइ (गुणा वा) गुणो एटले विरति तथा जिनेश्वरना गुणोनुं कीर्तन ए आदि धर्मो, अथवा (भावा वा) क्षायोपशमादिक भावो अथवा जीवादिक भावो—पदार्थो (अरहंतेहिं) देवादिकनी करेली पूजाने योग्य एवा, तथा (भगवंतेहिं) समग्र ऐश्वर्यादिवाळा जिनेश्वरोए (पन्नत्ता वा) सामान्य रीते कह्या छे अथवा (परूविया वा) विशेषे करीने कह्या छे, (ते भावे) ते भावोने (सद्दहामो) 'आ एम ज छे' ए रीते सामान्यपणे अमे श्रद्धा करीए छीए, (पत्तियामो) प्रीतिथी अंगीकार करीए छीए, (रोएमो) अत्यंत अभिलाषाथी रुचिवाळा करीए छीए—रुचावीए छीए, (फासेमो) सेववावडे स्पर्श करीए छीए, (पालेमो) वारंवार पाळीए छीए, तथा (अणुपालेमो) जावजीव पाळीए छीए.

ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तियतेहिं रोयतेहिं फासतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपक्खस्स जं वाइय पढिय परियट्टियं पुच्छिय अणुपेहियं अणुपालियं तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्ति कट्टु उवसंपज्जित्ता णं विहरामि ॥

(तान् भावान् श्रद्दधानैः प्रतिपद्यमानैः रोचयद्भिः स्पृशद्भिः पालयद्भिः अनुपालयद्भिः अन्तःपक्षस्य यत् वाचित पठित परिवर्तितं पृष्टम् अनुप्रेक्षितम् अनुपालित तत् दुःखक्षयाय कर्मक्षयाय मोक्षाय बोधिलाभाय संसारोत्तारणाय इति कृत्वा उपसंपद्य विहरामः ॥)

(ते भावे) ते भावोने (सद्दहंतेहिं) 'आ आम ज छे' एवी रीते सामान्यपणे श्रद्धा करता, (पत्तियतेहिं) प्रीतिथी अंगीकार करता, (रोयतेहिं) अत्यंत अभिलाषाए करीने सेवन करवामां सन्मुख थइने रुचावता, (फासतेहिं) सेववावडे स्पर्श करता, (पालंतेहिं) वारंवार पालन करता तेथी (अणुपालतेहिं) जावज्जीव पालन करता एवा अमोए (अंतोपक्खस्स) पखवाडीया मध्ये (जं) जे कांइ (वाइय) वांच्यु होय एटले बीजाने आप्यु होय, भणाव्यु होय, (पढिय) पोते भण्युं होय, (परियट्टिय) परावर्तन कर्युं होय एटले सूत्रथी गण्युं होय, (पुच्छिय) पूछ्यु होय एटले प्रथम भणेला सूत्रादिकमां शंका थये छते प्रश्न कर्यो होय, (अणुपेहिय) अर्थ भूली जवाना भयथी विचार्युं होय–मनन कर्युं होय, तेथी (अणुपालियं) आ सर्व प्रकारवडे पाळ्युं होय एटले शुद्ध अनुष्ठान कर्युं होय (ते) ते सर्व (दुक्खक्खयाए) शरीर अने मनसंबंधी दुःखना

क्षयने माटे, (कम्मक्खयाए) ज्ञानावरणीयादिक कर्मना विनाशने माटे, (मोक्खयाए) मोक्षने माटे, (बोहिलाभाए) बोधिना लाभने माटे एटले परभवमां सद्धर्मनी प्राप्ति माटे, (संसारुत्तारणाए) संसारनो पार पामवा माटे अमारे थशे (त्ति कट्टु) एम करीने एटले ए हेतुथी (उवसंपज्जित्ता णं) ते सर्व अंगीकार करीने (विहरामि) अमे विचरीए छीए एटले मासकल्पादिक साधुना विहारवडे वर्तीए छीए. तथा—

अंतोपक्खस्स जं न वाइयं न पढियं न परियट्टियं न पुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संते बले संते वीरिए संते पुरिसकारपरक्कमे, तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जामो, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(अन्तःपक्षस्य यत् न वाचितं न पठितं न परिवर्त्तितं न पृष्टं नानुप्रेक्षितं नानुपालितं सति बले सति वीर्ये सति पुरुषकारपराक्रमे, तत् आलोचयामः प्रतिक्रमामः निन्दामः गर्हामः व्यतिवर्तयामः (वित्रोट्यामः विकुट्टयामः वा) विशोधयामः अकरणतयाऽभ्युत्तिष्ठामः यथार्हं तपःकर्म प्रायश्चित्तं प्रतिपद्यामहे, तस्य मिथ्या मे दुष्कृतम् ॥)

(अंतोपक्खस्स) पखवाडीयानी मध्ये अमे (जं) जे (न वाइयं) न वांच्युं होय एटले बीजाने आप्युं न होय, (न पढियं) पोते भण्युं न होय, (न परियट्टियं) परावर्तन कर्युं न होय एटले गण्युं न होय, (न पुच्छियं) शंका थये छते

विचार्युं न होय एटले भूली जवाना भयथी चिंतवन कर्युं न होय तथा (नाणुपालिय) पाळ्यु पूळ्यु न होय, (नाणुपेहिय) विचार्युं न होय एटले भूली जवाना भयथी चिंतवन कर्युं न होय तथा (नाणुपालिय) पाळ्यु न होय-अनुष्ठान कर्युं न होय. शु छतां आ सर्व न कर्युं होय? (सते बले) शरीरसबंधी बळ छतां, (सते वीरिए) आत्मानु वीर्य छतां तथा (सते पुरिसकारपरकमे) पुरुषपणाना अभिमानरूप पराक्रम छतां पण अमे जे वांच्यु विगेरे न होय (तस्स) ते सर्वने अमे (आलोएमो) आलोचीए छीए एटले गुरुने निवेदन करीए छीए, (पडिकमामो) प्रतिक्रमण करीए छीए-पाछा फरीए छीए, (निंदामो) आत्मसाक्षीए निंदीए छीए, (गरिहामो) गुरुनी समक्ष गर्हा करीए छीए, (विउट्टेमो) अवाचनादिकना अनुबंधनो विच्छेद-नाश करीए छीए, (विसोहेमो) शोधीए छीए एटले दोषरूपी पंकथी मलिन थयेला आत्माने निर्मळ करीए छीए, (अकरणयाए) फरीथी तेम नहीं करवावडे करीने (अब्भुट्ठेमो) उद्यमवंत थईए छीए, तथा (अहारिहं) अपराधने उचित एवा (तवोकम्म) नीवि, विगय आदिक तप करवारूप (पायच्छित्त) प्रायश्चित्तने (पडिवज्जामो) अमे अंगीकार करीए छीए, तथा (तस्स) ते अवाचन, अपठन विगेरे दोषना (दुक्कड) दुष्कृतने-पापने (मिच्छामि) अमे मिथ्या करीए छीए—मिथ्यादुष्कृत आपीए छीए

आ प्रमाणे आवश्यकश्रुत कह्यु हवे आवश्यक सिवाय बीजा श्रुतसंबंधी कहेवानो अवसर छे. ते श्रुत पण बे प्रकारनु छे-कालिक अने उत्कालिक. तेमां जे श्रुत असज्झाय न होय तो दिवस अने रात्रिनी पहेली अने छेल्ली ए बे पोरसीमां ज भणाय ते श्रुत काळे-काळवेळाए नीपजेलु होवाथी कालिक कहेवाय छे, तथा जे श्रुत काळवेळा अने पांच प्रकारना असज्झाय सिवाय सर्व वखते भणाय छे ते उत्कालिक कहेवाय छे. तेमां प्रथम उत्कालिक श्रुत कहे छे.—

नमो तेसिं खमासमणाणं, जेहिं इमं वाइयं अंगबाहिरं उक्कालियं भगवंतं। तं जहा—दसवेआलियं कप्पिआकप्पिअं चुल्लकप्पसुअं महाकप्पसुअं ओवाइअं रायप्पसेणिअं जीवाभिगमो पण्णवणा महापण्णवणा नंदी अणुओगदाराइं देविंदत्थओ तंदुलवेआलिअं चंदाविज्झयं पमायप्पमायं पोरिसिमंडलं मंडलप्पवेसो गणिविज्जा विज्जाचरणविणिच्छओ झाणविभत्ती मरणविभत्ती आयविसोही (चरण[1]विसोही मरणविसोही) संलेहणासुअं वीअरायसुअं विहारकप्पो चरणविही आउरपच्चक्खाणं महापच्चक्खाणं ॥

(नमस्तेभ्यः क्षमाश्रमणेभ्यः, यैः इदं वाचितम् अङ्गबाह्यम् उत्कालिकं भगवत्। तद्यथा—दशवैकालिकं कल्प्याकल्प्यं क्षुल्लकल्पश्रुतं महाकल्पश्रुतम् औपपातिकं राजप्रश्नीयं जीवाभिगमः प्रज्ञापना महाप्रज्ञापना नन्दी अनुयोगद्वाराणि देवेन्द्रस्तवः तंडु(दु)लवैचारिकं चन्द्रावेध्यकं प्रमादाप्रमादं पौरुषीमण्डलं मण्डलप्रवेशः गणिविद्या विद्याचरणविनिश्चयः ध्यानविभक्तिः मरणविभक्तिः आत्मविशुद्धिः—शोधिः (चरणविशोधिः मरणविशोधिः) संलेखनाश्रुतं वीतरागश्रुतं विहारकल्पः चरणविधिः आतुरप्रत्याख्यानं महाप्रत्याख्यानम् ॥)

---

१ एतदध्ययनद्वयपाठः क्वचित् दृश्यते ।

(नमो तेसिं खमासमणाणं) ते क्षमाश्रमणोने एटले सूत्रार्थने आपनारा गुरुओने नमस्कार थाओ, के (जेहिं) जे-ओए (इमं) आ (अंगबाहिर) अंगबाह्य (उक्कालिअं) उत्कालिक एवुं अने (भगवंतं) मोटा अर्थरूप समृद्धिवाळु श्रुत (वाइयं) अमोने आप्यु छे. (त जहा) ते उत्कालिक श्रुत आ प्रमाणे छे.—(दसवेआलिअं) दशवैकालिक १, (कप्पि-आकप्पिअं) कल्प्याकल्प्य २, (चुल्लकप्पसुअं) चुल्ल (नानु) कल्पश्रुत ३, (महाकप्पसुअं) महाकल्पश्रुत ४, (ओवाइअं) औपपातिक ५, (रायप्पसेणिअं) रायपसेणी–राजप्रश्नीय ६, (जीवाभिगमो) जीवाभिगम ७, (पण्णवणा) प्रज्ञापना ८—(महापण्णवणा) महाप्रज्ञापना ९, (नंदी) नंदी १०, (अणुओगदाराइं) अनुयोगद्वार ११, (देविंदत्थओ) देवेंद्रस्तव १२, (तंदुलवेआलिअं) तंदुलवैचारिक १३, (चंदाविज्झय) चन्द्रावेध्यक १४, (पमायप्पमाय) प्रमादाप्रमाद १५, (पोरिसि-मंडल) पौरुषीमंडळ १६, (मंडलप्पवेसो) मंडळप्रवेश १७, (गणिविज्जा) गणिविद्या १८, (विज्जाचरणविणिच्छओ) विद्या चरणविनिश्चय, १९ (झाणविभत्ती) ध्यानविभक्ति २०, (मरणविभत्ती) मरणविभक्ति २१, (आयविसोही) आत्मवि-शुद्धि २२, (संलेहणासुअं) संलेखनाश्रुत २३, (वीअरायसुअं) वीतरागश्रुत २४, (विहारकप्पो) विहारकल्प २५, (चरणविहि) चरणविधि २६, (आउरपच्चक्खाण) आतुरप्रत्याख्यान २७ तथा (महापच्चक्खाण) महाप्रत्याख्यान २८—आ प्रमाणे आ २८ अध्ययनो कह्यां, ते उपलक्षण होवाथी आटलां ज छे एम नथी; बीजां पण छे एम जाणवु.

सव्वेहिं पि एयम्मि अंगबाहिरे उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सगंथे सनिज्जुत्तिए ससंगह-

खिए जे गुणा वा भावा वा अरहंतेहिं भगवंतेहिं पण्णत्ता वा परूविआ वा ते भावे सद्दहामो पत्तिआमो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो। ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तिअंतेहिं रोअंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपक्खस्स जं वाइअं पढिअं परियट्टिअं पुच्छिअं अणुपेहिअं अणुपालिअं तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्ति कट्टु उवसंपज्जित्ता णं विहरामि। अंतोपक्खस्स जं न वाइअं न पढिअं न परियट्टिअं न पुच्छिअं नाणुपेहिअं नाणुपालिअं संते बले संते वीरिए संते पुरिसक्कारपरक्कमे, तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जामो तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

(एतत्सूत्रस्य संस्कारः पूर्ववत् ज्ञेयः)

आ सूत्रनो अर्थ प्रथम आवी गयो छे ते प्रमाणे जाणवो.

आ प्रमाणे उत्कालिकश्रुत कह्युं. हवे कालिकश्रुत कहे छे.

नमो तेसिं खमासमणाणं, जेहिं इमं वाइअं अंगबाहिरं कालिअं भगवंतं। तं जहा–उत्तरज्झयणाइं दसाओ कप्पो ववहारो इसिभासिआइं निसीहं महानिसीहं जंबुद्दीवपन्नत्ती सूरपन्नत्ती चंद-

पन्नत्ती दीवसागरपन्नत्ती खुड्डियाविमाणपविभत्ती महल्लियाविमाणपविभत्ती अंगचूलिआए वग्ग-चूलिआए विवाहचूलिआए अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए धरणोववाए वेसमणोववाए वेलधरोववाए देविंदोववाए उट्ठाणसुए समुट्ठाणसुए नागपरिआवलिआणं निरयावलिआणं कप्पि-आणं कप्पवडिंसयाणं पुप्फिआणं पुप्फचूलिआणं (वंण्हिआणं) वण्हिदसाणं आसीविसभावणाणं दिट्ठीविसभावणाणं चारण (सुमिण)भावणाणं महासुमिणभावणाणं तेअग(ग्गि)निसग्गाणं ॥

(नमस्तेभ्य क्षमाश्रमणेभ्यः, यैः इदं वाचितम् अङ्गबाह्य कालिकं भगवत्। तद्यथा–उत्तराध्ययनानि दशाः कल्प[1] व्यवहारः ऋषिभाषितानि निशीथं महानिशीथं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिः सूरप्रज्ञप्तिः चन्द्रप्रज्ञप्तिः द्वीपसागर-प्रज्ञप्तिः क्षुल्लकाविमानप्रविभक्तिः महतीविमानप्रविभक्तिः अङ्गचूलिका वर्गचूलिका विवाहचूलिका अरुणोप-पातः वरुणोपपातः गरुडोपपात धरणोपपातःवैश्रमणोपपातः वेलन्धरोपपातः देवेन्द्रोपपातः उत्थानश्रुत स-मुत्थानश्रुत नागपरिज्ञावलिकाः निरयावलिकाः कल्पिकाः कल्पावतंसिकाः पुष्पिताः पुष्पचूलिकाः(वृष्णिकाः) वृष्णिदशाः आशीविषभावनाः दृष्टिविषभावनाः चारण (स्वप्न) भावनाः महास्वप्नभावना तैजसनिसर्गाः ॥)

(तेसिं) ते (खमासमणाण) क्षमाश्रमणोने (नमो) नमस्कार थाओ, के (जेहिं) जेओए (इमं) आ (अंगबाहिरं)

---

१ आ पद मोटी टीकामा तथा अवचूरिमा नथी, मूळमा तेम ज अर्थमा पण नथी, तेम ज छत्रीशनी गणत्रीमां पण नथी

अंगबाह्य (भगवंतं) अतिशयादिक गुणवाळुं (कालिअं) कालिकश्रुत (वाइअं) अमने आप्युं छे. (तं जहा) ते आ प्रमाणे—(उत्तरज्झयणाइं) उत्तराध्ययन १, (दसाओ) दशाश्रुतस्कंध २, (कप्पो) बृहत्कल्प ३, (ववहारो) व्यवहार ४, (इसिभासिआइं) ऋषिभाषित, ५ (निसीहं) निशीथ ६, (महानिसीहं) महानिशीथ ७, (जंबुदीवपन्नत्ती) जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति ८, (सूरपन्नत्ती) सूरप्रज्ञप्ति ९, (चंदपन्नत्ती) चंद्रप्रज्ञप्ति १०, (दीवसागरपन्नत्ती) द्वीपसागरप्रज्ञप्ति ११, (खुड्डिआविमाणपविभत्ती) क्षुद्रकाविमानप्रविभक्ति १२, (महल्लियाविमाणपविभत्ती) महतीविमानप्रविभक्ति १३, (अंगचूलिआए) अंगचूलिका १४, (वग्गचूलिआए) वर्गचूलिका १५, (विवाहचूलिआए) विवाहचूलिका १६, (अरुणोववाए) अरुणोपपात १७, (वरुणोववाए) वरुणोपपात १८, (गरुलोववाए) गरुडोपपात १९, (धरणोववाए) धरणोपपात २०, (वेसमणोववाए) वैश्रमणोपपात २१, (वेलंधरोववाए) वेलंधरोपपात २२, (देविंदोववाए) देवेंद्रोपपात २३, (उट्ठाणसुए) उत्थानश्रुत २४, (समुट्ठाणसुए) समुत्थानश्रुत २५, (नागपरिआवलिआणं) नागपरिज्ञावलिका २६, (निरयावलिआणं) निरयावलिका (कप्पिआणं) कल्पिका २७, (कप्पवडिंसयाणं) कल्पावतंसक २८, (पुप्फिआणं) पुष्पिता २९, (पुप्फचूलिआणं) पुष्पचूलिका ३०, (वण्हिदसाणं) वृष्णिदशा ३१, (आसीविसभावणाणं) आशीविषभावना ३२, (दिट्ठीविसभावणाणं) दृष्टिविषभावना ३३, (चारणभावणाणं) चारणभावना ३४, (महासुमिणभावणाणं) महास्वप्नभावना ३५, तथा (तेअग्गिनिसग्गाणं) तैजसनिसर्ग ३६—आ छत्रीश अध्ययनो पण उपलक्षण जाणवां; कारण के श्री ऋषभदेवस्वामीना वखतमां चोराशी हजार प्रकीर्णको हता,

१ हवे पछीना पांच नाम आ निरयावलिकाना विभागरूप ज छे.

मध्यम बावीश तीर्थंकरोना वखतमां संख्याता हजार प्रकीर्णको हता, एटले के जेना जेटला शिष्यो तेटला प्रकीर्णको होय छे, तथा श्रीवर्धमानस्वामीना वखतमां चौद हजार प्रकीर्णको (प्रकीर्णसूत्रो) हता.

सव्वेहिं पि एयम्मि अंगबाहिरे कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सगथे सनिज्जुत्तिए ससंगहणिए जे गुणा वा भावा वा अरहतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्ता वा परूविआ वा ते भावे सद्दहामो पत्तिआमो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो । ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तिअतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालतेहि अणुपालतेहिं अतोपक्खस्स जं वाइय पढिअं परियट्टिअ पुच्छिअं अणुपेहिअं अणुपालिअं, तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्ति कट्टु उवसंपज्जित्ता णं विहरामि। अंतोपक्खस्स ज न वाइअं न पढिअं न परियट्टिअं न पुच्छिअ नाणुपेहिअं नाणुपालिअं संते बले संते वीरिए संते पुरिसकारपरक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जामो तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

(एतस्यापि सूत्रस्य संस्कारः पूर्ववत्॥)

आ सर्व सूत्रनो अर्थ प्रथमनी जेम जाणवो.

आ प्रमाणे कालिकश्रुत कह्युं. हवे अंगप्रविष्ट श्रुतने कहे छे.

नमो तेसिं खमासमणाणं, जेहिं इमं वाइअं दुवालसंगं गणिपिडगं भगवंतं। तं जहा—आयारो सूयगडो ठाणं समवाओ विवाहपन्नत्ती नायाधम्मकहाओ उवासगदसाओ अंतगडदसाओ अणुत्तरोववाइअदसाओ पण्हावागरणं विवागसुयं दिट्ठिवाओ ॥

(नमस्तेभ्यः क्षमाश्रमणेभ्यः, यैः इदं वाचितं द्वादशाङ्गं गणिपिटकं भगवत्। तद्यथा—आचारः सूत्रकृतं स्थानं समवायः विवाहप्रज्ञप्तिः ज्ञाताधर्मकथा उपासकदशाः अन्तकृतदशाः अनुत्तरोपपातिकदशाः प्रश्नव्याकरणं विपाकश्रुतं दृष्टिवादः ॥)

(तेसिं) ते (खमासमणाणं) क्षमाश्रमणने (नमो) नमस्कार थाओ, के (जेहिं) जेओए (इमं) आ (गणिपिडगं) गणिपिटक—गणि एटले गणधरो, तेओना कहेला अर्थना साररूप—उत्तम भाजनरूप (भगवंतं) अतिशयादिक गुणयुक्त (दुवालसंगं) द्वादशांग—बार अंग (वाइअं) अमने आपेल छे. (तं जहा) ते आ प्रमाणे—(आयारो) आचारांग १, (सूयगडो) सूत्रकृतांग २, (ठाणं) स्थानांग ३, (समवाओ) समवायांग ४, (विवाहपन्नत्ती) विवाहप्रज्ञप्ति—भगवती ५, (नायाधम्मकहाओ) ज्ञाताधर्मकथा ६, (उवासगदसाओ) उपासकदशा ७, (अंतगडदसाओ) अंतकृतदशा ८, (अणुत्तरोववाइअदसाओ) अनुत्तरोपपातिकदशा ९, (पण्हावागरणं) प्रश्नव्याकरण १०, (विवागसुयं) विपाक-

श्रुत ११, (दिट्ठिवाओ) दृष्टिवाद १२.

सव्वेहिं पि एयम्मि दुवालसंगे गणिपिडगे भगवते ससुत्ते सअत्थे सगंथे सनिज्जुत्तिए ससंगहणिए जे गुणा वा भावा वा अरहतेहिं भगवतेहिं पन्नत्ता वा परूविया वा, ते भावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो, ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तिअंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपक्खस्स जं वाइअं पढिअं परियट्टिअं पुच्छिअं अणुपेहिअं अणुपालिअं, तं दुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्ति कट्टु उवसंपज्जित्ता णं विहरामि। अंतोपक्खस्स जं न वाइअं न पढिअ न परियट्टिअ न पुच्छिअं नाणुपेहिअं नाणुपालिअं संते बले सते वीरिए सते पुरिसकारपरक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जामो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(अस्यापि सूत्रस्य संस्कारः पूर्ववत्) आ सूत्रनो पण अर्थ प्रथमनी जेम जाणवो.

हवे श्रुतज्ञान आपनार आचार्यने नमस्कार करवा माटे तथा पोताना प्रमादनु मिथ्यादुष्कृत देवा माटे कहे छे

नमो तेसिं खमासमणाणं, जेहिं इमं वाइयं दुवालसंगं गणिपिडगं भगवंतं। (तं जहा) सम्मं काएणं फासंति पालंति पूरंति तीरंति किट्टंति सम्मं आणाए आराहंति। अहं च नाराहेमि तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

(नमस्तेभ्यः क्षमाश्रमणेभ्यः, यैः इदं वाचितं द्वादशाङ्गं गणिपिटकं भगवत्। (ये चेदं) सम्यक् कायेन स्पृशन्ति पालयन्ति पूरयन्ति तीरयन्ति कीर्तयन्ति सम्यगाज्ञया आराधयन्ति। अहं च नाराधयामि, तस्मिन् मिथ्या मे दुष्कृतम्)

(तेसिं) ते (खमासमणाणं) क्षमाश्रमणोने एटले क्षमादि गुणोवडे शोभित एवा गुरुओने (नमो) नमस्कार हो, के (जेहिं) जे क्षमाश्रमणोए (इमं) आ (गणिपिडगं) गणि एटले आचार्य तेनी पिटक एटले रत्नादिकनी पेटी जेवी पेटी अर्थात् सर्व अर्थना सारभूत एवुं अने (भगवंतं) समग्र ऐश्वर्यादिक अतिशयोवाळुं (दुवालसंगं) द्वादशांगश्रुत (वाइयं) अमने आप्युं छे एटले सूत्र अने अर्थवडे रच्युं छे तेमने नमस्कार हो, तथा जे क्षमाश्रमणो आ द्वादशांगश्रुतने (सम्मं) सम्यक् प्रकारे (काएण) कायावडे एटले केवळ मनवडे ज नहीं कायाए करीने पण (फासंति) फरसे छे एटले ग्रहण करवाने वखते विधिपूर्वक ग्रहण करे छे, (पालंति) वारंवार अभ्यास करवावडे रक्षण करे छे, (पूरंति) परिपूर्ण करे छे, (तीरंति) भूल्या विना जन्मना पारने पमाडे छे, (किट्टंति) सारी रीते कीर्तन करे छे तथा (सम्मं) सम्यक्

१ आ पद छापेली प्रतोमां नथी, अर्थसंगत पण नथी. साधु–साध्वीओना मुख पाठे छे.

प्रकारे (आज्ञाए) तेमां कहेली आज्ञावडे (आराहति) आराधना करे छे. (अहं च) अने हुं (नाराहेमि) तेनी जे कांइ आराधना करतो नथी एटले प्रमादथी पाळतो नथी-ते प्रमाणे वर्ततो नथी (तस्स) ते नहीं आराधवाथी थयेलुं (मे) मारुं (दुक्कडं) दुष्कृत (मिच्छा) मिथ्या हो अर्थात् अनाराधनामयथी थयेला अपराधनी हुं माफी मागुं छुं

हवे आ पाक्षिकसूत्रनी समाप्तिने विषे श्रुतदेवतानी स्तुति करे छे.—

सुअदेवया भगवई, नाणावरणीयकम्मसंघायं। तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुयसायरे भत्ती ॥१॥

(श्रुतदेवता भगवती, ज्ञानावरणियकर्मसङ्घातम्। तेषां क्षपयतु सततं, येषां श्रुतसागरे भक्तिः ॥१॥)

(भगवई) पूज्य एवी (सुअदेवया) श्रुतदेवता-श्रुतनी अधिष्ठाता देवी (तेसिं) तेओना (नाणावरणीयकम्मसंघायं) ज्ञानावरणीयकर्मना समूहने (सययं) निरंतर (खवेउ) खपावो एटले नाश करो के (जेसिं) जेओने (सुयसायरे) श्रुतरूपी सागरने विषे (भत्ती) भक्ति एटले बहुमान अने विनय छे

अहीं कोइ शंका करे के—श्रुतरूपी देवतानी आ स्तुति करवी योग्य छे, परंतु श्रुतनी अधिष्ठायक देवता तो व्यंतरादिक होय छे, ते कांइ कर्मनो क्षय करवामां समर्थ नथी माटे तेनी स्तुति शा माटे करवी? आ शंकानुं समाधान ए छे के—श्रुतना अधिष्ठायक देवतामां रहेलुं शुभ प्रणिधान पण तेना स्मरण करनारना कर्मनो क्षय करवामां कारणरूप थाय छे, एम शास्त्रमां कहेलुं छे.

॥ इति श्रीपाक्षिकसूत्रम् ॥

हवे खामणा कहे छे.

इच्छामि खमासमणो अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतरपक्खियं खामेउं। पन्नरसण्हं दिवसाणं पन्नरसण्हं राईणं जं किंचि अपत्तियं परपत्तियं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न याणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

(इच्छामि क्षमाश्रमण ! अभ्युत्थितोऽस्मि अभ्यन्तरपाक्षिकं क्षमयितुम्। पञ्चदशानां दिवसानां पञ्चदशानां रात्रीणां यत्किञ्चित् अप्रीतिकं प्रकृष्टमप्रीतिकं (परप्रत्ययं वा) भक्ते पाने विनये वैयावृत्ये आलापे संलापे उच्चासने समासने अन्तरभाषायाम् उपरिभाषायां यत्किञ्चित् मम विनयपरिहीनं सूक्ष्मं वा बादरं वा यूयं जानीथ, अहं न जानामि, तस्मिन् मिथ्या मे दुष्कृतम् ॥)

(खमासमणो) हे क्षमाश्रमण—हे गुरु ! (अब्भिंतरपक्खियं) पखवाडीयाने विषे उत्पन्न थयेला अपराधने (खामेउं) क्षमाववाने (इच्छामि) हुं इच्छुं छुं. केवळ इच्छुं छुं एटलुं ज नहीं पण (अब्भुट्ठिओमि) हुं उभो थयो छुं एटले खमाववानो प्रारंभ करुं छुं. ते आ प्रमाणे-(पन्नरसण्हं) पंदर (दिवसाणं) दिवसो मध्ये तथा (पन्नरसण्हं) पंदर (राईणं) रात्रिओ

मज्झे (ज किंचि) जे कांइ सामान्यथी के विशेषथी तमारे विषे (अपत्तिय) अप्रीति करनारुं, तथा (परपत्तिय) अत्यंत अप्रीति करनारु अथवा परप्रत्यय एटले परना हेतुवाळु के पोताना हेतुवाळु अप्रीति करनारु माराथी थयु होय ते मारु दुष्कृत मिथ्या थाओ. तेमां तमारा (भत्ते) भोजनने विषे, (पाणे) पाणीने विषे, (विणए) विनयने विषे, (वेयावच्चे) औषध विगेरेना वैयावच्चने विषे, (आलावे) आलापने विषे एटले तमारी साथे एक वार बोलवाने विषे, (संलावे) वारंवार परस्पर वात करवाने विषे, (उच्चासणे) तमाराथी उचा आसनपर बेसवाने विषे, (समासणे) तमारी समान आसने बेसवाने विषे, (अंतरभासाए) तमारा भाषणनी वचमां बोलवाने विषे, (उवरिभासाए) तमारा बोली रह्या पछी तमारा करतां वधारे बोलवाने विषे (ज किंचि) जे कांइ सामान्यपणे के विशेषपणे (मज्झ) मारु (सुहुम वा) सूक्ष्म (बायर वा) अथवा बादर (विणयपरिहीणं) विनयरहित अनुचितपणु थयु होय ते (तुब्भे) तमे (जाणह) जाणो छो, (अहं न याणामि) हु जाणतो नथी (तस्स) ते अपराधने विषे (मि दुक्कड) मारु दुष्कृत (मिच्छा) मिथ्या थाओ-हु आपने ते मारा पापनु मिथ्या दुष्कृत आपु छु-खमावु छु.

॥ अहमवि खामेमि तुब्भे ॥

(अहमपि क्षमयामि त्वाम्)

उपर प्रमाणे खमाववाना प्रारंभमां आचार्य कहे के—(अहमवि) हु पण (तुब्भे) तने (खामेमि) खमावुं छु.

हवे पाक्षिक खामणा ४ कहे छे.

१ इच्छामि खमासमणो पियं च मे जं भे हट्ठाणं तुट्ठाणं अप्पायंकाणं अभग्गजोगाणं सुसीलाणं सुव्वयाणं सायरियउवज्झायाणं नाणेणं दंसणेणं चरित्तेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणाणं बहुसुभेण भे दिवसो पोसहो पक्खो वइक्कंतो, अन्नो य भे कल्लाणेणं पज्जुवट्ठिओ, सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ।

(इच्छामि क्षमाश्रमण ! प्रियं च मे यत् भवतां हृष्टानां तुष्टानाम् अल्पातङ्कानाम् अभग्नयोगानां सुशीलानां सुव्रतानां साचार्योपाध्यायानां ज्ञानेन दर्शनेन चारित्रेण तपसाऽऽत्मानं भावयतां बहुशुभेन भगवन्तः ! दिवसः पौषधः पक्षो व्यतिक्रान्तः, अन्यश्च भवतां कल्याणेन (युक्तः) पर्युपस्थितः, शिरसा मनसा मस्तकेन वन्दे)

शिष्य कहे छे—(खमासमणो) हे क्षमाश्रमण गुरुजी ! (इच्छामि) हुं इच्छुं छुं एटले आगळ हुं जे कहुं छुं ते इच्छापूर्वक कहुं छुं. (च) वळी (मे) मने (पियं) प्रिय पण छे. कोइ वस्तु प्रिय नहीं छतां पण कारणने लीधे इच्छवामां आवे छे, तेथी अहीं इच्छा अने प्रीति बन्ने कहेवा माटे प्रिय पण छे एम कह्युं. शुं इच्छुं छुं अने शुं प्रिय छे ? ते कहे छे के-(जं) जे (मे) तमारो, तमे केवा छो ? (हट्ठाणं) हर्ष पामेला एटले रोगरहित होवाथी हर्षित

थयेला तथा (तुट्ठाण) संतुष्ट थयेला तथा (अप्पायंकाणं) अल्प शब्द अभाववाचक होवाथी तत्काळ नाश करनारा असाध्य रोगरहित अथवा सामान्य रीते नीरोगी अथवा सर्वथा प्रकारे रोगरहितपणानो संभव होतो नथी तेथी अल्प रोगवाळा तथा (अभग्गजोगाण) नथी भग्न थया संयमना योग-मन, वचन, कायाना-योग जेना एवा तथा (सुसीलाण) सारा शीलवाळा तथा (सुव्वयाण) सारा-अतिचाररहित व्रतवाळा (सायरियउवज्झायाण) आचार्य अने उपाध्यायसहित एवा तथा (नाणेण) ज्ञानवडे, (दंसणेण) दर्शनवडे-समकितवडे, (चरित्तेण) चारित्रवडे अने (तवसा) तपवडे (अप्पाण) पोताना आत्माने (भावेमाणाण) भावना करता एवा तमारो (पोसहो) पौषधरूप एटले पर्वरूप (दिवसो) दिवस अने (पक्खो) अर्ध मासरूप पक्ष (बहुसुभेण) घणा सुखे करीने (भे) हे भगवंत! (वइक्कंतो) व्यतीत थयो छे-वीती गयो छे, (य) अने (भे) तमारो (अन्नो) बीजो पक्ष (कल्लाणेण) कल्याणे करीने सहित (पज्जुवट्ठिओ) प्राप्त थयो छे. आ प्रमाणे मंगळवचन कहीने शिष्य गुरुने वंदना करे छे, तेथी करीने (सिरसा) मस्तकवडे तथा (मणसा) मनवडे उपलक्षणथी वचनवडे पण (मत्थएण वंदामि) हुं आपने वंदना करुं छुं अहीं मत्थएण वंदामि ए समग्र पदनो वंदना करुं छुं एवो अर्थ सूत्रोमां घणे ठेकाणे रूढ छे, तेथी पुनरुक्त दोष नथी

॥ तुब्भेहिं समं ति ॥

(युष्माभिः सममिति)

गुरु कहे के—(तुब्भेहिं समं ति) तमारी साथे ए सर्व सिद्ध थयुं छे.

२ इच्छामि खमासमणो पुव्विं चेइयाइं वंदित्ता नमंसित्ता तुब्भण्हं पायमूले विहरमाणेणं जे केइ बहुदेवसिया साहुणो दिट्ठा समाणा वा वसमाणा वा गामाणुगामं दूइज्जमाणा वा राइणिया संपुच्छंति, ओमरायणिया वंदंति, अज्जया वंदंति, अजिआओ वंदंति, सावया वंदंति, सावियाओ वंदंति, अहं पि निस्सल्लो निक्कसाओ त्ति कट्टु सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ अहमवि वंदावेमि चेइयाइं ॥

(इच्छामि क्षमाश्रमण ! पूर्वं चैत्यानि वन्दित्वा नत्वा युष्माकं पादमूले विहरता (मया) ये केचन बहुदैवसिकाः साधवो दृष्टाः समाना वा वसमाना वा ग्रामानुग्रामं द्रवन्तो वा रात्निकाः संपृच्छन्ति, अवमरात्निका वन्दन्ते, आर्या वन्दन्ते, आर्यिका वन्दन्ते, श्रावका वन्दन्ते, श्राविका वन्दन्ते, अहमपि निःशल्यो निःकषाय इति कृत्वा शिरसा मनसा मस्तकेन वन्दे ॥ अहमपि वन्दापयामि (वन्दयामि) चैत्यानि)

(खमासमणो) हे क्षमाश्रमण ! (इच्छामि) चैत्यवंदापन अने साधुवंदापन आपने निवेदन करवा माटे हुं इच्छुं छुं के-(पुव्विं) पूर्वे-विहार करवाना काळ पहेलां (चेइयाइं) जिनेश्वरोनी प्रतिमाओने (वंदित्ता) गुणनी स्तुति करवावडे वांदीने, (नमंसित्ता) कायावडे नमस्कार करीने, क्यां ? (तुब्भण्हं) तमारा (पायमूले) चरणनी समीपे वांदीने पछी (विहरमाणेणं) एक गामथी बीजे गाम विहार करता एवा में (जे केइ) जे कोइ (बहुदेवसिया) घणा दिवसना दीक्षा-

जोया होय, ते साधु केवा ? (समाणा वा) जंघाबळ चीण थवाथी वृद्धवास-पर्यायवाळा (साहुओ) साधुओ (दिट्ठा) जोया होय, ते साधु केवा ? (समाणा वा) जंघाबळ चीण थवाथी वृद्धवास-पणाए करीने आश्रय करेला चेत्रनी बहार नहीं विचरनारा अथवा (वसमाणा वा) ऋतुबद्ध काळे मासकल्पी विहार कर-नारा अने वर्षाकाळे एक स्थळे चातुर्मास करनारा ए ज कारण माटे (गामाणुगाम) एक गामथी बीजे गाम (दूइज्जमाणा वा) विहार करता अथवा गामने विषे एक रात्रि रहेता अने नगरने विषे पांच रात्रि वसता आ सर्वेनी मध्ये (राइणिया) रात्निक एटले ज्ञानादिक भावरत्नना व्यापारी दीक्षापर्याय माटे एवा आचार्यो में वांद्या थका (सपुच्छति) आपना शरीर कुशलादिकनी वार्ता पूछे छे, (ओमरायणिया) आपथी दीचापर्याये नाना एवा आचार्यो (वदति) आपने वांदे छे अने कुशलादिक तो पूछे ज छे (अज्जया वदति) सामान्य साधुओ वांदे छे, (अज्जिआओ वदति) साध्वीओ वांदे छे, (सा-वया वदति) श्रावको वांदे छे, (सावियाओ वदति) श्राविकाओ वांदे छे (अह पि) हु पण (निस्सल्लो) मायादिक शल्यरहित थयो छु तथा (निक्कसाओ) कषायरहित थयो छु (त्ति कट्टु) एम करीने-ए कारण माटे (सिरसा) मस्तकवडे (मणसा) मनवडे (मत्थएण वदामि) वदना करु छु; तथा (अहमवि) हु पण (वदावेमि चेइयाइ) तमोने चैत्यो वदावु छु एटले अमुक अमुक नगरादिकमा में जे चैत्योने तमारे माटे वांद्या छे तेने तमो पण वांदो.

आ प्रमाणे शिष्य कहे त्यारे गुरु आ प्रमाणे बोले—

॥ मत्थएण वदामि अहं पि तेसिं ति ॥

(मस्तकेन वन्दे अहमपि तानिति)

(अहं पि ' हुं पण (तेसिं) तेमने-ते चैत्यादिकने (मत्थएण वंदामि) मस्तकथी वांदुं छुं.

३ इच्छामि खमासमणो अब्भुट्ठिओमि (उवट्ठिओमि) तुब्भण्हं संतियं अहाकप्पं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा रयहरणं वा अक्खरं वा पयं वा गाहं वा सिलोगं वा सिलोगद्धं वा अट्ठं वा हेउं वा पासिणं वा वागरणं वा तुब्भेहिं चियत्तेणं दिन्नं मए अविणएण पडिच्छियं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ति ॥

(इच्छामि क्षमाश्रमण ! उपस्थितोऽस्मि युष्माकं सत्कं यथाकल्पं वा वस्त्रं वा प्रतिग्रहं वा कंबलं वा पादप्रोञ्छनं वा रजोहरणं वा अक्षरं वा पदं वा गाथां वा श्लोकं वा श्लोकार्धं वाऽर्थं वा हेतुं वा प्रश्नं वा व्याकरणं वा युष्माभिः प्रीत्या दत्तं मयाऽविनयेन प्रतीच्छितं, तस्य (तत्र) मिथ्या मे दुष्कृतमिति)

(खमासमणो) हे क्षमाश्रमण ! (इच्छामि) हुं इच्छुं छुं. (उवट्ठिओमि) हुं मारा आत्माने निवेदन करवा माटे प्राप्त थयो छुं-तत्पर थयो छुं. ते ए के-(तुब्भण्हं संतियं) तमारा संबंधी एटले जे मारा परिभोगमां आवतुं ते आ सर्व तमारुं (अहाकप्पं वा) कल्पे तेवुं-स्थविरकल्पने उचित एवुं (वत्थं वा) वस्त्र, अथवा (पडिग्गहं वा) पात्र, अथवा (कंबलं वा) कांबल, अथवा (पायपुंछणं वा) पादपोंछन, अथवा (रयहरणं वा) रजोहरण, अथवा (अक्खरं वा) अक्षर, अथवा (पयं वा) पद, अथवा (गाहं वा) गाथा, अथवा (सिलोगं वा) श्लोक, अथवा (सिलोगद्धं वा) अर्ध श्लोक, अथवा

(अट्ठं वा) अर्थ, अथवा (हेउ वा) हेतु, अथवा (पसिणं वा) प्रश्न, अथवा (वागरणं वा) उत्तर–आ सर्व वस्तु (तुब्भेहिं) तमोए (चियत्तेण) प्रीतिवडे (दिन्न) मने आपी छे; परतु (मए) में (अविणएण) अविनयवडे (पडिच्छिय) जे ग्रहण करी छे, (तस्स) तेमां (मि) मारु (दुक्कड) दुष्कृत (मिच्छा) मिथ्या थाओ अर्थात् आ वस्तुओ अविनयथी लेतां मने जे पाप लाग्यु होय ते मारुं पाप मिथ्या थाओ–ते पापनु हु मिथ्यादुष्कृत आपु छु

आ प्रमाणे शिष्य कहे त्यारे आचार्य बोले—

॥ आयरियसंतियं ति ॥

(आचार्यसत्कमिति)

(आयरियसंतियं ति) आ सर्व पूर्वाचार्यसबंधी छे अर्थात् मारु कांइ नथी आ प्रमाणेनु वचन अहकारनो त्याग करवा माटे तथा गुरुने विषे भक्ति जणाववा माटे छे

हवे शिक्षा अपायेला शिष्यो ते अनुग्रहने बहुमानता सता आ प्रमाणे कहे छे—

४ इच्छामि खमासमणो अहमपुव्वाइं कयाइं च मे किइकम्माइ आयारमंतरे विणयमंतरे सेहिओ सेहाविओ संगहिओ उवग्गहिओ सारिओ वारिओ चोइओ पडिचोइओ चियत्ता मे पडिचोयणा अब्भुट्ठिओऽहं (उवट्ठिओऽहं) तुब्भण्ह तवतेयसिरीए इमाओ चाउरंतसंसारकंताराओ

साहट्टु नित्थरिस्सामि त्ति कट्टु सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥

(इच्छामि क्षमाश्रमण ! अहमपूर्वाणि कृतानि च मया कृतिकर्माणि आचारान्तरे विनयान्तरे शिक्षितः (सेधितो वा) शिक्षापितः (सेधापितो वा) सङ्गृहीतः उपगृहीतः सारितो वारितः चोदितः प्रतिचोदितः प्रीता मे प्रतिचोदना उपस्थितोऽहं युष्माकं तपस्तेजःश्रिया इतः चातुरन्तसंसारकान्तारात् संहृत्य निस्तरिष्यामि इति कृत्वा शिरसा मनसा मस्तकेन वन्दे)

(खमासमणो) हे क्षमाश्रमण ! (अहं) हुं (अपुव्वाइं) अपूर्व एटले अनागत काळसंबंधी वैयावृत्त्यादि कृतिकर्मो करवा माटे (इच्छामि) इच्छुं छुं, (च) अने वळी (मे) में (कयाइं) पूर्वकाळे करेला जे आपना (किइकम्माइं) वैयावृत्यादि कृतिकर्मो ते प्रत्ये (आयारमंतरे) कोइक ज्ञानादिक आचारने विषे तेनो आंतरो–व्यवधान पाडे छते ज्ञानादिक क्रिया नहीं करे छते, तथा (विणयमंतरे) आसन आपवुं ए विगेरे कोइक विनयने विषे तेनो आंतरो पाडे छते अथवा विनयनी क्रिया नहीं करे छते, (सेहिओ) गुरुए पोते ज मने शिक्षा आपी होय अथवा आचार अने विनयने विषे मने कुशळ कर्यो होय, तथा (सेहाविओ) उपाध्यायादिक पासे मने शिक्षा अपावी होय अथवा आचार अने विनयने विषे मने कुशळ कराव्यो होय, तथा (संगहिओ) मने शिष्यपणे ग्रहण कर्यो होय एटले आश्रय आप्यो होय, तथा (उवग्गहिओ) ज्ञानादिक अने वस्त्रादिकवडे मने आश्रय आप्यो होय, तथा (सारिओ) मने हितमां प्रवर्ताव्यो होय अथवा कार्य संभारी आप्युं होय, तथा (वारिओ) अहितथी निवार्यो होय, तथा (चोइओ) संयमयोगमां स्खलना पामे छते

आ प्रमाणे तमारे करवु उचित नथी एवा वचनवडे मने प्रेरणा करी होय, तथा (पडिचोइओ) तेवी ज रीते वारवार प्रेरणा करी होय (मे पडिचोयणा) आ प्रमाणे मने जे वारवार प्रेरणा करी होय तथा उपलक्षणथी शिवादिक करेल होय ते मने (चियत्ता) प्रीतिकारी छे परतु अप्रीतिकारक नथी, तथा (उवट्ठिओऽहं) प्रेरणा करेला अर्थोनु सपादन करवा हु उद्यमवत थयो छु, तथा (तुब्भण्हं) तमारी (तवतेयसिरीए) तपना तेजनी एटले तपप्रभावनी लक्ष्मीए करीने (इमाओ) आ प्रत्यक्ष एवा (चाउरतससारकतराओ) नरकादि गतिना भेदे करीने चार अत-सीमा (विभाग)-वाळा ससाररूप अरण्यथी ;(साहट्टु) कषाय, इद्रियो अने योगादिकवडे निस्तार पामेला आत्माने सक्षेपीने-सकोचीने (नित्थरिस्सामि) हु निस्तार पामीश-ओळगी जइश, (त्ति कट्टु) एम करीने-ए हेतु माटे (सिरसा) मस्तकवडे (मत्थएण वदामि) हु आपने वांदु छु अर्थात् मन-वचन-कायावडे वांदु छु.

ते सामळी आचार्य कहे छे—

॥ नित्थारगपारगा होह ॥

(निस्तारकपारगा भवत)

(नित्थारग) ससारसमुद्रथी प्राणीओने निस्तारनार अथवा प्रतिज्ञाना निस्तारनार अने (पारगा) ससारसमुद्रने तीरे जनारा (होह) तमे थाओ. आ प्रमाणे गुरुनुं आशीर्वचन छे.

॥ इति क्षामणाविधिः ॥

अथ आहारना ४७ दोष.

सोलस १६ उग्गमदोसा, सोलस १६ उप्पायणा य दोसा य ।
एस १० एसणा य दोसा, गासेसण ५ मिलिय सगयाला ॥ १ ॥

(षोडश उद्गमदोषाः, षोडश उत्पादनाश्च (या) दोषाश्च ।
दश एषणाश्च दोषा, ग्रासैषणामिलिताः सप्तचत्वारिंशत् ॥ १ ॥)

साधु-साध्वीने आहारपाणी वहोरतां (सोलस) सोळ (उग्गमदोसा) उद्‌गमना दोषो एटले आहार उत्पन्न थती वखतना श्रावकथी उत्पन्न थता दोषो लागे छे, तथा (सोलस) सोळ (उप्पायणा य) उत्पादनाना एटले वहोरती वखते साधुथी उत्पन्न थता (दोसा य) दोषो लागे छे, तथा (दस) दश (एसणा य) एषणाना साधु अने श्रावक ए बन्नेथी उत्पन्न थता (दोसा) दोषो लागे छे, तथा (गासेसणामिलिय) आहार करती वखते ग्रासैषणाना-मांडलीना पांच दोषो लागे छे, ते मळीने (सगयाला) कुल सुडतालीश दोषो थाय छे.

प्रथम उद्‌गमना सोळ दोषो कहे छे.—

आहाकम्म[1]मुद्देसिय[2], पूईकम्मे[3] य मीसजाए[4] य । ठवणा[5] पाहुडियाए[6], पाओयर-कीय-पामिच्चे ॥२॥

परिअट्टिए अभिहड–ब्भिन्ने मालोहडे य अच्छिज्जे। अणिसिट्ठं ज्झोयरए, सोलस पिंडुग्गमे दोसा ॥२॥
(आधाकर्मौद्देशिकपूतिकर्माणि च मिश्रजात च। स्थापना प्राभृतिका, प्रादुष्करक्रीतप्रामित्यानि ॥ २ ॥
परिवर्तितमभ्याहृतोद्भिन्ने" मालापहृतं च आच्छियम्। अनिसृष्टमध्यवपूरक, पोडश पिण्डोद्गमा दोषाः ॥२॥)

(आहाकम्म) आधाकर्मदोष-साधुने निमित्ते एटले साधुने मनमां धारण करी सचित्त वस्तुने अचित्त करे अथवा अचित्त वस्तु रांधे ते १. (उद्देसिय) औद्देशिकदोष—पूर्वे तैयार करेला भात लाडु आदिक मुनिने उद्देशीने एटले मनमां धारीने दहीं, गोळ आदिकथी मिश्र करी स्वादिष्ट करे ते २. (पूईकम्मे य) पूतिकर्मदोष-शुद्ध आहार आधाकर्मी आहारमां नांखी मिश्र करवो अथवा आधाकर्मी आहारथी खरडायेली कडछी विगेरेवडे शुद्ध आहार वहोरावत्रो ते ३. (मीसजाए य) मिश्रजातिदोष—जे आहार पोताने माटे तथा साधुने माटे प्रथमथी ज सकल्प करीने बनाववो ते ४. (ठवणा) स्थापनादोष-साधुने माटे क्षीरप्रमुख जूदां करी पोताना वासणमां राखी मूकत्रां ते ५ (पाहुडियाए) प्राभृतिकादोष-विवाहादिक आववानो विलंब होय छतां साधुने गाममां रहेला जाणी ते लाभ लेवा माटे वहेला करवा अथवा विवाहनो समय नजीक छतां साधुनी राह जोवा माटे विलब करवो ते ६. (पाओयर) प्रादुष्करणदोष—अंधकारमां रहेली वस्तु दीवा आदिकवडे अथवा भींत दूर करवावडे प्रकाशित करीने आपवी ते ७. (कीय) क्रीतदोष—साधुने माटे वेचाती लावीने कोइ वस्तु तेमने आपवी ते ८ (पामिच्चे) प्रामित्यदोष—साधुने माटे उधारे लइ आवी ते वस्तु तेमने आपवी ते ९. (परिअट्टिए) परावर्तितदोष—साधुने माटे पोतानी वस्तु बीजानी वस्तु साथे बदलावी तेनी वस्तु साधुने आपवी

ते १०. (अभिहड) अभ्याहृतदोष—आहारादिक सन्मुख लावी साधुने आपे ते ११. (उब्भिन्ने) उद्भिन्नदोष-कुडला विगेरेमांथी घी विगेरे काढवा माटे तेना मुख उपरथी माटी विगेरे दूर करी अथवा कपाट, ताळुं विगेरे उघाडी तेमांथी ते काढी साधुने वहोराववुं ते १२. (मालोहडे य) मालापहृतदोष—मेडी, भोंयरा के शींका उपरथी उतारी साधुने वहोराववुं ते १३. (अच्छिज्जे) आच्छिद्यदोष—पोते बळवान होवाथी बीजानी वस्तु झुंटीने—आंचकीने साधुने आपवी ते १४. (अणिसिट्ठे) अनिसृष्टदोष—जेना एकथी वधारे स्वामी होय एवा आहारने ते सर्वमांथी कोइ एक जण बीजानी रजा विना साधुने वहोरावे ते १५. (अज्झोयरए) अध्यवपूरकदोष—साधुनुं आगमन सांभळी पोताने माटे रंधाता अन्नमां बीजुं वधारे नांखी ते रसोइमां वधारो करे ते १६. (सोलस) आ सोळ (पिंडुग्गमे) पिंडोद्गमना (दोसा) दोषो छे. आ सोळ दोषो दातारथी उत्पन्न थाय छे.

हवे साधुथी उत्पन्न थता उत्पादनाना सोळ दोषो कहे छे.—

धाई[1]दूई[2]निमित्ते[3], आजीव[4]वणीवगे[5] तिगिच्छा[6]य य। कोहे[7] माणे[8] माया[9], लोभे[10] अ हवंति दस एए ॥४॥

पुव्विंपच्छासंथव[11], विज्जा[12]मंते[13] अ चुण्ण[14]जोगे[15] य। उप्पायणाइ दोसा, सोलसमे मूलकम्मे[16] य ॥५॥

(धात्री[1]दूती[2]निमित्तानि[3], आजीव[4]वनीपकौ[5] चिकित्सा[6] च। क्रोधः[7] मानः[8] माया[9], लोभः[10] च भवन्ति दश एते ॥४॥
पूर्वपश्चात्संस्तवः[11], विद्या[12]मन्त्रौ[13] च चूर्ण[14]योगौ[15] च। उत्पादनाया दोषाः, षोडश मूलकर्म[16] च ॥५॥)

(धाई) बालकने धवरावनार, स्नान करावनार, अलकार पहेरावनार, रमाडनारी अने खोळामां बेसाडनार—आ पांच जातनी धात्री माता कहेवाय छे, तेमाथी कोइ पण कर्म साधु भिक्षाने माटे करे ते धात्रीपिंडदोष १. (दूइ) दूतीनी जेम भिक्षाने माटे सदेशो लावे अथवा लइ जाय ते दूतीपिंडदोष २ (निमित्ते) भिक्षाने माटे भूत, भविष्य अने वर्तमानकाळ—संबंधी लाभालाभरूप निमित्त कहीने भिक्षा ग्रहण करवाथी निमित्तपिंडदोष ३. (आजीव) भिक्षाने माटे पोतानी जाति, कुळ, गच्छ, कर्म, शिल्प विगेरेना वखाण करवाथी मुनिने लागे ते आजीवपिंडदोष ४. (वणीवगे) ब्राह्मण, श्रमण विगेरेना भक्तोपासेथी आहार लेवानी इच्छाथी हु पण तेनो भक्त छु एम कही आहार ग्रहण करे ते वनीपकपिंडदोष ५. (तिगिच्छा य) वैद्यनी जेम औषध आपी अथवा बतावी आहार ग्रहण करवाथी लागे ते चिकित्सापिंडदोष ६. (कोहे) विद्या अने तप विगेरेनो प्रभाव बतावी, राजानु मान्यपणु देखाडी अथवा क्रोधनु फळ देखाडी भिक्षा ग्रहण करवाथी क्रोधपिंडदोष ७. (माणे) पोतानी लब्धिनी प्रशसाथी अथवा बीजाए उत्साह आपवाथी अथवा कोइए अपमान करवाथी हु सारो आहार लावी आपु एम अहकार करी श्रावकने विडबना करी आहार लावे ते मानपिंडदोष ८. (माया) विविध प्रकारना वेष अने भाषा विगेरे बदली आहार लावे ते मायापिंडदोष ९ (लोभे अ) अतिलोभथी आहार माटे अटन करे ते लोभपिंडदोष १०. (हवति दस एए) आ रीते दश दोष लागे छे, तथा (पुव्विंपच्छासथव) पुव्विं एटले दातारना मावापनो अथवा पच्छा एटले दातारना सासुससरानो सभव एटले परिचय जणावी—ओळखाण काढी भिक्षा ग्रहण करे ते पूर्वपश्चात्सस्तवपिंडदोष ११. (विज्जा) विद्यानो उपयोग करी भिक्षा लेवाथी विद्यापिंडदोष १२. (मते अ) मतनो

प्रयोग करी भिक्षा ले ते मंत्रपिंडदोष १३. (चुण्ण) नेत्रांजन आदि चूर्णनो उपयोग करी भिक्षा लेवाथी चूर्णपिंडदोष १४. (जोगे य) पादलेप आदि योगनो उपयोग करी भिक्षा ग्रहण करवाथी योगपिंडदोष १५ (य) तथा (सोलसमे) सोळमो (मूलकम्मे) गर्भनुं स्तंभन, गर्भनुं धारण, गर्भपात, रक्षाबंधन विगेरे कर्म करी भिक्षा लेवाथी मूलकर्मपिंडदोष १६. (उप्पायणाइ दोसा) आ सर्वे उत्पादनाना दोषो छे. आ दोषो साधुथी उत्पन्न थाय छे.

हवे गृहस्थी अने साधु ए बन्नेथी उत्पन्न थता एषणाना दश दोषो बतावे छे—

संकिय[1] मक्खिय[2] निक्खित्त[3]-पिहिय[4] साहरिय[5] दायगु[6] म्मिस्से[7]। अपरिणय[8] लित्त[9] छड्डियं[10], एसणदोसा दस हवंति।६।

(शङ्कित[1] म्रक्षित[2] निक्षिप्त[3]-पिहित[4] संहृत[5] दायको[6] न्मिश्राः[7]। अपरिणत[8] लिप्त[9] छर्दिता[10], एषणादोषा दश भवन्ति ॥६॥)

(संकिय) दातार अथवा साधुने आहार देतां अथवा लेतां आधाकर्मादिक कोइ पण दोषनी शंका थाय तो तेने शंकित दोष लागे छे १. (मक्खिय) पृथ्व्यादि सचित्त अथवा मध आदिक निंद्य के पोते निषेध करेला अचित्त पदार्थथी मिश्रित थयेलो पिंड देतां अथवा ग्रहण करतां म्रक्षित दोष लागे छे २. (निक्खित्त) पृथ्वीकाय आदि छकायउपर स्थापन करेलो अचित्त पिंड पण देतां अथवा लेतां निक्षिप्त दोष लागे छे ३. (पिहिय) फळ आदि सचित्त वस्तुथी ढांकेली वस्तु देतां अथवा लेतां पिहित दोष लागे छे ४. (साहरिय) देवाना पात्रमां रहेली कांइक बीजी वस्तुने सचित्त एवा पृथ्वी आदिकउपर मूकी ते पात्रवडे देतां अथवा लेतां संहृत दोष लागे छे ५. (दायग) बाल, वृद्ध, नपुंसक, धुजतो, अंध, मदोन्मत्त,

हाथ-पगविनानो, बेडीमां नांखेलो, पादुकाउपर चडेलो, खांसीवाळो, खांडनार, पीसनार, भुजनार, कापनार, पींजनार, दळनार, फाडनार, तोडनार विगेरे छकायविराधक तेम ज गर्भिणी, तेडेला छोकरावाळी तथा धावता बाळकवाळी स्त्री के आवा पासेथी आहार लेतां दायक दोष लागे छे ६. (उम्मिस्से) सचित्त धान्यना कणथी मिश्रित साकर विगेरे वस्तु देतां अथवा लेतां उन्मिश्र दोष लागे छे ७ (अपरिणय) अचित्तपणाने पाम्या विनानी वस्तु देतां अथवा लेतां अपरिणत दोष लागे छे ८ (लित्त) अकल्प्य वस्तुथी लेवायला पात्र के हस्तवडे देतां अथवा लेतां लिप्त दोष लागे छे ९. (छड्डिय) पृथ्वीपर घी आदिना टीपां पडतां होय एवी रीते देतां अथवा लेतां छर्दित दोष लागे छे; कारण के तेवी रीते करतां त्यां रहेला अने बीजा आगतुक जीवोनी पण मधुबिंदुना उदाहरणनी जेम विराधना थाय छे १० (एसणदोसा दस हवंति) आ दश एषणाना दोषो छे.

हवे ग्रासैषणाना एटले आहार वापरती वखतना पाच दोषो कहे छे —

संजोयणापमाणे, इंगाले धूमं कारणे पढमा । वसहिबहिरतरे वा, रसहेऊ दव्वसंजोगा ॥ ७ ॥

(संयोजनाऽप्रमाणौ, इंगालो धूमोऽकारणौ प्रथमा । वसतिबहिरन्तरे वा, रसहेतोर्द्रव्यसंयोगात् ॥ ७ ॥)

(संजोयणा) संयोजना नामनो (पढमा) पहेलो दोष ते (रसहेऊ) सारो स्वाद करवाना हेतुथी (वसहिबहिरतरे वा) वसति (उपाश्रय) नी बहार अथवा अंदर आवीने (दव्वसंजोगा) मांडा विगेरेनी साथे घी-खांड विगेरे द्रव्य-पदार्थनो

संयोग करवाथी थाय छे १. (पमाणे) जेटलो आहार करवाथी वीरज, बळ, संयम तथा मन, वचन अने कायाना योगने बाधा न आवे तेटलो आहार करवो जोइए, तेथी वधारे आहार करे तो प्रमाणातिरिक्तता दोष लागे छे २. (इंगाले) स्वादिष्ट अन्नना अथवा तेना दातारना वखाण करतो आहार करे तो ते साधु रागरूप अग्निथी चारित्ररूप काष्ठोने अंगारारूप करे छे तेथी ते अंगारदोष कहेवाय छे ३. (धूम) अन्ननी के तेना देनारनी निंदा करतो भोजन करे तो ते चारित्ररूप काष्ठने बाळी धूमाडारूप करे छे तेथी ते धूमदोष कहेवाय छे ४. (अकारणे) कारण विना भोजन करे तो कारणाभाव नामनो दोष लागे छे. अहीं भोजन करवानां छ कारणो कह्यां छे, ते आ प्रमाणे—क्षुधावेदना सहन न थइ शके तो आहार करवो १, आचार्य, बाळ, वृद्ध अने ग्लान आदिकनी वैयावच्च करवाना कारणे आहार करवो २, ईर्यासमितिनी शुद्धि माटे आहार करवो ३, संयमनुं पालन करवा माटे आहार करवो ४, जीवितव्यनी रक्षा करवा माटे आहार करवो ५ तथा धर्मध्यानने स्थिर करवा माटे आहार करवो ६. आ छ कारणोने माटे आहार करवानी जरुर छे. ते सिवाय आहार करे तो अकारणदोष लागे छे. आ पांच आहार करती वखतना दोषो छे. कुल मळीने ४७ दोष थाय छे.

॥ इति ४७ भिक्षादोषाः ॥

॥ अथ श्री श्रमणसूत्रम् ॥

नमो अरिहंताणं० ॥ करेमि भंते सामाइअं, सव्वं सावज जोगं पच्चक्खामि, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करतं पि अन्न न समणुजाणामि, तस्स भते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

(नमोऽर्हद्भ्यः० ॥ करोमि भदन्त सामायिक, सर्वं सावद्यं योग प्रत्याख्यामि, यावज्जीवया त्रिविधं त्रिविधेन मनसा वाचा कायेन न करोमि न कारयामि कुर्वन्तमपि अन्यं न समनुजानामि, तस्य भदन्त प्रतिक्रमामि निंदामि गर्होमि आत्मानं व्युत्सृजामि ॥ १ ॥)

(नमो अरिहंताणं०) अर्हंतोने नमस्कार थाओ ए रीते बाकीनो नवकार मत्र जाणी लेवो (भंते) हे भगवन् ! (सामाइअ) सामायिकने (करेमि) हु करु छु. (सव्व) सर्व (सावज्ज जोग) सावद्ययोगने-पापव्यापारने (पच्चक्खामि) हु पचखुं छु-निषेधु छु (जावज्जीवाए) जावजीवसुधी (तिविह) मन-वचन-कायाना व्यापाररूप त्रण प्रकारने (तिविहेण) करवु, कराववु अने अनुमोदवु ए त्रणे प्रकारे करीने (मणेण) मनवडे, (वायाए) वाणीवडे, (काएण) कायावडे (न करेमि) सावद्यव्यापारने नहीं करु, (न कारवेमि) नहीं करावु, (करतं पि अन्न) करता एवा पण बीजाने (न समणुजाणामि) सारो नहीं जाणु एटले अनुमोदना नहीं आपु. (भते) हे भगवन् ! (तस्स) ते सावद्ययोगथी (पडिक्कमामि) हुं पाछो

करुं छुं, (निंदामि) आत्मसाक्षीए निंदुं छुं, (गरिहामि) गुरुनी समक्ष गर्हा करुं छुं, (अप्पाणं) सावद्यकर्म करनारा मारा आत्माने (वोसिरामि) हुं वोसरावुं छुं एटले तजुं छुं. १.

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं ॥ २ ॥

(चत्वारो मङ्गलम्, अर्हन्तो मङ्गलम्, सिद्धा मङ्गलम्, साधवो मङ्गलम्, केवलिप्रज्ञप्तो धर्मो मङ्गलम् ॥ २ ॥)

(चत्तारि) चार पदार्थो (मंगलं) मंगळरूप छे. ते ज कहे छे.—(अरिहंता) अर्हंतो (मंगलं) मंगळरूप छे, (सिद्धा) सिद्धो (मंगलं) मंगळरूप छे, (साहू मंगलं) साधुओ मंगळरूप छे, तथा (केवलिपन्नत्तो) केवळी भगवंते प्ररूपेलो— कहेलो (धम्मो) श्रुत अने चारित्ररूप धर्म (मंगलं) मंगळरूप छे. २

चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो॥३॥

(चत्वारो लोकोत्तमाः, अर्हन्तो लोकोत्तमाः, सिद्धा लोकोत्तमाः, साधवो लोकोत्तमाः, केवलिप्रज्ञप्तो धर्मो लोकोत्तमः ॥ ३ ॥)

(चत्तारि) चार पदार्थो (लोगुत्तमा) लोकोत्तम एटले लोकमां उत्तम छे. ते ज कहे छे—(अरिहंता) अर्हंतो (लोगुत्तमा) लोकोत्तम छे, (सिद्धा) सिद्ध भगवानो (लोगुत्तमा) लोकोत्तम छे, (साहू) मुनिमहाराजाओ (लोगुत्तमा) लोकोत्तम छे, तथा (केवलिपन्नत्तो) केवळी भगवंते प्ररूपेलो (धम्मो) धर्म (लोगुत्तमो) लोकोत्तम छे. ३.

चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ ४ ॥

(चतुरः शरणं प्रपद्ये, अर्हतः शरणं प्रपद्ये, सिद्धान् शरणं प्रपद्ये, साधून् शरणं प्रपद्ये, केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं शरणं प्रपद्ये ॥ ४ ॥)

(चत्तारि) चारनु (सरणं) सरण (पवज्जामि) हु अंगीकार करु छु, ते ज कहे छे—(अरिहंते) अरिहंतोनु (सरणं) शरण (पवज्जामि) हु स्वीकारु छु, (सिद्धे सरणं पवज्जामि) हु सिद्धोनु शरण स्वीकारु छु, (साहू सरणं पवज्जामि) हु साधुओनु शरण स्वीकारु छुं तथा (केवलिपन्नत्त धम्म सरणं पवज्जामि) केवलीभगवंते प्ररूपेला धर्मनु हु शरण स्वीकारु छु. ४.

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो असमणपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ते सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्ह कसायाणं, पंचण्ह महव्वयाणं, छण्हं जीवनिकायाणं, सत्तण्ह पिंडेसणाण, अट्ठण्हं पवयणमाऊणं, नवण्हं बंभचेरगुत्तीण, दसविहे समणधम्मे समणाणं जोगाणं, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ५ ॥

(इच्छामि प्रतिक्रमितुं यो मया दैवसिकोऽतिचारः कृतः कायिको वाचिको मानसिकः उत्सूत्र उन्मार्गः अकल्प्योऽकरणीयो दुर्ध्यातो दुर्विचिन्तितोऽनाचारोऽनेष्टव्योऽश्रमणप्रायोग्यः ज्ञाने दर्शने चारित्रे श्रुते सामायिके, तिसृणां गुप्तीनां, चतुर्णां कषायाणां, पञ्चानां महाव्रतानां, षण्णां जीवनिकायानां, सप्तानां पिण्डैषणानामष्टानां प्रवचनमातॄणां, नवानां ब्रह्मचर्यगुप्तीनां, दशविधे श्रमणधर्मे श्रमणानां योगानां, यत् खण्डितं यद्विराधितं तस्य मिथ्या मे दुष्कृतम् ॥ ५ ॥)

(इच्छामि पडिक्कमिउं) हुं प्रतिक्रमण करवाने–पाछो फरवाने इच्छुं छुं. (जो) जे (मे) में (देवसिओ) दिवससंबंधी (अइआरो) अतिचार (कओ) कर्यो होय, केवो ? (काइओ) कायासंबंधी. (वाइओ) वाणीसंबंधी. (माणसिओ) मनसंबंधी, (उस्सुत्तो) उत्सूत्रसंबंधी एटले सूत्रमां नहीं कहेलो, ए ज कारण माटे (उम्मग्गो) उन्मार्गसंबंधी, ए ज कारण माटे (अकप्पो) चरण–करणरूप कल्प जे आचार तेनाथी रहित. ए ज कारण माटे (अकरणिज्जो) नहीं करवा लायक, (दुज्झाओ) दुर्ध्यान करेलो, (दुव्विचिंतिओ) दुष्ट रीते विचारेलो, (अणायारो) साधुने नहीं आचरवा लायक, (अणिच्छियव्वो) नहीं इच्छवालायक तथा (असमणपाउग्गो) साधुने नहीं लायक एवो अतिचार लाग्यो होय क्यां ? (नाणे) ज्ञानने विषे, (दंसणे) दर्शनने विषे, (चरित्ते) चारित्रने विषे, (सुए) श्रुतने विषे तथा (सामाइए) सामायिकने विषे जे अतिचार लाग्यो होय, तेम ज (तिण्हं गुत्तीणं) त्रण गुप्तिसंबंधी, (चउण्हं कसायाणं) चार कषायसंबंधी (पञ्चण्हं महव्वयाणं) पांच महाव्रतसंबंधी, (छण्हं जीवनिकायाणं) छजीवनिकायसंबंधी, (सत्तण्हं पिंडे-

सणाश्च) सात प्रकारनी पिंडैषणासंबधी, (अट्ठण्ह पवयणमाऊण) आठ प्रवचनमातासबधी, (नवण्ह बंभचेरगुत्तीण)
नव प्रकारे ब्रह्मचर्यनी गुप्तिसबधी, (दसविहे समणधम्मे) दश प्रकारना साधुधर्मसबधी (समणाण जोगाण) ए सर्व
साधुओना योगोने मध्ये (ज) जे कांइ (खडिय) देशथी भांग्यु होय तथा (ज) जे कांइ (विराहिअ) सर्व प्रकारे
भांग्यु होय (तस्स) ते अतिचारसबधी (मि) मारु (दुक्कड) पाप (मिच्छा) मिथ्या एटले फोगट थाओ. ५.

इच्छामि पडिक्कमिउ इरियावहियाए विराहणाए० जाव तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ६ ॥

(इच्छामि प्रतिक्रमितु ईर्यापथिकाया विराधनायां० यावत् तस्य मिथ्या मे दुष्कृतम् ॥ ६ ॥)

(इच्छामि पडिक्कमिउ) हु प्रतिक्रमवाने इच्छु छु (इरियावहियाए) ईर्यापथिकीसबधी (विराहणाए) विराधनाने
विषे जे अतिचार लाग्यो होय (अहीं इरियावही आखा बोलवा) पछी (तस्स) ते अतिचारसबधी (मि) मारु (दुक्कड)
पाप (मिच्छा) मिथ्या थाओ

इच्छामि पडिक्कमिउ पगामसिज्जाए निगामसिज्जाए संथाराउवट्टणाए परियट्टणाए आउंटणाए
पसारणाए छप्पईसघट्टणाए कूइए कक्कराईए छीए जंभाइए आमोसे ससरक्खामोसे आउलमाउ
लाए सोअणवत्तिआए इत्थीविप्परिआसिआए दिट्ठीविप्परिआसिआए मणविप्परिआसिआए पाण-
भोअणविप्परिआसिआए जो मे देवसिओ अईआरो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥

(इच्छामि प्रतिक्रमितुं प्रकामशय्यया निकामशय्यया संस्तारकोद्वर्तनया परिवर्तनया आकुञ्चनया प्रसारणया षट्पदीसंघट्टनया कूजिते कर्करायिते क्षुते जृम्भिते आमर्षे सरजस्कामर्षे आकुलाकुलया स्वप्नप्रत्ययया स्त्रीविपर्यासिक्या दृष्टिविपर्यासिक्या मनोविपर्यासिक्या पानभोजनविपर्यासिक्या यो मया दैवसिकोऽतिचारः कृतः तस्य मिथ्या मे दुष्कृतम् ॥ ७ ॥)

(इच्छामि पडिक्कमिउं) हुं ते अतिचारोथी प्रतिक्रमवाने–पाछो करवाने इच्छुं छुं. ते अतिचारो कया ? ते कहे छे— (पगामसिज्जाए) प्रकाम एटले अत्यंत अर्थात् रात्रिना चार पहोरसुधी सुवावडे करीने अथवा विहारना श्रमथी दिवसे पण सुवावडे करीने अथवा अधिक उपकरणवाळा संथारावडे करीने, तथा (निगामसिज्जाए) हंमेशा ते ज प्रकामशय्याए करीने, तथा (संथाराउवट्टणाए) संथाराने विषे डावा पासाथी जमणे पासे फरवावडे करीने, तथा (परियट्टणाए) जमणा पासाथी डावे पासे फरवावडे करीने, तथा (आउंटणाए) हाथ–पग विगेरे अंग संकोचवावडे करीने, तथा (पसारणाए) अंग प्रसारवावडे करीने, आ सर्व क्रियाओ पुंज्या विना करवाथी अतिचार लागे छे; तथा (छप्पईसंघट्टणाए) जू विगेरेने अविधिथी संघट्ट–स्पर्श करवावडे करीने जे अतिचार लाग्यो होय, तथा (कूइए) उघाडे मुखे खांसी करे सते, तथा (कक्कराइए) कचकच शब्द करती शय्या सते, तथा (छीए) उघाडे मुखे छींक खाधे सते, तथा (जंभाइए) उघाडे मुखे बगासुं खाधे सते, तथा (आमोसे) अविधिए पुंज्या विना भूमि विगेरेनो हाथवडे स्पर्श करे सते, तथा (ससरक्खामोसे) रजवाळी पृथ्वी विगेरेने पुंज्या विना स्पर्श करे सते जे अतिचार लाग्यो होय, तथा सुता थका (सोअणव-

सिआए) स्वप्नना निमित्तवाळी (आउलमाउलाए) आकुळव्याकुळताए करीने एटले स्त्री आदिकना भोगे अने विवाह तथा युद्धादिकनी सामग्रीना स्पर्शथी उत्पन्न थयेली आकुळव्याकुळताए करीने जे अतिचार लाग्या होय, तथा (इत्थीविप्परियासिआए) स्त्रीना विपर्यासथी एटले (स्वप्नादिकमां) मैथुन सेववाथी उत्पन्न थयेली, तथा (दिट्ठीविप्परियासिआए) दृष्टिना विपर्यासथी एटले स्त्री विगेरेने रागदृष्टिए जोवाथी उत्पन्न थयेली, तथा (मणविप्परिआसिआए) मनना विपर्यासथी एटले स्त्रीने देखी मननो विकार थवाथी उत्पन्न थयेली, तथा (पाणभोअणविप्परिआसिआए) पान अने भोजननो विपर्यास एटले रात्रिए पानभोजन करवानी इच्छाथी उत्पन्न थयेली आकुळव्याकुळतावडे करीने (जो) जे (मे) में (देवसिओ) दिवससबंधी (अइआरो) अतिचार (कओ) कर्यो होय (तस्स) तेनु (दुक्कड) दुष्कृत-पाप (मे) मारे (मिच्छा) मिथ्या थाओ-ते अतिचारसबंधी मारुं पाप मिथ्या थाओ. ७.

हवे गोचरीना अतिचारो कहे छे

पडिक्कमामि गोचरचरिआए भिक्खायरिआए उग्घाडकवाडउग्घाडणाए साणावच्छादारासंघट्टणाए मंडीपाहुडियाए बलिपाहुडियाए ठवणापाहुडियाए संकिए सहसागारिए अणेसणाए (पाणेसणाए) पाणभोअणाए बीअभोअणाए हरिअभोअणाए पच्छाकम्मिआए पुरेकम्मिआए अदिट्ठहडाए

१ आ पद केटलाक मूळ ग्रथोमां लभ्य छे परतु पूर्व टीकाकारे तथा बालावबोधकार श्रीज्ञानविमलसूरीश्वरे आ पदनी व्याख्या करी नथी

दगसंसट्ठहडाए रयसंसट्ठहडाए पारिसाडणिआए पारिट्ठावणिआए ओहासणभिक्खाए जं उग्गमेणं उप्पायणेसणाए अपरिसुद्धं पडिग्गहिअं परिभुत्तं वा जं न परिट्ठविअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ८ ॥

(प्रतिक्रमामि गोचरचर्यायां भिक्षाचर्यायामुद्घाटकपाटोद्घाटनया श्ववत्सदारकसंघट्टनया मण्डीप्राभृतिकया बलिप्राभृतिकया स्थापनाप्राभृतिकया शङ्किते सहसाकारिकेऽनेषणया (पानैषणया) प्राणिभोजनया बीजभोजनया हरितभोजनया पश्चात्कर्मिकया पुरःकर्मिकयाऽदृष्टाहृतया उदकसंसृष्टाहृतया रजःसंसृष्टाहृतया पारिसाटनिकया (पारिशातनिकया) पारिष्ठापनिकया ओहासनभिक्षया यत् उद्गमेन उत्पादनैषणयाऽपरिशुद्धं प्रतिगृहीतं परिभुक्तं वा यन्न परिष्ठापितं तस्य मिथ्या मे दुष्कृतम् ॥ ८ ॥)

(गोचरचरिआए) गायना चरवानी जेवी जे चर्या-फरवुं ते गोचरचर्या तेने विषे तथा ((भिक्खायरिआए) भिक्षाचर्याने विषे मने जे अतिचार लाग्यो होय तेने (पडिक्कमामि) हुं पडिकमुं छुं—आलोवुं छुं. गोचरीमां अतिचार शी रीते थाय ? ते उपर कहे छे—(उग्घाडकवाडउग्घाडणाए) कांइक ढांकेला कमाडने पुंज्या विना उघाडवावडे करीने, तथा (साणावच्छादारासंघट्टणाए) कुतरो, वाछरडो अने बाळकना संघट्टाए करीने, तथा (मंडीपाहुडियाए) ढांकणी के बीजा पात्रमां प्रथम भात विगेरे काढीने जे अपाय ते मंडीप्राभृतिका कहेवाय छे ते वडे करीने, तथा (बलिपाहुडिआए) चारे दिशामां अथवा अग्निमां प्रथम बळिदान नांखीने पछी जे भिक्षा आपे ते बलिप्राभृतिका कल्पे नहीं तेथी तेवडे करीने, तथा

(ठवणापाहुडिआए) भिक्षुकोने माटे जुदी स्थापन करी राखेली भिक्षा कल्पे नहीं छतां ते लेवावडे करीने, तथा (साकिए)
आधाकर्मादिकनी शंकावाळी भिक्षा ग्रहण करवावडे करीने, तथा (सहसागारिए) सहसात्कारे-उतावळे अकल्पनीय लेवावडे
करीने थयेली जे (अणेसणाए) अनेषणा तेवडे करीने, तथा (पाणभोअणाए) जे भोजनमां लेता के देतां प्राणीओनी वि-
राधना थाय एवी भिक्षावडे करीने, तथा (बीअभोअणाए) जे भोजनमां बीजनी विराधना थाय एवी भिक्षावडे करीने,
तथा (हरिअभोअणाए) जे भोजनमां हरित तृण (लीला तृण) नो संघट्टो थतो होय एवी भिक्षा लेवावडे करीने, तथा
(पच्छाकम्मिआए) भिक्षा आप्या पछी काचा जळवडे वहोरावनारे हाथ विगेरे धोवाथी पश्चात्कर्म लागे छे एवी क्रिया
जे भिक्षा लेतां लागे तेवडे करीने, तथा (पुरेकम्मिआए) भिक्षा आप्या पहेलां हाथ विगेरे धोवे ते पुरःकर्म कहेवाय छे
तेवी भिक्षावडे करीने, तथा (अदिट्ठहडाए) घरनी अदर रहेली वस्तु जोया विना आणी होय ते लेवावडे करीने, तथा (दग-
ससट्ठहडाए) जळना स्पर्शवाळी आणेली भिक्षा लेवावडे करीने, तथा (रयससट्ठहडाए) रजना स्पर्शवाळी आणेली भिक्षा
लेवावडे करीने, तथा (पारिसाडणिआए) अन्नना कणीया अथवा घी विगेरेना बिंदु पडता होय एवी भिक्षा लेवावडे
करीने, तथा (पारिट्ठावणियाए) देवाना पात्रमां अकल्प्य वस्तु रहेली होय ते काढी नांखीने ते पात्रवडे जे भिक्षा आपे
ते लेवावडे करीने, तथा (ओहासणभिक्खाए) कोइ पण वस्तु मागीने लेवी ते ओहासण कहेवाय छे, एवी भिक्षा लेवावडे
करीने तथा (ज) जे कांइ वस्तु (उग्गमेणं) आधाकर्मादिक उद्गमना दोषे करीने तथा (उप्पायणेसणाए) धात्री आदि उत्पा-
दनाना दोषे करीने तथा शंकितादि एषणाना दोषे करीने (अपरिसुद्ध) अशुद्ध थयेली होय ते (परिग्गहिअं) में ग्रहण

११

करी होय (परिभुत्तं वा) अथवा खाधी—वापरी होय तथा (जं न परिट्ठविअं) जे वस्तु परठवा योग्य होय छतां न परठवी (वापरी) होय तेवडे जे अतिचार उत्पन्न थया (तस्स मिच्छा मि दुक्कडं) ते अतिचारसंबंधी मारुं दुष्कृत—पाप मिथ्या थाओ. ८.

पडिक्कमामि चाउक्कालं सज्झायस्स अकरणयाए, उभओकालं भंडोवगरणस्स अप्पडिलेहणाए दुप्पडिलेहणाए अप्पमज्जणाए दुप्पमज्जणाए अइक्कमे वइक्कमे अइयारे अणायारे जो मे देवसिओ अइआरो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ ९ ॥

(प्रतिक्रमामि चतुःकालं स्वाध्यायस्य अकरणेन, उभयकालं भाण्डोपकरणस्याप्रतिलेखनया, दुःप्रतिलेखनयाऽप्रमार्जनया दुःप्रमार्जनयाऽतिक्रमे व्यतिक्रमेऽतिचारेऽनाचारे यो मया दैवसिकोऽतिचारः कृतस्तस्य मिथ्या मे दुष्कृतम् ॥ ९ ॥)

(पडिक्कमामि) हुं ते अतिचारने पडिकमुं छुं. कया अतिचार ? (चाउक्कालं) चार काळ एटले दिवसना पहेला बे अने रात्रिना छेल्ला बे एम चार पहोरने विषे (सज्झायस्स) स्वाध्याय करवो जोइए ते सूत्र पौरुषीने विषे (अकरणयाए) नहीं करवावडे करीने जे अतिचार लाग्या होय, तथा (उभओ कालं) बे काळ एटले दिवसनी पहेली तथा छेल्ली पोरसीने विषे (भंडोवगरणस्स) वस्त्र—पात्रादिक भांडोपकरणनी (अप्पडिलेहणाए) पडिलेहणा नहीं करवावडे करीने एटले मूळथी ज दृष्टिवडे नहीं जोवावडे करीने, तथा (दुप्पडिलेहणाए) दुष्प्रतिलेखनावडे करीने एटले सारी रीते नहीं जोवाए करीने, तथा

(अप्पमज्जणाए) रजोहरणादिकथी प्रमार्जन नहीं करवावडे करीने, तथा (दुप्पमज्जणाए) दुष्प्रमार्जनवडे करीने एटले विधि-रहित जेम तेम ओछुं-वधतुं प्रमार्जन करवावडे करीने में जे अतिचार कर्या होय, तथा (अइक्कमे) अतिक्रमने विषे, (वइक्कमे) व्यतिक्रमने विषे, (अइआरे) अतिचारने विषे अने (अणायारे) अनाचारने विषे (जो) जे (मे) में (देवसिओ) दिवस-संबंधी (अइआरो) अतिचार (कओ) कर्या होय (तस्स मिच्छा मि दुक्कडं) ते अतिचारसंबंधी मारुं दुष्कृत मिथ्या थाओ. अहीं अतिक्रम विगेरेनुं स्वरूप आ प्रमाणे जाणवुं-आधाकर्मादिक दोषवाळा आहारमाटे निमंत्रण करे सते ते लेवानी इच्छा जणाववाथी अतिक्रम थाय छे, लेवा जतां व्यतिक्रम थाय छे, लीधे सते अतिचार थाय छे अने भोजनने माटे हाथमां कवळ ग्रहण करे सते अनाचार थाय छे ९. (आ प्रमाणे दरेक बाबतमां अतिक्रमादिकनो अर्थ समजवो).

आ अतिचार संक्षेपथी एक प्रकारे छे अने विस्तारथी अनेक प्रकारे छे, तेमां एक प्रकारथी आरंभीने केटलाक प्रकारो कहे छे –

पडिक्कमामि एगविहे असंजमे ॥ १० ॥

(प्रतिक्रमामि एगविधेऽसंयमे ॥ १० ॥)

(एगविहे) एक प्रकारना (असंजमे) अविरतिरूप असंयमने विषे (पडिक्कमामि) हुं पडिकमुं छुं-पाछो फरुं छुं, अर्थात् एक प्रकारना असंयमने विषे में जे अतिचार कर्या होय ते संबंधी मारुं दुष्कृत मिथ्या थाओ. आ रीते सर्व ठेकाणे जाणवुं १०.

पडिक्कमामि दोहिं बंधणेहिं रागबंधणेणं दोसबंधणेणं । पडिक्कमामि तिहिं दंडेहिं मणदंडेणं वयदंडेणं कायदंडेणं । पडिक्कमामि तिहिं गुत्तीहिं मणगुत्तीए वयगुत्तीए कायगुत्तीए । पडिक्कमामि तिहिं सल्लेहिं मायासल्लेणं नियाणसल्लेणं मिच्छादंसणसल्लेणं । पडिक्कमामि तिहिं गारवेहिं इड्ढीगारवेणं रसगारवेणं सायागारवेणं ॥ ११ ॥

(प्रतिक्रमामि द्वाभ्यां बन्धनाभ्यां रागबन्धनेन द्वेषबन्धनेन । प्रतिक्रमामि त्रिभिर्दण्डैः मनोदण्डेन वाग्दण्डेन कायदण्डेन । प्रतिक्रमामि तिसृभिर्गुप्तिभिः मनोगुप्त्या वाग्गुप्त्या कायगुप्त्या । प्रतिक्रमामि त्रिभिः शल्यैः मायाशल्येन निदानशल्येन मिथ्यादर्शनशल्येन । प्रतिक्रमामि त्रिभिर्गौरवैः ऋद्धिगौरवेण रसगौरवेण सातगौरवेण ॥ ११ ॥)

(पडिकमामि) कहेवाशे एवा अतिचारने हुं पडिकमुं छुं. ते अतिचारने ज बतावे छे.—(दोहिं बंधणेहिं) बे बंधनवडे करीने जे अतिचार लाग्या होय, ते बे बंधन कहे छे—(रागबंधणेणं) रागना बंधनवडे करीने, तथा (दोसबंधणेणं) द्वेषना बंधनवडे करीने; तथा (पडिकमामि) हुं पडिकमुं छुं (तिहिं दंडेहिं) त्रण दंडवडे करीने एटले के (मणदंडेणं) मनदंडवडे करीने, (वयदंडेणं) वचनदंडवडे करीने अने (कायदंडेणं) कायदंडवडे करीने जे अतिचार थया होय; तथा (पडिकमामि) हुं पडिकमुं छुं (तिहिं गुत्तीहिं) त्रण गुप्तिवडे करीने एटले (मणगुत्तीए) मनगुप्तिवडे करीने, (वयगुत्तीए)

वचनगुप्तिवडे करीने अने (कायगुत्तीए) कायगुप्तिवडे करीने (ते प्रमाणे गुप्त न रहेवाथी) जे अतिचार थया होय; तथा (पडिक्कमामि) हु पडिक्कमु छु (तिहिं सल्लेहिं) त्रण शल्यवडे करीने एटले (मायासल्लेण) मायाशल्यवडे करीने, (नियाणसल्लेण) निदानशल्यवडे करीने अने (मिच्छादसणसल्लेण) मिथ्यादर्शनशल्यवडे करीने जे अतिचार कर्या होय; तथा (पडिक्कमामि) हु पडिक्कमु छु (तिहिं गारवेहिं) त्रण गारववडे करीने एटले (इड्ढीगारवेणं) ऋद्धिगारवे करीने, (रसगारवेण) रसगारवे करीने अने (सायागारवेण) सातागारवे करीने मारावडे जे अतिचार कराया होय ते अतिचारसबधी मारु दुष्कृत मिथ्या थाओ. ११

पडिक्कमामि तिहि विराहणाहिं नाणविराहणाए दसणविराहणाए चरित्तविराहणाए । पडिक्कमामि चउहिं कसाएहिं कोहकसाएणं माणकसाएणं मायाकसाएणं लोहकसाएणं । पडिक्कमामि चउहिं सण्णाहि आहारसण्णाए भयसण्णाए मेहुणसण्णाए परिग्गहसण्णाए । पडिक्कमामि चउहिं विकहाहि इत्थिकहाए भत्तकहाए देसकहाए रायकहाए । पडिक्कमामि चउहिं झाणेहिं अट्टेणं झाणेणं रुद्देण झाणेण धम्मेणं झाणेण सुक्केणं झाणेण ॥ १२ ॥

(प्रतिक्रमामि तिसृभिर्विराधनाभिः ज्ञानविराधनया दर्शनविराधनया चारित्रविराधनया । प्रतिक्र-

मामि चतुर्भिः कषायैः क्रोधकषायेण मानकषायेण मायाकषायेण लोभकषायेण। प्रतिक्रमामि चतसृभिः संज्ञाभिः आहारसंज्ञया भयसंज्ञया मैथुनसंज्ञया परिग्रहसंज्ञया। प्रतिक्रमामि चतसृभिः विकथाभिः स्त्री-कथया भक्तकथया देशकथया राजकथया। प्रतिक्रमामि चतुर्भिर्ध्यानैः आर्त्तेन ध्यानेन रौद्रेण ध्यानेन धर्म्येण ध्यानेन शुक्लेन ध्यानेन ॥ १२ ॥)

(पडिक्कमामि) हुं पडिकमुं छुं (तिहिं विराहणाहिं) त्रण विराधनाए करीने एटले (नाणविराहणाए) ज्ञाननी वि-राधनाए करीने, (दंसणविराहणाए) दर्शन एटले समकितनी विराधनाए करीने अने (चरित्तविराहणाए) चारित्रनी वि-राधनाए करीने जे अतिचार मने लाग्या होय; तथा (पडिक्कमामि) हुं पडिकमुं छुं (चउहिं कसाएहिं) चार कषायवडे करीने एटले (कोहकसाएणं) क्रोध कषायवडे करीने, (माणकसाएणं) मान कषायवडे करीने, (मायाकसाएणं) माया कषायवडे करीने अने (लोहकसाएणं) लोभ कषायवडे करीने जे मने अतिचार लाग्या होय; तथा (पडिक्कमामि) हुं पडिकमुं छुं (चउहिं सण्णाहिं) चार संज्ञावडे करीने एटले (आहारसण्णाए) आहारसंज्ञावडे करीने, (भयसण्णाए) भयसंज्ञावडे करीने, (मेहुणसण्णाए) मैथुनसंज्ञावडे करीने अने (परिग्गहसण्णाए) परिग्रहसंज्ञावडे करीने जे मने अतिचार लाग्या होय; तथा (पडिक्कमामि) हुं पडिकमुं छुं (चउहिं विकहाहिं) चार विकथावडे करीने एटले (इत्थिकहाए) स्त्रीकथावडे करीने, (भत्तकहाए) भोजननी कथावडे करीने, (देसकहाए) देशनी कथावडे करीने अने (रायकहाए) राज्यनी कथा करवावडे करीने मने जे अतिचार लाग्या होय; तथा (पडिक्कमामि) हुं पडिकमुं छुं (चउहिं झाणेहिं)

चार ध्यानवडे करीने एटले (अट्टेण झाणेण) आर्तध्यान करवावडे करीने, (रुद्देणं झाणेण) रौद्रध्यान ध्यावावडे करीने, (धम्मेण झाणेण) धर्मध्यान नहीं ध्यावावडे करीने अने (सुक्केण झाणेण) शुक्लध्यान नहीं ध्यावावडे करीने जे अतिचार माराथी कराया होय ते अतिचारसबधी मारु दुष्कृत मिथ्या थाओ. १२

पडिक्कमामि पचहिं किरियाहिं काइयाए अहिगरणियाए पाउसिआए पारितावणिआए पाणाइवायकिरिआए ॥ १३ ॥

(प्रतिक्रमामि पञ्चभि: क्रियाभि कायिक्या अधिकरणिक्या प्राद्वेषिक्या पारितापनिक्या प्राणातिपातक्रियया ॥ १३ ॥)

(पडिक्कमामि) हु पडिकमु छु (पंचहिं किरिआहिं) पांच प्रकारनी क्रिया करवावडे करीने एटले (काइयाए) कायाथी थती गमनादिक क्रिया करवावडे करीने, (अहिगरणियाए) खड्गादि शस्त्ररूप अधिकरणथी थती क्रिया करवावडे करीने, (पाउसिआए) जीव अने अजीवउपर द्वेषरूप क्रिया करवावडे करीने, (पारितावणिआए) पोताने अथवा परने सताप उपजावनारी क्रिया करवावडे करीने तथा (पाणाइवायकिरिआए) प्राणातिपात-जीवहिंसारूप क्रिया करवावडे करीने माराथी जे अतिचार थया होय ते अतिचारसबधी मारु दुष्कृत मिथ्या थाओ १३

पडिक्कमामि पचहिं कामगुणेहिं सद्देणं रूवेणं रसेणं गंधेणं फासेणं। पडिक्कमामि पचहिं मह-

ठवएहिं पाणाइवायाओ वेरमणं मुसावायाओ वेरमणं अदिन्नादाणाओ वेरमणं मेहुणाओ वेरमणं परिग्गहाओ वेरमणं । पडिक्कमामि पंचहिं समिईहिं इरियासमिईए भासासमिईए एसणासमिईए आयाणभंडमत्तनिखेवणासमिईए उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणिआसमिईए ॥ १४ ॥

(प्रतिक्रमामि पञ्चभिः कामगुणैः शब्देन रूपेण रसेन गन्धेन स्पर्शेन । प्रतिक्रमामि पञ्चभिर्महाव्रतैः प्राणातिपाताद्विरमणं मृषावादाद्विरमणमदत्तादानाद्विरमणं मैथुनाद्विरमणं परिग्रहाद्विरमणं। प्रतिक्रमामि पञ्चभिः समितिभिः ईर्यासमित्या भाषासमित्या एषणासमित्या भाण्डमात्रादाननिक्षेपणासमित्या उच्चारप्रस्रवणखेलजल्लसिंघाणपारिष्ठापनिकासमित्या ॥ १४ ॥)

(पडिक्कमामि) हुं पडिकमुं छुं. (पंचहिं कामगुणेहिं) पांच प्रकारना शब्दादिक कामरूपी गुणोवडे एटले (सद्देणं) शब्दवडे करीने, (रूवेणं) रूपवडे करीने, (रसेणं) रसवडे करीने, (गंधेणं) गंधवडे करीने तथा (फासेणं) स्पर्शवडे करीने आ पांचे इंद्रियोना विषयोए करीने निषिद्ध आचरण विगेरे करवाथी मने जे अतिचार लाग्या होय; तथा (पडि- क्कमामि) हुं पडिकमुं छुं (पंचहिं महव्वएहिं) पांच महाव्रतोए करीने एटले (पाणाइवायाओ वेरमणं) प्राणातिपातथी एटले जीवहिंसाथी विरमवुं–निवर्तवुं, (मुसावायाओ वेरमणं) मृषावादथी विरमवुं, (अदिन्नादाणाओ वेरमणं) अदत्तादान (चोरी)थी विरमवुं, (मेहुणाओ वेरमणं) मैथुनथी विरमवुं अने (परिग्गहाओ वेरमणं) परिग्रहथी विरमवुं. आ पांच

महाव्रतोने विषे कांइ निषिद्ध आचरण करवाथी मने जे अतिचार लाग्या होय; तथा (पडिक्कमामि) हु पडिक्कमु छु (पचहिं समिईहिं) पांच समितिए करीने एटले (इरियासमिईए) ईर्यासमितिए करीने, (भासासमिईए) भाषासमितिए करीने, (एसणासमिईए) एषणासमितिए करीने, (आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिईए) भांडमात्र-पात्रादिनुं ग्रहण तथा मूकवुं ए सबधी समितिए करीने तथा (उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिठ्ठावणिआसमिईए) वडीनीति, लघुनीति, खेल-श्लेष्म, जल्ल-शरीरनो मेल अने सिंघाण-नासिकानो मेल विगेरे परठववानी समितिए करीने-आ पांचे समिति पाळवामां प्रमादादिकने लीधे जे काइ माराथी अतिचार थया होय ते अतिचारसबंधी मारुं दुष्कृत मिथ्या थाओ. १४

पडिक्कमामि छहिं जीवनिकाएहिं पुढविकाएणं आउकाएणं तेउकाएणं वाउकाएणं वणस्सइकाएणं तसकाएण । पडिक्कमामि छहिं लेसाहिं किन्हलेसाए नीललेसाए काउलेसाए तेउलेसाए पउमलेसाए सुक्कलेसाए । पडिक्कमामि सत्तहिं भयट्ठाणेहिं ॥ १५ ॥

(प्रतिक्रमामि षड्भिः जीवनिकायैः पृथ्वीकायेन अप्कायेन तेजस्कायेन वायुकायेन वनस्पतिकायेन त्रसकायेन । प्रतिक्रमामि षड्भिः लेश्याभिः कृष्णलेश्यया नीललेश्यया कापोतलेश्यया तेजोलेश्यया पद्मलेश्यया शुक्ललेश्यया । प्रतिक्रमामि सप्तभिर्भयस्थानैः ॥ १५ ॥)

(पडिक्कमामि) हु पडिक्कमु छु (छहिं जीवनिकाएहिं) छ जीवनिकाये करीने एटले (पुढविकाएण) पृथ्वीकाये करीने,

(आउकाएणं) अपूकाये करीने, (तेउकाएणं) तेजस्काये करीने, (वाउकाएणं) वायुकाये करीने, (वणस्सइकाएणं) वनस्पतिकाये करीने अने (तसकाएणं) त्रसकाये करीने अर्थात् आ छकायना संबंधमां प्रतिषिद्ध आचरण करवाथी—ते जीवोने कीलामणा विगेरे उपजाववाथी मने जे अतिचार लाग्या होय; तथा (पडिक्कमामि) हुं पडिकमुं छुं (छहिं लेसाहिं) छ लेश्यावडे करीने एटले (किन्हलेसाए) कृष्णलेश्याए करीने, (नीललेसाए) नीललेश्याए करीने, (काउलेसाए) कापोतलेश्याए करीने, (तेउलेसाए) तेजोलेश्याए करीने, (पउमलेसाए) पद्मलेश्याए करीने अने (सुकलेसाए) शुक्ललेश्याए करीने, आमां पहेली त्रण लेश्यानुं आचरण करवाए करीने अने छेल्ली त्रण लेश्यानुं आचरण नहीं करवाए करीने जे मने अतिचार लाग्या होय; तथा (पडिक्कमामि) हुं पडिकमुं छुं (सत्तहिं भयट्ठाणेहिं) सात भयनां स्थानोवडे करीने माराथी जे कांइ अतिचार थया होय ते अतिचारसंबंधी मारुं दुष्कृत मिथ्या थाओ. ते सात भय आ प्रमाणे—आलोक भय, परलोक भय, आदान भय, अकस्मात् भय, मरण भय, अकीर्ति—अपयश भय अने आजीविका भय. १५.

अट्ठहिं मयट्ठाणेहिं । नवहिं बंभचेरगुत्तीहिं । दसविहे समणधम्मे ॥ १६ ॥

(अष्टभिर्मदस्थानैः । नवभिर्ब्रह्मचर्यगुप्तिभिः । दशविधे श्रमणधर्मे ॥ १६ ॥)

(अट्ठहिं मयट्ठाणेहिं) आठ मदनां स्थानवडे करीने जे अतिचार लाग्या होय ते संबंधी मारुं दुष्कृत मिथ्या थाओ एम सर्वत्र जाणवुं. मदना आठ प्रकार आ प्रमाणे—जातिमद, कुळमद, रूपमद, बळमद, लाभमद, श्रुतमद, तपमद अने ऐश्वर्यमद; तथा (नवहिं बंभचेरगुत्तीहिं) नव प्रकारनी ब्रह्मचर्यनी गुप्ति पाळवामां प्रमादथी जे अतिचार लाग्या होय, ते नव प्रकारनी

ब्रह्मचर्यगुप्ति आ प्रमाणे–स्त्री, पशु अने नपुंसकवाळी वसति न सेववी १ एकली स्त्रीसाथे अथवा स्त्रीसंबंधी कथा न करवी २. स्त्रीनी साथे एक आसने बेसवु नहीं अथवा स्त्री ज्यां बेठी होय ते स्थाने बे घडी थया पहेलां बेसवुं नहीं ३. स्त्रीओना अवयवो जोवा नहीं ४, भींतने आंतरे रहेली स्त्रीना मोहकारक शब्दो सांभळवा नहीं ५. स्त्रीनी साथे पूर्वे जे क्रीडादिक कर्युं होय ते समारवु नहीं ६. प्रणीत भोजन–स्निग्ध आहार करवो नहीं ७ अत्यंत आहार करवो नहीं ८ तथा शरीरनी विभूषा करवी नहीं ९, तथा (दसविहे समणधम्मे) दश प्रकारना साधुधर्ममां जे कांइ अतिचार लाग्या होय. दश प्रकार आ प्रमाणे–क्षांति (क्षमा), मार्दव (मृदुता–निरभिमानता), आर्जव (सरलता), मुक्ति (निर्लोभता), तप, संयम, सत्य, शौच (अचौर्य), अपरिग्रह अने ब्रह्मचर्य. १६

एगारसहिं उवासगपडिमाहिं ॥ १७ ॥

(एकादशाभिः उपासकप्रतिमाभिः ॥ १७ ॥)

(एगारसहिं उवासगपडिमाहिं) अग्यार उपासकनी–श्रावकनी प्रतिमावडे करीने एटले ते प्रतिमा आश्री कहेवा–कारववामां फेरफार थवाथी कांइ पण अतिचार लाग्या होय. ते प्रतिमा आ प्रमाणे–पहेली समकित प्रतिमा–तेमां एक मास सुधी अतिचार-रहित समकित पाळे १. बीजी व्रतप्रतिमा–तेमां बे मास पहेली प्रतिमामां कह्या उपरांत अतिचाररहित बार व्रतोनुं पालन करे २. त्रीजी सामायिक प्रतिमा–तेमां पूर्वे कहेली क्रियासहित त्रण मास सुधी बन्ने काळ निरतिचार सामायिकसहित प्रतिक्रमण करे ३. चोथी पौषधप्रतिमा–तेमां पूर्वनी क्रियासहित चार मास सुधी चार पर्वोने विषे एटले बे आठम अने बे

चौदशे निरतिचार पौषध करे ४. पांचमी प्रतिमा नामनी प्रतिमा–तेमां पूर्वोक्त क्रियासहित पांच मास सुधी पौषधने दिवसे रात्रे दोषरहित कायोत्सर्ग करे, पांच मास सुधी स्नान न करे, रात्रे चतुर्विध आहारनो त्याग करे, दिवसे ब्रह्मचर्य पाळे अने रात्रिए मैथुननो परिमाण करे, पण पौषध होय त्यारे तो रात्रिए पण सर्वथा ब्रह्मचर्य पाळे ने कायोत्सर्ग करे ५. छठी ब्रह्मचर्य प्रतिमा–तेमां पूर्वोक्त क्रियासहित छ माससुधी रात्रि–दिवस निरतिचार ब्रह्मचर्य पाळे अने कच्छ धारण करे ६. सातमी सचित्तवर्जन प्रतिमा–तेमां पूर्वोक्त क्रियासहित सात माससुधी सचित्त आहारनो त्याग करे ७. आठमी आरंभवर्जन प्रतिमा–तेमां पूर्वोक्त क्रियासहित आठ माससुधी पोते कांइ पण आरंभ–समारंभ करे नहीं ८. नवमी प्रेष्यवर्जन प्रतिमा–तेमां पूर्वोक्त क्रियासहित नव माससुधी बीजापासे पण आरंभ करावे नहीं ९. दशमी उद्दिष्टवर्जन प्रतिमा–तेमां पूर्वनी क्रियासहित दश माससुधी पोताने उद्देशीने करेलो आहारादिक ग्रहण न करे १०. अग्यारमी साधुभूत साधु जेवी प्रतिमा–तेमां पूर्वोक्त क्रियासहित अग्यार माससुधी मस्तके मुंडित थइ अथवा लोच करी श्रमणनी जेम विचरे, रजोहरण अने पात्रां राखे अने पोतानी जातिमां विचरी भिक्षा मागीने खाय ११. (आ बधी श्रावकपणानी उत्कृष्ट करणी छे अने तेमां आगळनी प्रतिमामां पाछली बधी तो साथे राखवानी ज छे.) १७.

बारसहिं भिक्खुपडिमाहिं ॥ १८ ॥

(द्वादशभिर्भिक्षुप्रतिमाभिः ॥ १८ ॥)

(बारसहिं भिक्खुपडिमाहिं) भिक्षुनी–साधुनी बार प्रतिमा आश्री कांइ अतिचार थया होय, ते प्रतिमा आ प्रमाणे–पहेली

प्रतिमा एक मासनी, तेमां अलेप भोजन ग्रहण करे अने आहारपाणीनी एक दत्ती ग्रहण करे, बीजी बे मासनी, तेमां बे दत्ती ए रीते वधतां सातमी सात मासनी, तेमां सात दत्ती ग्रहण करे. आठमी सात अहोरात्रिनी, तेमां चोविहार उपवास करे, गामनी बहार कायोत्सर्ग करे, उत्तानादिक आसने रही उपसर्गो सहन करे नवमी सात अहोरात्रिनी, तेमां उत्कटिकासने अथवा दंडासने रहे, चोविहार उपवास करे अने गाम बहार कायोत्सर्ग करी उपसर्ग सहन करे. दशमी सात अहोरात्रिनी, तेमां पूर्वोक्त क्रियासहित गोदोहिकासने रहे अग्यारमी प्रतिमा एक अहोरात्रिनी, तेमां चोविहार छठ करे, गाम बहार कायोत्सर्ग करी उपसर्ग सहन करे बारमी प्रतिमामां चोविहार अट्ठम करी एक रात्रि ईषत्प्राग्भारा शिला तरफ एकाग्र दृष्टि राखी कायोत्सर्ग करी उपसर्ग सहन करे. आ बधी प्रतिमामां अतिचाररहित प्रवृत्ति करवानी होय छे आ प्रतिमाउपर श्रद्धा न राखवी विगेरे आश्री अतिचार लागे छे (१८)

तेरसहिं किरिआठाणेहिं ॥ १९ ॥

(त्रयोदशभिः क्रियास्थानैः ॥ १९ ॥)

क्रियाना तेर स्थानको आश्री जे कांइ अतिचार लाग्यो होय, ते स्थानको आ प्रमाणे—अर्थक्रिया–प्रयोजन छते क्रिया करे ते १. अनर्थक्रिया–प्रयोजनविना क्रिया करे ते २ हिंसाक्रिया–आणे मारा स्वजनने मार्यो, हमणा मने मारे छे, भविष्यकाळे मारशे एम धारीने प्रवृत्ति करतां जे क्रिया लागे ते ३ अकस्मात्क्रिया–बीजाने मारतां वचमां बीजो मराय ते ४. दृष्टिविपर्यासक्रिया–मित्रने शत्रु मानवाथी अने शत्रुने मित्र मानवाथी जे क्रिया लागे ते ५. मृषाक्रिया-

असत्य बोलवुं ते ६. अदत्तादानक्रिया–अदत्तादान लेवुं ते ७. पोतानुं-कोइ वांकुं बोलतुं न होय छतां मनमां शंका राखीने दुभाय ते अध्यात्मिकीक्रिया ८. अभिमानथी बीजानी हीलना करतां मानक्रिया ९. थोडो अपराध छतां वधारे दंड आपे ते अमित्रक्रिया १०. कपटथी अन्यने छेतरवो ते मायाक्रिया ११. अत्यंत तृष्णा वधारवी ते लोभक्रिया अथवा कामनो अर्थी पोतानुं रक्षण करतो बीजाने हणे ते लोभक्रिया १२ तथा साधुने मार्गे चालतां जे लागे ते ईर्यापथिकी-क्रिया कहेवाय छे १३. (१९)

चउद्दसहिं भूयगामेहिं। पन्नरसहिं परमाहम्मिएहिं । सोलसहिं गाहासोलसएहिं । सत्तरसविहे असंजमे ।। २० ॥

(चतुर्दशभिः भूतग्रामैः। पञ्चदशभिः परमाधार्मिकैः। षोडशभिः गाथाषोडशकैः। सप्तदशविधेऽसंयमे ॥२०॥)

(चउद्दसहिं भूयगामेहिं) चौद प्रकारना भूतग्राम एटले प्राणीसमुदाय तेने आश्री जे कांइ अतिचार लाग्यो होय, तथा (पन्नरसहिं परमाहम्मिएहिं) पंदर परमाधार्मिकने आश्री एटले तेमना पापनी अनुमोदना विगेरे करवाथी जे कांइ अतिचार लाग्यो होय, तथा (सोलसहिं गाहासोलसएहिं) सूयगडांगसूत्रना सोळ गाथाअध्ययने करीने एटले तेनो पाठ–अभ्यास नहिं करवाथी जे अतिचार लाग्यो होय, तथा (सत्तरसविहे असंजमे) सत्तर प्रकारना असंजमने आश्रीने जे अतिचार लाग्यो होय. अहीं चौद भूतग्राम आ प्रमाणे छे—सूक्ष्म एकेंद्रिय १, बादर एकेंद्रिय २, द्वींद्रिय ३, त्रींद्रिय ४, चतुरिंद्रिय ५,

सञ्चि पचेंद्रिय ६ अने असञ्चि पचेंद्रिय ७, ए सात पर्याप्ता तथा सात अपर्याप्ता मळी चौद थाय छे अथवा चौद गुण-स्थानके वर्तता जीवो चौद प्रकारे जाणवा. पदर परमाधार्मिकनां नाम आ प्रमाणे—अब १, अवरीष २, शाम ३, सबल ४, रुद्र ५, उपरुद्र ६, काल ७, महाकाल ८, असिपत्र ९, धनु १०, कुम ११, वालुक १२, वेतरणी १३, खरस्वर (घोष) १४ तथा महाघोष १५. सोळ गाथाध्ययननां नाम—स्वसमयपरसमयज्ञ १, वैतालिक २, उपसर्गपरिज्ञा ३, स्त्रीपरिज्ञा ४, नरकविभक्ति ५, वीरस्तव ६, कुशीलभाषाज्ञा ७, वीतरजा ८, धर्ममार्ग ९, समाधि १०, समवसरण ११, आहतहा १२, ग्रंथाध्ययन १३, सयममार्ग १४, मार्गाध्ययन १५ अने गाथाध्ययन १६. सत्तर प्रकारनो असयम आ प्रमाणे—पृथ्वीकाय असयम १, अप्काय असयम २, तेजस्काय असयम ३, वायुकाय असयम ४, वनस्पतिकाय असयम ५, द्वींद्रिय असयम ६, त्रींद्रिय असयम ७, चतुरिंद्रिय असयम ८, पचेंद्रिय असयम ९, अजीव असंयम (पुस्तकादिकनो सघट्ट करवो विगेरे) १०, प्रेक्षा असयम ११, उपेक्षा असयम १२, प्रमार्जना असयम १३, पारिष्ठापनिका असंयम १४, मन असयम १५, वचन असयम १६ अने काय असयम १७. (२०)

अट्ठारसविहे अबंभे । इगुणवीसाए नायज्झयणेहिं । वीसाए असमाहिट्ठाणेहिं ॥ २१ ॥

(अष्टादशविधेऽब्रह्मणि । एकोनविंशत्या ज्ञाताध्ययनैः । विंशत्याऽसमाधिस्थानैः ॥ २१ ॥)

(अट्ठारसविहे अबंभे) अढार प्रकारना अब्रह्मना सेवनादिकने विषे, (इगुणवीसाए नायज्झयणेहिं) ओगणीश ज्ञाता-सूत्रना अध्ययनो पाठ-अभ्यास न करवावडे करीने, तथा (वीसाए असमाहिट्ठाणेहिं) वीश असमाधिना स्थानको सेववा-

वडे करीने ज अतिचार लाग्यो होय. अढार प्रकारे अब्रह्म–मैथुन आ प्रमाणे–दिव्य अने औदारिकने मन, वचन अने कायाए गुणतां छ भेद थाय, तेने करवुं, कराववुं अने अनुमोदवुं ए त्रणे गुणतां अढार भेद थाय छे. ओगणीश ज्ञातासूत्रनां अध्ययनो आ छे.—उत्क्षिप्त १, संघाड २, अंड ३, कूर्म ४, सेलक ५, तुंब ६, रोहिणी ७, मल्लिनाथ ८, मार्कंदी ९, चंद्रमा १०, दावद्रव ११, उदक १२, मंडूक १३, तेतलीपुत्र १४, नंदीफळ १५, अपरकंका १६, आकीर्णक १७, सुंसुमार १८ अने पुंडरीक १९. वीश असमाधिना स्थान आ छे.—उतावळुं चालवुं १, अप्रमार्जित एटले अणपुंजे स्थाने बेसवुं २, दुष्प्रमार्जित एटले सारी रीते नहीं पुंजेला स्थाने बेसवुं ३, मोटो उपाश्रय होवाथी बीजा पण साधुओ आवे तेनी साथे कलह उत्पन्न थाय ते ४, आसन, पीठ, फलक विगेरे वधारे राखवां ते अथवा शेषकाळे पण पीठफलकादिक पोतानी निश्राए राखवां ते ५, रत्नाधिक गुणवंतनी सामुं बोले ६, ज्ञानवृद्धादिकनो उपघात करे ७, प्राणीनो उपघात करे ८, वारंवार कोप करे ९, निरंतर क्रोधी रहे १०, पाछळथी अवर्णवाद बोले ११, चणे चणे निश्चयवाळी भाषा बोले के आ एम ज छे १२, अधिकरणनी उदीरणा करे १३, अकाळे स्वाध्याय करे १४, अस्थंडिल भूमिथी स्थंडिलभूमिमां जइने पगनुं प्रमार्जन न करे, रजवाळा हाथे भिक्षा ग्रहण करे अथवा अशुद्ध पृथ्वीपर बेसे के सुवे १५, विकाळे पण मोटा शब्द-वडे बोले अथवा गृहस्थनी भाषा बोले १६, जेनी तेनी साथे कलह करे १७, झंझाकारी थाय एटले गच्छनो भेद करे १८, घणुं भोजन करे, सवारथी सांज सुधी मोकळे मोढे खाय, अथवा प्रमादादिकथी देवद्रव्यादिक खाय १९ तथा अनेषणा-समितिनो त्याग न करे २०, आ सर्व पोताने अने परने असमाधिना कारणरूप होवाथी असमाधिरूप छे. (२१)

इकवीसाए सबलेहिं ॥ २२ ॥

(एकविंशत्या शबलैः ॥ २२ ॥)

एकवीश शबळे करीने जे अतिचार लाग्यो होय. शबल एटले चारित्रने कलुष करवाना हेतु. ते एकवीश आ प्रमाणे छे—हस्तकर्म करवु ते १ सालंबन मैथुन सेवे एटले अतिक्रम, व्यतिक्रम अने अतिचारवडे मैथुन सेवे २. सालंबन रात्रि-भोजन करे एटले रात्रे ग्रहण करेलु दिवसे खाय अने दिवसे ग्रहण करेलु रात्रे खाय ३. आधाकर्म भोजन करे अथवा हमेशां बे-त्रण वार खाय ४ राजपिंड ग्रहण करे ५. वेचातो लीधेलो पिंड ग्रहण करे ६. प्रामित्य दोषवाळो एटले उधारे लीधेलो आहार ले ७. सामो आणेलो पिंड ले ८ आच्छेद्य एटले कोइनु आंचकीने ले ९. पच्चख्खाण करेली वस्तु ले १० छ मासनी अंदर एक गच्छथी बीजा गच्छमां जाय ११. एक मासमा त्रण वार नदी विगेरे जळाशयो उतरे १२ एक मासमां त्रण वार मातृस्थान सेवे एटले मायाकपट करे १३ जाणी जोइने पृथ्व्यादिक जीवने हणे १४. जाणीने मृषावाद बोले १५. जाणीने अदत्तादान ले १६. अशुद्ध पृथ्वीउपर आसन विगेरे करे १७. आकुट्टिवडे मूळ, फळ विगेरे खाय १८. एक वरसमां दश वार उदक लेप करे एटले पात्रमा पाणीनो लेप रही जाय १९. एक वरसमां दश वार मातृस्थान सेवे एटले मायाकपट करे २० तथा काचा पाणीवाळा हाथे आपेलु भोजन विगेरे ग्रहण करे २१. आ सर्वे चारित्रने शबल एटले मलिन करे छे (२२)

बावीसाए परीसहेहिं ॥ २३ ॥

(द्वाविंशत्या परीषहैः ॥ २३ ॥)

बावीश परीषहो न सहेवावडे करीने जे अतिचार लाग्यो होय. बावीश परीषहो आ छे—क्षुधा परीषह १, पिपासा परीषह २, शीत परीषह ३, उष्ण परीषह ४, दंशमशक परीषह ५, अचेल परीषह ६, अरतिरति परीषह ७, स्त्री परीषह ८, चर्या परीषह ९, निषद्या परीषह १०, शय्या परीषह ११, आक्रोश परीषह १२, वध परीषह १३, याचना परीषह १४, अलाभ परीषह १५, रोग परीषह १६, तृणस्पर्श परीषह १७, मल परीषह १८, सत्कार परीषह १९, प्रज्ञा परीषह २०, अज्ञान परीषह २१ अने सम्यक्त्व परीषह २२. (२३)

तेवीसाए सूअगडज्झयणेहिं । चउवीसाए देवेहिं[1] । पणवीसाए भावणाहिं । छव्वीसाए दसाकप्पववहाराणं उद्देसणकालेणं । सत्तावीसाए अणगारगुणेहिं ॥ २४ ॥

(त्रयोविंशत्या सूत्रकृताध्ययनैः । चतुर्विंशत्या देवैः[2] । पञ्चविंशत्या भावनाभिः । षड्विंशत्या दशाकल्पव्यवहाराणामुद्देशनकालैः । सप्तविंशत्याऽनगारगुणैः ॥ २४ ॥)

---

१ अरिहंतेहिं इति पाठांतरं. २ अर्हद्भिः इति वा पाठः ।

(तेवीसाए सूयगडज्झयणेहिं) सुयगडांगनां त्रेवीश अध्ययनोए करीने (तेनी विरुद्ध प्ररूपणादिकथी), तथा (चउवीसाए देवेहिं) चोवीश देवोए करीने (तेनी आशातना विगेरे करवाथी) अथवा (अरिहंतेहिं) एवो पाठ होय तो चोवीश अरिहंते करीने (तेमनी आशातना विगेरे करवाथी), तथा (पणवीसाए भावणाहिं) पांच महाव्रतनी पचीश भावनाए करीने (भावना नहीं भाववाथी), तथा (छव्वीसाए दसाकप्पववहाराण उद्देसणकालेणं) दशाश्रुतस्कधनां दश अध्ययन, कल्प-जीतकल्पनां छ अने व्यवहारनां दश मळी छवीश अध्ययनोनां छवीश उद्देशाना काळे करीने (तेनी विरुद्ध प्ररूपणादिके करीने), तथा (सत्तावीसाए अणगारगुणेहिं) साधुना सतावीश गुणे करीने (तेमां दोष लगाडवा विगेरेथी) जे अतिचार लाग्यो होय.

अहीं पुंडरीक १, क्रियास्थानक २, आहारपरिज्ञा ३, पच्चक्खाणक्रिया ४, अनगारमार्ग ५, आर्द्रकुमार ६, नालंदक ७ अने बाकीनां सोळ प्रथम कह्यां छे ते मळी कुल २३ अध्ययनो सुयगडांगसूत्रनां छे.

चोवीश देवो आ प्रमाणे—भवनपति दश प्रकारना, व्यंतर आठ प्रकारना, ज्योतिष्क पांच प्रकारना तथा एक प्रकारना वैमानिक मळी २४ प्रकारना देवो थाय छे अने चोवीश तीर्थंकरो वर्तमान चोवीशीना जाणवा.

पचीश भावना—दरेक महाव्रतनी पांच पांच भावना होवाथी पांच महाव्रतनी पचीश थाय छे. तेमां पहेला प्राणातिपातविरमण व्रतनी-ईर्यासमितिसबंधी १, आदाननिक्षेपणासमितिसबंधी २, एषणासमितिसबंधी ३, संयमने विषे अदुष्ट मन प्रवर्ताववासबंधी ४ तथा अदुष्ट वचन प्रवर्ताववा सबंधी ५-ए पांच भावना छे बीजा महाव्रतनी-हास्य १, लोभ २, भय ३ अने क्रोधनो परित्याग करवा संबंधी ४ तथा असत्यना पच्चक्खाण छे माटे विचारीने बोलवासबंधी ५-

ए पांच भावना छे. त्रीजा महाव्रतनी—उपाश्रयना स्वामी पासे पोते ज अवग्रहनी याचना करे १, तृणादिकनी बीजाने अनुज्ञा आपवी होय तो उपाश्रय देनारना कहेवाथी आपे २, आहारपाणीनो, शयननो अने बेसवा विगेरेनो अवग्रह स्पष्ट रीते अनुज्ञा लइने वापरे ३, गुरुनी अथवा बीजानी अनुज्ञा लइने पोते आहारपाणी वापरे ४ तथा साधर्मिक साधुओने माटे पण अवग्रहनी याचना करी पोते स्थानादिक करे ५—ए पांचे प्रकारमां तत्पर रहेवारूप पांच भावनाओ छे. चोथा व्रतनी—प्रमाणथी वधारे अथवा स्निग्ध आहार न करे १, शरीरे विभूषा न करे २, स्त्रीने तथा तेना अवयवोने न जुए अथवा पूर्वनी क्रीडा न संभारे ३, स्त्री, पशु, पंडकवाळी वसतिमां न रहे ४ तथा स्त्रीओसाथे अथवा स्त्रीसंबंधी कथा न करे ५—ए पांच प्रकारमां सावधान रहेवासंबंधी पांच भावनाओ छे. पांचमा महाव्रतनी—शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्श ए पांच विषयो मनोज्ञ जोइ राग न करवो अने अमनोज्ञ जोइ द्वेष न करवो ए पांच भावनाओ छे. अथवा बीजी रीते पण पचीश भावनाओ ग्रंथांतरमां कहेली छे ते आ प्रमाणे—अनित्य १, अशरण २, संसार ३, एकत्व ४, अन्यत्व ५, अशुचित्व ६, आश्रव ७, संवर ८, निर्जरा ९, लोकस्वरूप १०, बोधि ११ तथा धर्मभावना १२ ए बार अने मैत्री १, प्रमोद २, कारुण्य ३ अने माध्यस्थ्य ४ ए चार मळी १६, तेमां आठ दृष्टि मित्रा, तारा विगेरे मेळववाथी २४ अने पचीशमी प्रवचननिःशंकिनी एटले प्रवचनने विषे शंका न करवी ते.

२६ अध्ययनो उपर गणावेला छे. हवे साधुना सत्तावीश गुणो आ प्रमाणे छे—रात्रिभोजनसहित छ महाव्रतो ६, पांच इंद्रियोनो जय ११, भावशुद्धि १२, प्रत्युपेक्षणादिकनी शुद्धि १३, क्षमा १४, लोभनो त्याग १५, अशुभ एवा मन,

वचन अने कायानो निरोध १८, छकायनी रचा २४, संयमयोगनी रचा २५, शीतादि परीषह सहेवा ते २६ तथा मरण-पर्यंत उपसर्गो सहन करवा ते २७ (२४)

अट्ठावीसाए आयारप्पकप्पेहिं। इगुणतीसाए पावसुअप्पसंगेहिं ॥ २५ ॥

(अष्टाविंशत्याऽऽचारप्रकल्पैः। एकोनत्रिंशता पापश्रुतप्रसङ्गैः ॥ २५ ॥)

अट्ठावीश आचारप्रकल्पे करीने एटले आचारांगना अध्ययनोए करीने तेने विरुद्ध प्ररूपवा विगेरेथी जे अतिचार लाग्यो होय, तथा ओगणत्रीश पापश्रुतना प्रसंगे करीने ते प्ररूपवा विगेरेथी जे अतिचार लाग्यो होय आचारप्रकल्पनां २८ अध्ययनो आ प्रमाणे—शस्त्रपरिज्ञा १, लोकविजय २, शीतोष्णीय ३, सम्यक्त्व ४, लोकसार ५, धूताध्ययन ६, महापरिज्ञा ७, विमोच ८, उपधानश्रुत ९, पिंडैषणा १०, शय्या ११, ईर्या १२, भाषा १३, वस्त्रैषणा १४, पात्रैषणा १५, अवग्रहप्रतिमा १६, सप्तैकसप्तिका १७, ठाणसप्तिका १८, निसीहिसप्तैकका १९, उच्चारपासवणसप्तैकका २०, रूपसप्तैकका २१, शब्दसप्तैकका २२, अन्योन्यक्रिया २३, भावनाध्ययन २४, विमुक्ति २५, उपघात २६, अनुपघात २७ अने आरुहणा २८ आमांना छेल्ला त्रण अध्ययनो निशीथनां छे ओगणत्रीश पापश्रुत एटले पापशास्त्रो आ प्रमाणे छे—तेमां आठ प्रकारना निमित्तशास्त्र आवे छे ते आ प्रमाणे—दिव्य—व्यंतरना अट्टहासादिकना विषयवाळुं १, उत्पात—रुधिरवृष्टि विगेरेना विषयवाळुं २, अंतरिच—ग्रहभेद, उल्कापात विगेरे विषयवाळुं ३, भौम—भूमिकंप विगेरे विषयवाळुं

४, अंग-अंग फरकवुं विगेरे विषयवाळुं ५, स्वर-स्वरना विषयवाळुं ६, व्यंजन-शरीरउपरना मस, तल विगेरे विषयवाळुं ७ अने लक्षण-लांछन तथा रेखा विगेरेना विषयवाळुं ८ आ आठ प्रकारना निमित्तांगउपर सूत्र, वृत्ति अने वार्तिक ए त्रण त्रण होवाथी २४ थाय छे, तथा गंधर्व २५, नाट्य २६, वास्तुविद्या २७, धनुर्वेद २८ अने आयुर्विद्या २९ आ प्रमाणे २९ पापशास्त्र थाय छे. (२५)

तीसाए मोहणीयठाणेहिं ॥ २६ ॥

(त्रिंशता मोहनीयस्थानैः ॥ २६ ॥)

त्रीश प्रकारनां मोहनीयनां स्थानो सेववावडे करीने जे कांइ अतिचार लाग्यो होय. ते त्रीश स्थानो आ प्रमाणे छे.— कोइ मनुष्यने पाणीमां नांखी मारे १, मुख विगेरे ढांकी श्वासनो रोध करी मारे २, मस्तकपर वाधरी विगेरे बांधीने मारे ३, मयूरबंध विगेरेथी बांधीने मारे ४, घणा लोकना स्वामी एवा राजाने मारे ५, घणा लोकना आधारभूत श्रेष्ठी विगेरेने मारे ६, पोते साजो छतां साधारण मांदा पडेलानुं औषधादिक न करे ७, साधुने ज्ञानादिक मार्गथी भ्रष्ट करे ८, तीर्थंकरना अवर्णवाद बोले ९, आचार्यादिकना अवर्णवाद बोले १०, आहार विगेरेवडे आचार्यादिकनी भक्ति न करे ११, ज्योतिष विगेरे अधिकरणो उत्पन्न करे १२, तीर्थनो भेद करी विराधक बने १३, वशीकरणादिक करे १४, दीक्षा लइने पण काम-

१ पक्षी विगेरेनो स्वर अथवा पोताना कंठनो स्वर अथवा नासिकानो स्वर.

योगनी इच्छा राखे १५, हु बहुश्रुत छु अथवा तपस्वी छुं एम वारवार बोले अथवा दमथी मौन धारण करे १६, गाम, घर विगेरे सळगावे १७, पोते अकृत्य करीने बीजापर तेनो आरोप मूके १८, मायाकपट करे १९, अशुभ मनवाळो रहे २०, निरतर कलह कर्या करे २१, विश्वासघात करे २२, विश्वासु मित्रादिकनी स्त्रीप्रत्ये गमन करे २३, पोते कुमार नहीं छतां हु कुमार छु एम कहे २४, अब्रह्मचारी छतां हु ब्रह्मचारी छु एम बोले २५, जेने आश्रीने धनादिक पाम्या होय तेना ज धनादिकनो लोभ करे २६ तथा तेने ज विघ्नकारी थाय २७, सेनापति, मन्त्री विगेरेनो घात करे २८, देवादिकने नहीं देखतां छतां हु जोउ छु एम बोले २९ अने देवनो अवर्णवाद बोले ३०. (२६)

इगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं । वत्तीसाए जोगसंगहेहिं ॥ २७ ॥

(एकत्रिंशता सिद्धादिगुणैः । द्वात्रिंशता योगसङ्ग्रहैः ॥ २७ ॥)

सिद्धादिकना एकत्रीश गुणोनी विपरीत प्ररूपणादिके करीने अने बत्रीश योगसंबंधी संग्रहमां प्रमादादिके करीने जे अतिचार लाग्यो होय सिद्धना आदि गुण एटले एकी वखते उत्पन्न थनारा गुण एकत्रीश छे ते आ प्रमाणे—पांच संस्थान, पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस, आठ स्पर्श, त्रण वेद, आ अठावीशनो अभाव तद्रूप २८ गुण तथा कायरहित २९, संग-रहित ३० अने जन्मरहित ३१. अथवा ज्ञानावरणनी प्रकृति ५, दर्शनावरणनी ९, वेदनीयनी २, मोहनीयनी (दर्शन-मोहनी ने चारित्रमोहनी) २, आयुकर्मनी ४, नामकर्मनी (शुभ ने अशुभ) २, गोत्रकर्मनी २ अने अंतरायनी ५,

आ आठे कर्मनी ३१ प्रकृतिना* क्षयरूप एकत्रीश गुण जाणवा.

योग एटले मन, वचन, कायाना शुभ योग तेना बत्रीश प्रकारनो संग्रह आ प्रमाणे छे—शिष्ये आचार्यपासे सम्यक् प्रकारे आलोचना लेवी १, आचार्ये आलोचना आपी होय ते बीजापासे प्रकाशवी नहीं २, आपत्ति आवे तो पण धर्ममां दृढ रहेवुं ३, इहलोक परलोकना फळनी इच्छारहित क्रियानुष्ठान करवुं ४, ग्रहणा अने आसेवना बन्ने शिक्षा सेववी ५, शरीरने साफ न करवुं ६, तप करी बीजाने न जणाववो ७, लोभनो त्याग करवो ८, परीषहादिकनो जय करवो ९, आर्जवता राखवी—कुटिलपणानो त्याग करवो १०, संयमव्रतने विषे निर्मळता–अतिचाररहितपणुं राखवुं ११, समकितनी शुद्धि करवी १२, चित्तनी समाधि राखवी १३, आचारने विषे सावधान रहेवुं १४, विनयमां तत्परपणुं राखवुं १५, वृत्तिमां तत्पर रहेवुं १६, संवेगमां तत्पर रहेवुं १७, मायारहित वर्तवुं १८, सारी रीते सर्व विधि करवी १९, संवर करवो २०, आत्मदोषनो त्याग करवो २१, सर्व कामथी विरक्त थवुं २२, मूळगुणसंबंधी पच्चक्खाण करवुं २३, उत्तरगुणसंबंधी पच्चक्खाण करवा २४, द्रव्यथी अने भावथी कायोत्सर्ग करवो २५, प्रमादनो त्याग करवो २६ क्षणे क्षणे दश प्रकारनी सामाचारी पाळवी २७, ध्यानसंवृतपणुं एटले आर्तरौद्रध्याननो त्याग करवो तथा धर्म अने शुक्लध्याननो आदर करवो २८, मरणांतिक परीषह सहन करवा २९, ज्ञपरिज्ञा अने प्रत्याख्यानपरिज्ञानुं पालन करवुं ३०, दोष लागे तो प्रायश्चित्त करवुं तथा मरण

* आमां मोहनीयनी बे छे ते अठावीश थवाथी (२६) वधे, ने नामकर्मनी बे छे तेनी (१०३) थवाथी (१०१) वधे. कुल (१२७) वधवाथी आठ कर्मनी १५८ उत्तरप्रकृति थाय.

समये आराधना करवी ३२. (आ बत्रीश प्रकारमां सावधानता न रही होय ते.) (२७).

तित्तीसाए आसायणाए ॥ २८ ॥

(त्रयस्त्रिंशता आशातनाभिः । २८)

तेत्रीश आशातना करवावडे करीने जे अतिचार लाग्यो होय अहीं गुरुसंबंधी तेत्रीश आशातनाओ पाक्षिकसूत्रमां कही गया छीए ते जाणवी. (२८)

अथवा बीजी रीते अरिहंतादिकनी तेत्रीश आशातना थाय छे ते सूत्रकार कहे छे —

अरिहंताणं आसायणाए, सिद्धाणं आसायणाए, आयरिआणं आसायणाए, उवज्झायाणं आसायणाए, साहूण आसायणाए, साहुणीण आसायणाए, सावयाणं आसायणाए, सावियाण आसायणाए, देवाणं आसायणाए, देवीण आसायणाए, इहलोगस्स आसायणाए, परलोगस्स आसायणाए, केवलिपन्नत्तस्स धम्मस्स आसायणाए, सदेवमणुआसुरस्स लोगस्स आसायणाए, सव्वपाणभूअजीवसत्ताणं आसायणाए, कालस्स आसायणाए, सुअस्स आसायणाए, सुयदेवयाए आसायणाए, वायणारिअस्स आसायणाए, जं वाइद्धं, वच्चामेलिअं, हीणक्खरं, अच्चक्खरं,

पयहीणं, विणयहीणं, जोगहीणं, घोसहीणं, सुट्ठुदिन्नं, दुट्ठुपडिच्छिअं, अकाले कओ सज्झाओ, काले न कओ सज्झाओ, असज्झाइए सज्झाइअं, सज्झाइए न सज्झाइअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥२९॥

(अर्हतामाशातनया, सिद्धानामाशातनया, आचार्याणामाशातनया, उपाध्यायानामाशातनया, साधूनामाशातनया, साध्वीनामाशातनया, श्रावकाणामाशातनया, श्राविकाणामाशातनया, देवानामाशातनया, देवीनामाशातनया, इहलोकस्याशातनया, परलोकस्याशातनया, केवलिप्रज्ञप्तस्य धर्मस्याशातनया, सदेवमनुजासुरस्य लोकस्याशातनया, सर्वप्राणभूतजीवसत्त्वानामाशातनया, कालस्याशातनया, श्रुतस्याशातनया, श्रुतदेवताया आशातनया, वाचनाचार्यस्याशातनया, यत् व्याविद्धं, व्यत्याम्रेडितं, हीनाक्षरम्, अत्यक्षरं, पदहीनं, विनयहीनं, योगहीनं, घोषहीनं, सुष्ठुदत्तं, दुष्ठुप्रतीच्छितम्, अकाले कृतः स्वाध्यायः, काले न कृतः स्वाध्यायः, अस्वाध्यायिके स्वाध्यायितं, स्वाध्यायिके न स्वाध्यायितं, तस्य मिथ्या मे दुष्कृतम् ॥ २९ ॥)

(अरिहंताणं आसायणाए) अरिहंतोनी आशातनाए करीने १, (सिद्धाणं आसायणाए) सिद्धोनी आशातनाए करीने २, (आयरियाणं आसायणाए) आचार्योनी आशातनाए करीने ३, (उवज्झायाणं आसायणाए) उपाध्यायोनी आशातनाए करीने ४, (साहूणं आसायणाए) साधुओनी आशातनाए करीने ५, (साहुणीणं आसायणाए) साध्वीओनी

आशातनाए करीने ६, (सावयाणं आसायणाए) श्रावकोनी आशातनाए करीने ७, (सावियाण आसायणाए) श्राविकाओनी आशातनाए करीने ८, (देवाण आसायणाए) देवोनी आशातनाए करीने ९, (देवीण आसायणाए) देवीओनी आशातनाए करीने १०, (इहलोगस्स आसायणाए) आलोकनी आशातनाए करीने ११, (परलोगस्स आसायणाए) परलोकनी आशातनाए करीने १२, (केवलिपन्नत्तस्स धम्मस्स आसायणाए) केवळीए प्ररूपेला धर्मनी आशातनाए करीने १३, (सदेवमणुआसुरस्स) देव, मनुष्य अने असुरसहित एवा (लोगस्स) त्रण लोकनी (आसायणाए) आशातनाए करीने १४, (सव्वपाणभूअजीवसत्ताणं आसायणाए) सर्वे प्राण–द्वींद्रियादिक, भूत–वनस्पतिकाय, जीव–पचेंद्रिय अने सत्त्व–बाकीना एकेंद्रियो ए सर्वनी आशातनाए करीने १५, (कालस्स आसायणाए) काळनी आशातनाए करीने १६, (सुअस्स आसायणाए) श्रुतज्ञाननी आशातनाए करीने १७, (सुयदेवयाए आसायणाए) श्रुतदेवतानी आशातनाए करीने १८, (वायणारिअस्स आसायणाए) वाचनाचार्यनी आशातनाए करीने १९, (ज वाइद्ध) जे व्याविद्ध एटले उतावळे बोलवु अथवा रत्नमाळा विगेरेनी जेम विपरीत कहेवु, तेथी जे अतिचार लाग्यो होय २०, (वच्चामेलिअ) बीजा आलावा मेळवीने बोलवु २१, (हीणक्खरं) हीन अक्षर बोलवा २२, (अच्चक्खर) वधारे अक्षर बोलवा २३, (पयहीण) एक बे पदे करीने हीन बोलवु २४, (विणयहीण) विनय विना भणवु २५, (जोगहीण) जोग वह्या विना भणवु २६, (घोसहीण) उदात्तादि घोषरहित भणवु २७, (सुट्ठुदिन्न) गुरुए सारी रीते एटले शक्तिना प्रमाणमां दीधु एटले भणाव्यु २८, (दुट्ठुपडिच्छिय) शिष्ये दुष्ट हृदयथी ग्रहण कर्यु २९, (अकाले कओ सज्झाओ)

अकाले स्वाध्याय कर्यो ३०, (काले न कओ सज्झाओ) काळे स्वाध्याय न कर्यो ३१, (असज्झाइए सज्झाइअं) असज्झाय छते स्वाध्याय कर्यो ३२, तथा (सज्झाइए न सज्झाइअं) सज्झाय छतां स्वाध्याय न कर्यो ३३ आ तेत्रीश आशातनाथी जे कांइ अतिचार थयो होय (तस्स मिच्छा मि दुकडं) ते अतिचारसंबंधी मारुं दुष्कृत मिथ्या थाओ.

दश प्रकारनी आकाशनी असज्झाय आ प्रमाणे छे.—उल्कापात १, दिग्दाह २, वीजळी ३, गर्जना ४, व्यंतरादि देवकृत मोटी गर्जना ५, संध्याप्रभा—शुदि एकमने रोज कदाचित् चंद्रनी अने संध्यानी बन्ने प्रभा एकठी थती होय ६, आकाशमां अग्निदाह जेवो उद्योत देखातो होय ७, धुंवाड पडती होय ८, हिम विगेरे पडतुं होय ९ तथा रजोवृष्टि थती होय १०. आमांनो कोइ पण उपद्रव होय तो ते दिवसे सज्झाय थाय नहीं. (वर्षाऋतुमां एटले आर्द्रा नक्षत्रथी आरंभी स्वाती नक्षत्र सुधी वीजळी, गर्जना अने वादळां थतां होय तथा नक्षत्र, ताराओ देखाता न होय तो पण असज्झाय नथी.) चैत्र तथा आश्विन मासमां शुदि पांचमथी आरंभी वदि एकम सुधी चार दिवसनी असज्झाय छे. कोइ ग्रंथमां भादरवा वदि एकमनी पण असज्झाय कही छे. चोमासानी चौदशे मध्यान्हकाळथी आरंभी पडवाना अंत सुधी अढी दिवसनी असज्झाय छे. (ते दिवसे पाक्षिकसूत्र कहेवामां असज्झाय नथी.) त्रण चोमासा पैकी अषाढ तथा कार्तिक चोमासानी चौदशना मध्यान्हथी पडवाना अंत सुधी अढी दिवसनी असज्झाय छे अने फाल्गुन चोमासामां होळी प्रगट करे त्यारथी रज उडी रहे त्यांसुधी असज्झाय छे. दीवाळीने दिवसे प्रभातकाळे लोको सुपडा विगेरे वगाडे छे ने अळश काढे छे ते वखते असज्झाय छे. वळी दश प्रकारनी औदारिक शरीरनी असज्झाय आ प्रमाणे छे.—अस्थि १, मांस २, रुधिर ३ तथा मूत्र पुरीषादिक

अशुचि पदार्थ समीपमां पड्यो होय तो असज्झाय ४, चद्र के सूर्यनु ग्रहण जेटलो वखत रहे तेटलो वखत असज्झाय; पण जो ते घेराएलो ज अस्त पामे तो फरी तेनो उदय थाय त्यांसुधी असज्झाय छे ५ राजा, प्रधान, सेनापति, गामनो नायक विगेरेनु मरण जे दिवसे थाय ते दिवसे असज्झाय ६. राजाओनुं परस्पर युद्ध थतु होय तो तेटला दिवस असज्झाय ७ पुरुष, स्त्री के मल्लादिकनु युद्ध थतु होय तो तेटलो वखत असज्झाय ८ स्त्रीने ऋतु प्राप्त थाय त्यारथी आरभीने चोवीश प्रहर सुधी असज्झाय ९. मनुष्यादिकनु शरीर तथा पशु-पक्षी विगेरेनु कलेवर, दांत, अस्थि विगेरे सो हाथ सुधीमां अथवा जघन्यथी साठ हाथ सुधीमां पड्यु होय तो तेने दूर लइ जइ परठवे नहीं त्यांसुधी असज्झाय छे १० तथा शरीर ज्यांसुधी अपवित्र होय त्यांसुधी असज्झाय छे. विगेरे असज्झायनो विचार विस्तारथी आवश्यकनिर्युक्तिमां तथा निशीथसूत्रना ओगणीशमा उद्देशामां आप्यो छे त्यांथी जाणी लेवो

अहीं अरिहतथी आरभीने देवी सुधीना जे दश पदो छे तेमनो अवर्णवाद बोलवाथी आशातना लागे छे. १०. आलोक अने परलोकनी असत्प्ररूपणा करवाथी आशातना लागे छे १२. प्राकृत भाषामां आ श्रुत बधु रचेलुं छे इत्यादि अवर्णवाद बोलवाथी श्रुतनी आशातना लागे छे १३ देव, मनुष्य अने असुरसहित त्रण लोकनी असत्प्ररूपणा करवाथी आशातना लागे छे. १४. प्राण विगेरेनी हिंसादिकथी आशातना लागे छे. १५ काळनी असत्प्ररूपणा करवाथी आशातना लागे छे. १६. जो ज्ञान मोक्षनु कारण छे तो तेने भणवानो काळ के अकाळ शो छे? निरंतर शामाटे न भणाय? एम कहेवु ते श्रुतनी आशातना छे. १७ श्रुतदेवताना अवर्णवाद विगेरेथी आशातना थाय छे. १८ वाचनाचार्यना पण अव-

र्णवाद विगेरेथी आशातना थाय छे. १९. त्यारपछी सूत्र भणवुं अने भणाववुं ते संबंधी चौद आशातना लखी छे ते स्पष्ट ज छे. ३३. (२९).

णमो चउवीसाए तित्थयराणं उसभादिमहावीरपज्जवसाणाणं । इणमेव निग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं ॥ ३० ॥

(नमश्चतुर्विंशत्यै तीर्थंकरेभ्य ऋषभादिमहावीरपर्यवसानेभ्यः। इदमेव नैर्ग्रन्थं प्रावचनं सत्यमनुत्तरम् ॥३०॥)

(उसभादिमहावीरपज्जवसाणाणं) ऋषभस्वामीथी आरंभी महावीरस्वामी पर्यंत (चउवीसाए) चोवीश (तित्थयराणं) तीर्थंकरोने (णमो) नमस्कार थाओ. (इणमेव) आ ज (निग्गंथं) निर्ग्रंथसंबंधी (पावयणं) द्वादशांगीरूप प्रवचन (सच्चं) सत्य छे एटले सत्पुरुषने हितकारक छे. (अणुत्तरं) आ प्रवचनथी बीजुं कोइ उत्तम प्रवचन नथी. तेने हुं सद्दहुं छुं एम आगळ कहेशे. (३०) वळी ते प्रवचन केवुं छे ? ते कहे छे.—

केवलियं पडिपुन्नं नेआउयं संसुद्धं सल्लगत्तणं ॥ ३१ ॥ सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं निज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं अवितहमविसंधि सव्वदुक्खपहीणमग्गं ॥ ३२ ॥

(कैवलिकं प्रतिपूर्णं नैयायिकं संशुद्धं शल्यकर्त्तनम् ॥ ३१ ॥ सिद्धिमार्गं मुक्तिमार्गं निर्यानमार्गं निर्वाणमार्गमवितथमविसन्धि सर्वदुःखप्रहीणमार्गम् ॥ ३२ ॥)

(केवलिय) केवळ-अद्वितीय एटले एना जेवु बीजु कोइ नथी एवु ते छे अथवा ते केवळीए प्ररूपेलु छे, तथा (पडिपुन्न) परिपूर्ण एटले मोक्षने प्राप्त करनारा गुणोए करीने भरेलु छे, तथा (नेआउयं) न्यायवडे युक्त छे, तथा (ससुद्ध) समस्त प्रकारे शुद्ध एटले कलकरहित छे, तथा (सल्लगत्तणं) ससारना हेतुरूप मायाशल्यादिक शल्योने कापनार छे ३१ तथा (सिद्धिमग्ग) सिद्धिना एटले हितार्थनी प्राप्तिना मार्गरूप छे, तथा (मुत्तिमग्गं) कर्मक्षयरूप मुक्तिना मार्गरूप छे, तथा (निज्जाणमग्ग) निरुपम यान एटले सिद्धशिला तेना मार्गरूप छे, तथा (निव्वाणमग्ग) निर्वाण एटले आत्यतिक सुख तेना मार्गरूप छे, तथा (अवितह) सत्य छे, तथा (अविसधि) महाविदेहादिकमा निरतर होवाथी विच्छेदरहित छे. तथा (सव्वदुक्खपहीणमग्ग) सर्व दुःखने क्षीण करनार मार्ग छे एटले मोक्षनो मार्ग छे तेवा प्रवचनने हु सद्दहु छु (३२).

इत्थं ठिआ जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतं करंति ॥ ३३ ॥

(अत्र स्थिता जीवाः सिध्यन्ति बुध्यन्ते मुच्यन्ते परिनिर्वान्ति सर्वदुःखानामन्त कुर्वन्ति ॥ ३३ ॥)

(इत्थ) आ निर्ग्रंथसंबधी प्रवचनने विषे (ठिआ) रहेला (जीवा) जीवो (सिज्झति) अणिमादिक सिद्धिओने पामे छे, तथा (बुज्झंति) बोध पामे छे एटले केवळी थाय छे, तथा (मुच्चति) कर्मथी मूकाय छे, तथा (परिनिव्वायति) सर्व प्रकारे सुखी थाय छे, तथा (सव्वदुक्खाणं अत करति) सर्व दुःखोनो अत-विनाश करे छे (३२).

त धम्म सद्दहामि पत्तिआमि रोएमि फासेमि पालेमि अणुपालेमि। तं धम्मं सद्दहंतो पत्तिअंतो

रोअंतो फासंतो पालिंतो अणुपालिंतो तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठिओमि आराहणाए, विरओमि विराहणाए, असंजमं परिआणामि, संजमं उवसंपज्जामि, अबंभं परिआणामि, बंभं उवसंपज्जामि ॥ ३४ ॥

(तं धर्मं श्रद्दधे प्रतिपद्ये रोचयामि स्पृशामि पालयामि अनुपालयामि। तं धर्मं श्रद्दधानः प्रतिपद्यमानः रोचयन् स्पृशन् पालयन् अनुपालयन् तस्य धर्मस्य केवलिप्रज्ञप्तस्याभ्युत्थितोऽस्मि आराधनायां, विरतोऽस्मि विराधनायाम्, असंयमं परिजानामि, संयममुपसंपद्ये, अब्रह्म परिजानामि, ब्रह्म उपसंपद्ये ॥ ३४ ॥)

(तं धम्मं) ते निर्ग्रंथलक्षण धर्मने (सद्दहामि) हुं सद्दहुं छुं, (पत्तिआमि) अंगीकार करुं छुं, (रोएमि) रुचावुं छुं, (फासेमि) फरसुं छुं–सेवुं छुं, (पालेमि) पाळुं छुं अने (अणुपालेमि) निरंतर पाळुं छुं. वळी (तं धम्मं) ते धर्मने (सद्दहंतो) सद्दहतो थको, (पत्तिअंतो) अंगीकार करतो थको, (रोअंतो) रुचावतो थको, (फासंतो) फरसतो थको, (पालिंतो) पाळतो थको तथा (अणुपालिंतो) निरंतर पाळतो थको (तस्स) ते (केवलिपन्नत्तस्स) केवळीए प्ररूपेला (धम्मस्स) धर्मनी (अब्भुट्ठिओमि आराहणाए) आराधनाने विषे हुं उद्यमवंत थयो छुं. (विरओमि विराहणाए) विराधनाथी विराम पाम्यो छुं एटले निवृत्त थयो छुं. (असंजमं परिआणामि) असंयमने ज्ञपरिज्ञाए जाणीने प्रत्याख्यानपरिज्ञाए पच्चक्खुं छुं, (संजमं उवसंपज्जामि) संयमने अंगीकार करुं छुं. (अबंभं परिआणामि) अब्रह्मने–मैथुनने निषेधुं छुं

मने (बंभ उवसंपज्जामि) ब्रह्मचर्यने अंगीकार करु छु. (३४).

अकप्प परिआणामि, कप्प उवसंपज्जामि, अन्नाणं परिआणामि, नाणं उवसंपज्जामि, अकिरिअं परिआणामि, किरिअं उवसंपज्जामि, मिच्छत्तं परिआणामि, समत्तं उवसंपज्जामि, अबोहिं परिआणामि, बोहिं उवसंपज्जामि, अमग्गं परिआणामि, मग्गं उवसंपज्जामि, जं संभरामि, जं च न संभरामि, जं पडिक्कमामि, जं च न पडिक्कमामि, तस्स सव्वस्स देवसिअस्स अइआरस्स पडिक्कमामि ॥ ३५ ॥

(अकल्पं परिजानामि, कल्पमुपसंपद्ये, अज्ञानं परिजानामि, ज्ञानमुपसंपद्ये, अक्रियां परिजानामि, क्रियामुपसंपद्ये, मिथ्यात्वं परिजानामि, सम्यक्त्वमुपसंपद्ये. अबोधिं परिजानामि, बोधिमुपसंपद्ये, अमार्गं परिजानामि, मार्गमुपसंपद्ये, यत् स्मरामि, यच्च न स्मरामि, यत् प्रतिक्रमामि, यच्च न प्रतिक्रमामि, तस्य सर्वस्य दैवसिकस्यातिचारस्य प्रतिक्रमामि ॥ ३५ ॥)

(अकप्पं परिआणामि) साधुने नहि कल्पे तेवा आहारादिकने हुं पच्चक्खु छु, (कप्पं उवसंपज्जामि) जे कल्पे तेने हु अंगीकार करु छु, (अन्नाणं परिआणामि) अज्ञानने पच्चक्खु छु, (नाणं उवसंपज्जामि) ज्ञानने अंगीकार करु छु. (अकिरिअं परिआणामि) अक्रियाने एटले नास्तिकवादने हु पच्चक्खु छु, (किरिअं उवसंपज्जामि) क्रियाने एटले सम्यग्वादने हु अंगीकार करु छु, (मिच्छत्तं परिआणामि) मिथ्यात्वने हु पच्चक्खु छु, (सम्मत्तं उवसंपज्जामि) समकितने हु अंगीकार

करुं छुं, (अबोहिं परिआणामि) अबोधिने एटले मिथ्यात्वना कार्यने हुं पच्चख्खुं छुं, (बोहिं उवसंपज्जामि) बोधिने एटले समकितना कार्यने हुं अंगीकार करुं छुं, (अमग्गं परिआणामि) मिथ्यात्वादिक अमार्गने हुं पच्चख्खुं छुं, (मग्गं उवसंपज्जामि) सम्यक्त्वादि मार्गने हुं अंगीकार करुं छुं, (जं संभरामि) जे कांइ मने सांभरे छे, (जं च न संभरामि) अने जे अनुपयोगादिकने लीधे मने सांभरतुं नथी, तथा (जं पडिक्कमामि) जाणेलुं एवुं जे कांइ पडिकमुं छुं, (जं च न पडिक्कमामि) अने अजाण्युं एवुं जे कांइ हुं पडिकमी शकतो नथी, (तस्स सव्वस्स) ते सर्व (देवसिअस्स) दिवससंबंधी (अइआरस्स) अतिचारने (पडिक्कमामि) हुं पडिकमुं छुं–ते अतिचारथी हुं निवर्तुं छुं. (३५).

समणो हं संजयविरयपडिहयपच्चक्खायपावकम्मो अनियाणो दिट्ठिसंपन्नो मायामोसविवज्जिओ अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मभूमीसु जावंत केवि साहू रयहरणगुच्छपडिग्गहधारा पंचमहव्वयधारा अट्ठारससहस्ससीलंगधारा अक्खयायारचरित्ता ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ ३६–३७ ॥

(श्रमणोऽहं संयतविरतप्रतिहतप्रत्याख्यातपापकर्माऽनिदानो दृष्टिसंपन्नो मायामृषाविवर्जकः अर्धतृतीयेषु द्वीपसमुद्रेषु पञ्चदशसु कर्मभूमिषु ये केऽपि साधवो रजोहरणगोच्छप्रतिग्रहधारिणः

पञ्चमहाव्रतधारिणोऽष्टादशसहस्रशीलाङ्गधारिणोऽक्षताचारचारित्रास्तान् सर्वान् शिरसा मनसा मस्तकेन वन्दे ॥ ३६–३७ ॥)

(समणो) हुं श्रमण छु, (संजम) संजमवाळो, (विरय) विरतिवाळो, (पडिहयपच्चक्खायपावकम्मो) हणयां नहीं करवावडे हण्युं छे, अतीत काळनी निंदाए करीने तथा भविष्यमां नहीं करवानी धारणाए करीने पच्चख्युं छे पापकर्म जेणे एवो हु छु, (अनियाणो) नियाणारहित छु, (दिट्ठिसपन्नो) सम्यग्दर्शनवडे युक्त छु, तथा (मायामोसविवज्जिओ) माया युक्त मृषावादथी रहित थयो छु, तेथी करीने (अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु) अढीद्वीप अने बे समुद्रने विषे तथा (पन्नरससु) कम्मभूमीसु) पंदर कर्मभूमिने विषे–पांच भरत, पांच ऐरवत अने पांच महाविदेहने विषे (जावंत के वि साहू) जे कोइ साधुओ रहेला छे, केवा ? (रयहरणगुच्छपडिग्गहधारा) रजोहरण, गोच्छक अने प्रतिग्रहने धारण करनारा तथा (पंचमहव्वयधारा) पांच महाव्रतोने धारण करनारा, तथा (अट्ठारससहस्ससीलंगधारा) अढार हजार शीलांगने धारण करनारा, तथा (अक्खयायारचरित्ता) अक्षत–परिपूर्ण आचाररूपी चारित्रवाळा छे, (ते सव्वे) ते सर्व साधुओने (सिरसा) मस्तकवडे, (मणसा) मनवडे तथा कायावडे (मत्थएण वंदामि) हु वांदु छु. (३६–३७).

आ प्रमाणे साधुओने वांदी हवे सर्व जीवोनी क्षामणा तथा मैत्रीभावने कहे छे —

खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे । मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥१॥

(क्षमयामि सर्वान् जीवान्, सर्वे जीवाः क्षमयन्तु माम्। मैत्री मे सर्वभूतेषु, वैरं मम न केनापि ॥१॥)

(खामेमि सव्वजीवे) हुं सर्व जीवोने खमावुं छुं. (सव्वे जीवा खमंतु मे) सर्व जीवो मने-मारा प्रत्ये खमो, (मित्ती मे सव्वभूएसु) सर्व प्राणीओने विषे मारे मैत्री-मित्रभाव छे तथा (वेरं मज्झ न केणई) मारे कोइनी साथे वैर नथी. १.

एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ २ ॥

(एवमहमालोच्य, निन्दित्वा गर्हयित्वा दुगंछितं सम्यक्। त्रिविधेन प्रतिक्रामन्, वन्दे जिनान् चतुर्विंशतिम् ॥२॥)

(एवं) आ प्रमाणे एटले उपर कही गया ते रीते (अहं) हुं (दुगंछिअं) दुगंछित एवा पापकर्मने (सम्मं) सारी रीते (आलोइअ) आलोचीने, तथा (निंदिअ) आत्मसाक्षीए निंदीने, तथा (गरहिअ) गुरुनी साक्षीए गर्हा करीने (तिविहेण) मन, वचन अने काया त्रण प्रकारे करीने (पडिक्कंतो) प्रतिक्रमण करतो थको (जिणे चउव्वीसं) चोवीश जिनेश्वरोने (वंदामि) वांदुं छुं. २.

॥ इति श्रमणसूत्रं समाप्तम् ॥